शुक्ल पक्ष, 23 वर्ष, अंक 28, पृष्ठ 08 मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | शुक्रवार 23 फरवरी 2024 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

आंदोलन के बीच फिर भड़के किसान संगठन

देश में आज काला दिवस मनाने का एलान, रामलीला मैदान में होगी महापंचायत

नई दिल्ली

संयुक्त किसान मोर्चा (गैर राजनीतिक) के सिद्धूपुर गुट की ओर से दिल्ली कूच के आह्वान पर हरियाणा से सटे शंभू और खनौरी बॉर्डर पर दिनभर स्थिति तनावपूर्ण बनी रही। जिला प्रशासन ने किसानों की केंद्रीय मंत्रियों के साथ बातचीत करवाई। इसके बीच ही किसान की मौत की खबर मिलने पर किसान नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल ने कहा कि अब हालात का जायजा लेने के बाद ही वह आगे की रणनीति पर विचार करेंगे। किसान मजदूर संगठन के महासचिव सरवन सिंह पंढेर ने किसानों का दिल्ली कूच आंदोलन को दो दिन के लिए स्थगित करने की बात कही है।

कल काला दिवस बनाने का लिया गया फैसला

किसान संगठनों ने कल यानी 23 फरवरी को काला दिवस बनाने का फैसला किया है। इस दिन केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, हरियाणा के मुख्य मंत्री मनोहर लाल खट्टर और गृह मंत्री अनिल विज के पुतले फूंके जाएंगे। वहीं, संयुक्त किसान मोर्चा 26 फरवरी को ट्रैक्टर मार्च निकालेगा इस दिन हळड का पुतला भी फूंका जाएगा।

अमित शाह और हरियाणा सीएम का फूकेंगे पुतला

किसान आंदोलन के दौरान मारे गए शुभकरण सिंह की मौत से किसानों का गुस्सा उबाल पर है। किसान केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और हरियाणा मुख्यमंत्री मनोहर लाल के पूरे देश में पुतले फूंककर रोष व्यक्त करेंगे। उनकी मांग है कि इस मामले की न्यायिक जांच करवाई जाए और मृतक के परिजनों को मुआवजा दिया जाए

किसान नेता पंधेर बोले पंजाब सरकार केंद्र के खिलाफ हत्या का मामला करे दर्ज, अपना रुख भी करे साफ

किसान नेता सरवन सिंह पंधेर का कहना है कि जिस तरह से केंद्र ने हमारे क्षेत्र में घुसकर हमला किया। हमारे वाहनों में तोड़फोड़ की है। पंजाब सरकार को उनके खिलाफ 302 का मामला दर्ज करना चाहिए। हमारे पास सबूत हैं कि पंजाब सरकार ने हमारा लंगर बंद कर दिया और कल प्रदर्शन स्थल पर वाहन आ रहे हैं। पंजाब सरकार को अपना

'2030 तक द्विपक्षीय व्यापार होगा दोगुना'

जहां से उपचार के बाद उन्हें अस्पताल के स्पेशल वार्ड में शिफ्ट कर दिया, यहां पर उनसे मिलने के लिए किसान नेताओं के अलावा लोकल स्तर के लोग पहुंचे हैं। गुरुवार दोपहर को उनसे मिलने किसान नेता सरवन सिंह पंधेर, सुरजीत सिंह फूल, मंजीत सिंह राय के अलावा अन्य नेता आए हैं, जो उनसे बात कर रहे हैं। ओडिशा के साथ भावनात्मक लगाव है। हमने कांग्रेस के शासन के दौरान भारत सुरक्षा यात्रा निकाली थी। मैंने यात्रा की शुरूआत ओडिशा से की थी। सीमाओं पर बैरिकेडिंग की वजह से बृहस्पतिवार को भी लोगों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा। सिंघु सीमा पर समय-समय पर सुरक्षाकर्मी सुरक्षा अभ्यास करते रहे।

खनौरी बॉर्डर पर जान गंवाने वाले किसान को बीकेयू नेता राकेश टिकैत ने बताया शहीद

भारतीय किसान यूनियन के नेता राकेश टिकैत का कहना है कि आज किसानों के विरोध प्रदर्शन, पंजाब की सीमाओं पर हो रही घटनाओं और एमएसपी पर कानून पर एसकेएम (संयुक्त किसान मोर्चा) की बैठक है। उन्होंने कहा कि खनौरी बॉर्डर में एक किसान की जान चली गई। टिकैत ने पुलिस पर गोलीबारी का आरोप लगाया।

फाजिलका-फिरोजपुर रेलवे फ्लाईओवर जाम

फाजिल्का-फिरोजपुर रोड रेलवे फ्लाईओवर पर भारतीय किसान यूनियन कादिया द्वारा धरना शुरू कर दिया गया है। हालांकि किसानों ने केवल फ्लावर को जाम किया है, जबकि शहर के दोनों रास्ते खुले हुए हैं। जबकि बड़े वाहनों को पुलिस ने विभिन्न जगहों से रुट डाइवर्ट करके आगे की तरफ भेज दिया है। कल शंभू बोर्डर पर जहां काफी की भारी तादाद में ट्रैक्टर और ट्रॉलियों की लंबी कतारें थी। तो वहीं आज यहां पर 25 फीसदी की कमी आई है। शिरोमणि अकाली दल के नेता व पूर्व कैबिनेट मंत्री बिक्रम सिंह मजीठिया ने आरोप लगाया है कि खनौरी बार्डर पर हुई शुभकरन सिंह की मौत के लिए मुख्यमंत्री भगवंत मान को जिम्मेदार है। उन्होंने कहा कि 13 फरवरी को बार्डर पर जो हालात बने थे, उसी समय इस बात की आशंका थी कि कोई बड़ी घटना हो सकती है।

किसान नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल की बिगड़ी तबीयत, अस्पताल में करवाया एडमिट: शंभू बॉर्डर पर किसान आंदोलन के दौरान तबीयत बिगड़ने के बाद जगजीत सिंह डल्लेवाल को राजिंदरा अस्पताल में दाखिल करवाया था।

किसानों के रुख से जल्द नहीं हटेगा पुलिस का पहरा

नई दिल्ली

किसानों के विभिन्न संगठनों द्वारा बार-बार दिल्ली कूच करने के एलान के मद्देनजर अभी दिल्ली की सीमाओं से बैरिकेडिंग हट पाना मुश्किल ही है। सीमाओं की किलेबंदी से आम लोगों को लंबे समय तक परेशानी झेलना पड़ सकता है।

सीमाओं पर बैरिकेडिंग के कारण हर दिन दिल्ली-एनसीआर के लोगों को भारी जाम के कारण परेशानी का सामना काना पड़ रहा है। विशेष आयुक्त कानून एवं व्यवस्था रवींद्र सिंह यादव का कहना है कि बृहस्पतिवार को फिर संयुक्त किसान मोर्चा ने चंडीगढ़ में नया एलान किया है।

26 फरवरी को ट्रैक्टर रैली निकालेंगे किसान

किसानों ने 23 फरवरी को देश भर में ब्लैक-डे मनाने, 26 फरवरी को देश भर में ट्रैक्टर रैली निकालने व मार्च में रामलीला मैदान में महापंचायत करने का एलान किया है। ऐसे में सीमाओं से जल्द पुलिस की चौकसी हटाए जाने की संभावना कम है। दिल्ली पुलिस किसी सूरत में किसानों को दिल्ली में प्रवेश करने नहीं देगी।

बैरिकेडिंग से परेशानी में लोग

ट्रैक्टर रैली व महापंचायत के लिए अभी किसी संगठन ने दिल्ली पुलिस से अनुमति नहीं मांगी है। अगर अनुमति मांगेगी भी तो उन्हें इसकी अनुमति नहीं जाएगी।

पीओके वापस लेने का जम्मू कश्मीर पीपल्स फोरम ने लिया संकल्प

नई दिल्ली

मीरपुर बलिदान भवन समिति और जम्मू कश्मीर पीपल्स फोरम, नई दिल्ली ने आज पीओके वापस लेने का संकल्प दिवस मनाया। कांस्टीट्यूशन क्लब में आयोजित कार्यक्रम में उच्च न्यायालय जम्मू द्वारा 1947 में पीओजेके से विस्थापित 5300 परिवारों के पक्ष में दिए गए फैसले का स्वागत किया गया, जो वर्तमान में जम्मू-कश्मीर के बाहर बसे हुए हैं और उन्हें प्रधानमंत्री पुनर्वास विकास पैकेज, 2015 के अंतर्गत पैकेज में शामिल किया गया है। इस अवसर पर आयोजित प्रेस कान्फ्रेंस को दिल्ली उच्च न्यायालय के रजिस्ट्रार जनरल (सेवानिवृत्त) भारत गुप्ता और सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति विद्याभूषण ने संबोधित किया। प्रेस कांफ्रेंस में 1947 में पीओजेके से विस्थापित परिवारों के सदस्यों ने विभाजन की व्यथा व कबायलियों द्वारा किये गए अत्याचारों के बारे में बताया। जम्मू कश्मीर पीपल्स फोरम द्वारा बताया गया कि 22 फरवरी, 1994 को भारतीय संसद ने सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पारित कर कहा कि भारत के लोगों की ओर से दृढ़ता से घोषणा की जाती है कि जम्मू और कश्मीर राज्य भारत का एकीकृत हिस्सा रहा है और रहेगा और अलग करने के किसी भी प्रयास का देश के बाकी हिस्सों से इसका हर तरह से विरोध किया जाएगा। आज हम पाकिस्तान को भारत सरकार के कड़े फैसले की याद दिलाने के लिए एकत्र हुए हैं।

कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे को मिलेगी जेड प्लस सुरक्षा

नई दिल्ली

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे को जेड प्लस सुरक्षा प्रदान की जाएगी। केन्द्रीय एजेंसियों की ओर से खतरे का आकलन करने के बाद यह फैसला लिया गया है।

सूत्रों के मुताबिक मल्लिकार्जुन खड़गे को अब सीआरपीएफ की ओर से दी जाने वाली देश की सबसे उच्च स्तर का सुरक्षा कवर दिया जाएगा। इसके बाद केवल एसपीजी की सुरक्षा का स्थान आता है, जिसे केवल प्रधानमंत्री को दिया जाता है। इस सुरक्षा कवर में सीआरपीएफ कमांडो के साथ 55 कर्मी शामिल हैं, जो चौबीस घंटे सुरक्षा देते हैं। इस कवर में एक बुलेटप्रूफ गाड़ी और तीन शिफ्ट में एस्कॉर्ट भी शामिल है।

सीएम विजयन की घोषणा...महिलाओं को समान वेतन देने पर जोर

नई दिल्ली

लोकसभा चुनाव को लेकर तमाम राजनीति दलों ने कसर कस ली है। इस बीच, केरल के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन ने गुरुवार को घोषणा करते हुए कहा कि राज्य के कार्यस्थलों पर लैंगिक ऑडिट(जेंडर ऑडिट) कराया जाएगा। जिसके बाद पुरुषों के बराबर महिलाओं के लिए समान वेतन सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाए जाएंगे। महिला कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सीएम विजयन ने कहा कि महिलाओं के लिए नौकरियों को ज्यादा अनुकूल बनाया जाना चाहिए।

रोजगार में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने पर फोकस: सीएम विजयन ने अपने संबोधन में कहा कि पहले केवल महिलाओं को शिक्षित करने पर जोर दिया जाता था, लेकिन अब समय की मांग है कि उन्हें कार्यस्थलों में भाग लेने के लिए जागरूक किया जाए। साथ ही सीएम विजयन ने नौकरियों को महिलाओं के लिए ज्यादा अनुकूल बनाए जाने की वकालत की। उन्होंने कहा कि राज्य में महिला-पुरुष को समान वेतन सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाए जाएंगे। सभी राज्य विश्वविद्यालयों में छात्रों के लिए मासिक धर्म की छुट्टी शुरू करने वाले केरल राज्य अब देश में एक रोल मॉडल बन गया है।

केंद्रीय वित्त मंत्री ने गोरखपुर में प्रत्यक्ष कर भवन का किया उद्घाटन

गोरखपुर/नई दिल्ली

केंद्रीय वित्त एवं कॉरपोरेट मामलों की मंत्री निर्मला सीतारमण ने गुरुवार को गोरखपुर में "प्रत्यक्ष कर भवन" का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मुक्त कंठ से सराहना की। सीतारमण ने कहा कि योगी आदित्यनाथ जी बहुत ही डायनमिक मुख्यमंत्री हैं। सीतारमण ने यहां "प्रत्यक्ष कर भवन" का उद्घाटन करने के बाद उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए पहली बार गोरखपुर आगमन को लेकर कहा कि 'फर्स्ट इंप्रेशन इज बेस्ट इंप्रेशन और मुझे गोरखपुर इतना सुंदर लगा जितना सोचा भी नहीं था। इस अवसर पर मुख्यमंत्री आदित्यनाथ, केंद्रीय वित्त राज्यमंत्री पंकज चौधरी और केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड के अध्यक्ष नितिन गुप्ता सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री आदित्यनाथ ने कहा कि भारत आज दुनिया में तेजी के साथ उभरती हुई नई अर्थव्यवस्था है। किसी देश के लिए इससे अच्छा अवसर क्या हो सकता है कि जब वो आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा हो और उस देश को पीछे धकेल रहा हो जिसने करीब 200 वर्षों तक उस पर शासन किया हो।

इससे पहले गोरखपुर में "प्रत्यक्ष कर भवन" के उद्घाटन के अवसर पर केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड के अध्यक्ष नितिन गुप्ता ने केंद्रीय मंत्री सीतारमण और मुख्यमंत्री आदित्यनाथ का स्वागत किया।

द्विपक्षीय संबंधों पर टिप्पणी को लेकर फिर से एक बार चर्चा में आए शशि थरूर

नई दिल्ली

केरल से सांसद व कांग्रेस के नेता शशि थरूर कल से फ्रांस के सर्वोच्च नागरिक सम्मान पाने के बाद से सुर्खियों में हैं, आज वे विभिन्न देशों के साथ भारत के द्विपक्षीय संबंधों पर सकारात्मक टिप्पणी को लेकर चर्चा में बने हुए हैं। गुरुवार को शशि थरूर ने मीडिया से बातचीत में कहा है कि दुनिया के देश रायसीना डायलॉग 2024 में इसलिए हिस्सा ले रहे हैं क्योंकि दुनिया के लगभग सभी देशों के साथ भारत के अच्छे संबंध हैं शशि थरूर ने आगे कहा कि अब मुझे लगता है कि अधिक से अधिक देश भारत को वैश्विक कूटनीति के लिए एक अच्छे स्थान के रूप में देखने लगे हैं। अब यह एक ऐसी जगह बन गया है जहां वे भारत से जुड़ सकते हैं और एक-दूसरे के साथ नेटवर्क भी बना सकते हैं। यह एक बहुत अच्छा मंच बनता जा रहा है। कांग्रेस नेता और सांसद शशि थरूर पिछले दिनों प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की विदेश नीति की प्रशंसा के दौरान चर्चा में आए थे।

उन्होंने आगे यह भी कहा था कि मुस्लिम देशों से हमारे रिश्ते जितने अच्छे अभी हैं, उतने कभी नहीं रहे। इससे पहले 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर थरूर ने पीएम मोदी की तारीफ की थी। उन्होंने कांग्रेस के एक पोस्ट पर प्रतिक्रिया दी थी।

पिछले दिनों कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने जी-20 सदस्यों की नई दिल्ली घोषणा की सराहना करते हुए कहा कि यह निस्संदेह भारत के लिए कूटनीतिक जीत है। इसे लेकर चर्चा में आए थे। शशि थरूर ने कहा था कि यह एक अच्छी उपलब्धि है क्योंकि जी-20 समिट से पहले तक ऐसी उम्मीद थी कि कोई समझौता नहीं होगा। इसलिए संयुक्त बयान जारी करना संभव नहीं हो सकता।

एनसीएसटी की टीम ने संदेशखाली का किया दौरा

संदेशखाल

पश्चिम बंगाल के संदेशखाली की घटना सामने आने के बाद से ही तमाम विपक्षी दल ममता सरकार के खिलाफ लामबंद हो गए हैं। जहां एक तरफ सत्ता पक्ष भाजपा पर प्रदेश में माहौल खराब करने का आरोप लगा रहा है। वहीं तमाम विपक्षी दल राज्य में कानून व्यवस्था के ध्वस्त होने की बात कह रहे है। पश्चिम बंगाल की पूरी सियासत संदेशखाली के ईर्दगिर्द भटक रही है। संदेशखाली सियासी जंग का मैदान बना हुआ है।

अब मामले की तह तक जाने के लिए राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की एक टीम भी संदेशखाली पहुंच गई है।

23 से अधिक शिकायतें मिलीं

एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग (एनसीएसटी) की टीम गुरुवार सुबह पश्चिम बंगाल के उत्तर 24 परगना जिले के संदेशखाली पहुंची। इस दौरान वहां के लोगों के साथ बातचीत की, तो जबरन जमीन हड़पने और प्रताड़ना की 23 से अधिक शिकायतें मिलीं।

एनसीएसटी के कार्यवाहक उपाध्यक्ष अनंत नायक ने कहा कि उन्हें एक नेता के खिलाफ शिकायतें मिली हैं।

हाई कोर्ट ने दिल्ली हेल्थ बिल 2022 के अभी तक पूरा नहीं होने पर जताई नाराजगी

नई दिल्ली

दिल्ली हाई कोर्ट ने दिल्ली हेल्थ बिल 2022 के अभी तक पूरा नहीं होने पर नाराजगी जताते हुए दिल्ली सरकार के स्वास्थ्य मंत्री सौरभ भारद्वाज और स्वास्थ्य सचिव एसबी दीपक कुमार को तलब किया है। कार्यकारी चीफ जस्टिस मनमोहन की अध्यक्षता वाली बेंच ने दोनों को 21 मार्च को कोर्ट में सशरीर पेश होने का आदेश दिया। दरअसल सुनवाई के दौरान हाई कोर्ट को मिले ई-मेल में ये पाया गया कि दिल्ली सरकार के स्वास्थ्य मंत्री को दिल्ली हेल्थ बिल 2022 पर चर्चा के दौरान बुलाया ही नहीं जाता है। उसके बाद कोर्ट ने दिल्ली सरकार के स्वास्थ्य मंत्री और स्वास्थ्य सचिव को कोर्ट में सशरीर पेश होने का आदेश दिया।

मोदी सरकार ने किसानों के हित में हर जरूरी कदम उठाए: अनुराग ठाकुर

नई दिल्ली

केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण और युवा एवं खेल मामलों के मंत्री अनुराग सिंह ठाकुर ने गुरुवार को कहा कि किसानों को समृद्ध, सशक्त व उन्हें आर्थिक रूप से मजबूत बनाने के लिए मोदी सरकार ने हर जरूरी कदम उठाए हैं, आगे भी निर्णय किसानों के हित में ही लिया जाएगा। उन्होंने कहा कि अभी पहले चार चरणों की बातचीत में मोदी सरकार के वरिष्ठ मंत्रीगण चंडीगढ़ जाकर किसानों से मिल बैठकर विस्तृत और सकारात्मक परिचर्चा कर चुके हैं। मोदी सरकार ने स्पष्ट रूप से कहा है कि आगे भी हम चर्चा के लिए हमेशा तैयार हैं। हम सभी को मिलकर प्रयास करना चाहिए कि हिंसा, आगजनी ना हो और किसी को भी जान माल का नुकसान ना पहुंचे।

गुरुवार को नई दिल्ली में पत्रकारों से

किसान आंदोलन और संदेशखाली पर बातचीत करते हुए अनुराग ठाकुर ने कहा कि हमने कल ही गन्ने की कीमत 315 रुपये प्रति क्विंटल से बढ़ाकर 340 रुपये प्रति क्विंटल की है। यह पिछले वर्ष की तुलना में 8 प्रतिशत की बढ़ोतरी है, जिस पर 107 प्रतिशत का रिटर्न है।

अनुराग ठाकुर ने आगे कहा कि मोदी सरकार किसानों की आय दोगुनी करने हेतु सभी प्रयास कर रही है। हमने स्वामीनाथन कमेटी की रिपोर्ट को लागू किया। कांग्रेस के 10 वर्षों के कार्यकाल में किसानों की उपज की कुल खरीद मात्र 5.50 लाख करोड़ रुपये की हुई थी। मोदी सरकार ने 18.39 लाख करोड़ रुपये की खरीद की है। यानी लगभग साढ़े तीन गुना ज्यादा। इससे पता चलता है की हमने दाम भी बढ़ाए और खरीदारी भी दोगुनी से ज्यादा की। इसके अलावा मोदी सरकार ने किसानों को सम्मान निधि के तौर पर 2.81 लाख करोड़ रुपये दिए। 2013-14 में जब यूपीए की सरकार थी, तब कृषि बजट 27 हजार 662 करोड़ रुपये था। अभी मोदी सरकार का कृषि बजट 1 लाख 25 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा है। यानी यूपीए काल से 5 गुना ज्यादा। यूपीए काल की फसल बीमा योजना के अंतर्गत किसानों को कुछ नहीं मिलता था। मोदी सरकार में डेढ़ लाख करोड़ रुपये से ज्यादा का मुआवजा किसानों को मिला है। 10 हजार एफपीओ में से 8 हजार बन चुके हैं और इससे लाखों किसान भी जुड़ चुके हैं। हमने 1 लाख करोड़ रुपये का एग्रीकल्चर इंफ्रास्ट्रक्चर फंड बनाया, जिसमें से 30 हजार करोड़ रुपये अब तक जारी किए जा चुके हैं। अनुराग सिंह ठाकुर ने बताया कि सिंचाई योजनाओं के लिए मोदी सरकार ने डेढ़ गुना ज्यादा यानी लगभग 15 हजार 500 करोड़ रुपये खर्च किए। कांग्रेस के समय कृषि ऋण मात्र 7 लाख करोड़ रुपये के आसपास था, जिसे बढ़ाकर हमने 20 लाख करोड़ रुपये किया है। और यह मात्र पिछले वर्ष का आंकड़ा है। इनके समय एक्सपोर्ट 2 लाख 62 हजार करोड़ रुपये का था, हमने 4 लाख 27 हजार करोड़ का किया। इस तरह मोदी सरकार से कांग्रेस की तुलना करना ही व्यर्थ है। जिन्होंने 60 वर्षों में कुछ नहीं किया, वह क्या हमसे तुलना करेंगे।

पुलिस भर्ती परीक्षा धांधली एवं पेपर लीक मामले में अभ्यर्थियों ने प्रदर्शन कर एसीपी को सौंपा ज्ञापन

अखंड भारत संदेश

मेजा। बीते शनिवार और रविवार को उत्तर प्रदेश पुलिस भरती परीक्षा में हुई धांधली और पेपर लीक को लेकर प्रतियोगी छात्रों ने मेजारोड में विरोध प्रदर्शन करते हुए एसीपी मेजा को ज्ञापन सौंपा।उल्लेखनीय है कि 17 व 18 फरवरी को पूरे उत्तर प्रदेश में पुलिस भरती परीक्षा का आयोजन किया गया था। परीक्षा प्रारंभ होने के पूर्व ही प्रश्न पत्र फेसबुक पर वायरल हो गया। ऐसे में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर परीक्षा में हुई धांधली की जांच का आदेश दिया गया है। परीक्षा में हुई धांधली और प्रश्नपत्र लीक होने पर आक्रोशित परीक्षार्थियों ने मंगलवार को मेजारोड चौराहे पर डीपी तिवारी के नेतृत्व में विनीत यादव,विनय यादव, सत्य कुमार मिश्र, सिवांशू विश्वकर्मा, सिवेश यादव, सुनील कुमार, सुशील कुमार, उदय सिंह, शिवा यादव व तारा यादव सहित भारी संख्या में उपस्थित आक्रोशित अभ्यर्थियों ने धरना-प्रदर्शन करते हुए एसीपी मेजा रवि कुमार गुप्ता को ज्ञापन पत्र सौंपा।इस दौरान आक्रोशित अभ्यर्थियों को मनाने एवं समझने बुझाने में थाना प्रभारी मेजा राजेश उपाध्याय के नेतृत्व में भारी संख्या में पुलिस बल मौजूद रही।

एसीपी ने ग्राम पिलखुआं का किया दौरा ग्रामीणों से हुए रूबरू

मऊआइमा। मऊआइमा के ग्राम पिलखुआं में रास्ते का मामला सुलझाने गयी पुलिस और ग्रामीणों के बीच हुई मार पीट का मामला जनप्रतिनिधियों तक पहुंच गया है। बुधवार को हुए घटना में मऊआइमा थाने के कांस्टेबल सुधीर कुमार ने कृष्ण कुमार,मोहन कुमार, अखिलेश, संगीता, सुशीला, कल्पना देवी,सविता, कविता और एक दर्जन अज्ञातों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है। हालांकि मऊआइमा पुलिस ने राकेश कुमार पटेल को हिरासत में ले लिया है। बताया गया है कि गुरुवार को डीसीपी पुलिस उपायुक्त मनोज सिंह ने पिलखुआं गांव में मामले की शुरूआत भारल लाल के घर तक गए।अन्य ग्रामीणों से पूछ ताछ कर के वापस चले गए। गांव में अब भी सन्नाटा पसरा हुआ है। इंस्पेक्टर मऊआइमा राघवेन्द्र सिंह ने बताया कि अभी कोई गिरफ्तारी नहीं हुई है। दबिश का सिलसिला जारी है।

विकसित भारत संकल्प यात्रा के तहत नगर पंचायत मऊआइमास में हुआ कार्यक्रम

अखंड भारत संदेश

मऊआइमा। विकसित भारत संकल्प यात्रा के तहत प्रथम प्रोग्राम नगर पंचायत मऊआइमा में हुआ दूसरा कार्यक्रम आजमपुर नया पूरा वार्ड नंबर पांच में हुआ।बैंको और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मऊआइमा के अधिकारी और अन्य विभाग के अधिकारी मौजूद रहे जिन्होंने अपनी अपनी योजनाओं पर प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम में स्वच्छ भारत मिशन के जिला कार्यक्रम प्रबंधक हर्ष जय सिंह, अध्यक्ष मोहम्मद शोएब अंसारी, वरिष्ठ लिपिक हीरालाल, मोहम्मद आजम, शिव कुमार, आशीष कपूर, रखशान आरिफ, वलीद अंसारी, कुल्लू आदि कर्मचारी मौजूद रहे।

थानापुर में महाराणा प्रताप मुख्य द्वार का हुआ शिलान्यास

अखंड भारत संदेश

सहसों। विकास खण्ड सहसों के ग्राम सभा थानापुर के सामने प्रयागराज गोरखपुर राजमार्ग पर स्थित संपर्क मार्ग पर महाराणा प्रताप सेवा संस्थान के संस्थापना के अवसर पर गुरुवार को ग्राम निधि द्वारा महाराणा प्रताप मुख्य द्वार का पूजा पाठ कर विधि विधान से शिलान्यास किया गया। मुख्य द्वार का शिलान्यास करतीं अखिल भारतीय महाराणा प्रताप सेवा संस्थान की महिला मोर्चा जिला अध्यक्ष एवं ग्राम प्रधान थानापुर विजय लक्ष्मी सिंह चंदेल ने बताया कि मुख्य द्वार का निर्माण कार्य संगठन महासचिव मानेन्द्र प्रताप सिंह की देख-देख में शुरू हुआ है तथा प्रवेश द्वार तैयार होने के पश्चात महाराणा प्रताप की मूर्ति की भी स्थापना की जाएगी। इस मौके पर ग्राम प्रधान पति संजय सिंह, रवि सिंह चंदेल सम्राट, ठाकुर सत्यम सिंह चंदेल, ज्ञानेंद्र सिंह, अजीत प्रताप सिंह, राजू सिंह, मुन्ना यादव, सीडी यादव, कृष्ण नारायण शुक्ला, मोनू सिंह, विधान सिंह, लक्ष्मीकांत दुबे एवं राम बहादुर सिंह सहित आदि लोग मौजूद रहे।

अरे द्वारपालों कन्हैया से कह दो कि दर पे सुदामा गरीब आ गया है...

प्रयागराज। गंगोली शिवाला मार्ग, पुल नंबर 4 निकट अन्नपूर्णा चौराहा पर स्थित गंगा कल्पवास आश्रम के संस्थापक स्वर्गीय गंगा प्रसाद पांडेय के पुत्र तीर्थ पुरोहित चंद्र नारायण पांडेय गुड्डू शास्त्री महाराज एवं उदय नारायण पांडेय महाराज के कल्पवास आश्रम में आयोजित श्रीमद्भागवत कथा में समापन दिवस पर गुरुवार को कथा व्यास धर्मराज शास्त्री जी महाराज द्वारा सुदामा चरित्र का वर्णन किए जाने पर पंडाल में उपस्थित श्रोता भाव-विभोर हो गए। कथा व्यास ने सुदामा चरित्र का वर्णन करते हुए कहा कि मित्रता करो, तो भगवान श्रीकृष्ण और सुदामा जैसी करो सच्चा मित्र वही है, जो अपने मित्र की परेशानी को समझे और बिना बताए ही मदद कर दे परंतु आजकल स्वार्थ की मित्रता रह गई है जब तक स्वार्थ सिद्ध नहीं होता है, तब तक मित्रता रहती है जब स्वार्थ पूरा हो जाता है, मित्रता खत्म हो जाती है। उन्होंने कहा कि सुदामा अपनी पत्नी के कहने पर मित्र श्री कृष्ण से मिलने द्वारकापुरी जाते हैं जब वह महल के गेट पर पहुंच जाते हैं, तब प्रहरियों से कृष्ण को अपना मित्र बताते है और अंदर जाने की बात कहते हैं। सुदामा की यह बात सुनकर प्रहरी उपहास उड़ाते है और कहते है कि भगवान श्रीकृष्ण का मित्र एक दरिद्र व्यक्ति कैसे हो सकता है। प्रहरियों की बात सुनकर सुदामा अपने मित्र से बिना मिले ही लौटने लगते हैं। तभी एक प्रहरी महल के अंदर जाकर भगवान श्रीकृष्ण को बताता है कि महल के द्वार पर एक सुदामा नाम का दरिद्र व्यक्ति खड़ा है और अपने आप को आपका मित्र बता रहा है। द्वारपाल की बात सुनकर भगवान कृष्ण नंगे पांव ही दौड़े चले आते हैं और अपने मित्र को रोककर सुदामा को रोककर गले लगा लिया। सुदामा चरित्र के माध्यम से श्रोताओं को श्रीकृष्ण और सुदामा की मित्रता की मिसाल पेश की समाज को समानता का संदेश दिया।

डा. अमरेश तिवारी को सौंपी गई सिरसा मंडल की कमान जताया आभार

कहा - संगठन की मजबूती के पूरी ईमानदारी और निष्ठा से निभाऊंगा जिम्मेदारी

अखंड भारत संदेश

मेजा। संगठन के शीर्ष नेतृत्व द्वारा डा अमरेश तिवारी को सिरसा मंडल का प्रभारी बनाए जाने पर क्षेत्रीय भाजपा कार्यकताओं ने जहां बधाई दिया है वहीं नवनिर्वाचित सिरसा मंडल प्रभारी ने पार्टी के शीर्ष नेताओं का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि संगठन के क्षेत्रीय अध्यक्ष दिलीप पटेल और यमुनापार के ऊजार्वान कार्यकताओं को हमेशा ताकत देने वाले यमुनापार के जिलाध्यक्ष विनोद प्रजापति को दिल से आभार है जो मुझ जैसे छोटे कार्यकर्ता को मेजा विधानसभा के सिरसा मंडल का प्रभारी बनाकर सम्मान दिया है। उन्होंने आगे कहा कि संगठन के शीर्ष नेतृत्व द्वारा मुझे जो जिम्मेदारी सौंपी गई है उस जिम्मेदारी को पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ संगठन को मजबूती प्रदान करने का काम करूंगा। गौरतलब है कि मंगलवार को संगठन के पदाधिकारी विनय यादव के नेतृत्व में श्री तिवारी का जोरदार स्वागत एवं अभिनन्दन किए जाने पर नवनिर्वाचित प्रभारी ने धन्यवाद ज्ञापित किया है। इस मौके पर पुष्कर तिवारी, रवि शुक्ला, अभिषेक पाण्डेय, आर्यन शुक्ला तथा सुनील प्रजापति आदि के अलावा कई अन्य भाजपा पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

सरकार की छवि को धूमिल करने वाले को बख्शा नहीं जाएगा : मुकेश कोल

कोरांव। सूबे की भाजपा सरकार प्रदेशवासियों को विद्युत आपूर्ति सस्ती और सुगमता से उपलब्ध कराने के वादे को लेकर दिन रात प्रयासरत है जिसके क्रम में नए नए योजनाएं संचालित कर लोगो को लाभवंतित करते हुए लोगो को जागरूक करने का कार्य कर रही है लेकिन वही देखा जा रहा है की कुछ विभागीय कर्मचारी ही शासन के मंसूबे पर पानी फेरने की गरज से जनता का शोषण कर रहे है जिससे शासन के मंसूबे का सफल होना सफेद हाथी नजर आ रहा है।ऐसा ही इन दिनों विद्युत विभाग कोरांव फीडर में कार्यरत संविदा कर्मी और उसके साथ कुछ अन्य कर्मचारी अपने दायित्वों का निर्वाहन जिम्मेदारी से ना करते हुए वसूली में लिप्त देखे जा रहे अपने निजी स्वार्थ को साधने के लिए यह लोग बिना रोस्टिंग के ही दिन में कई बार शट डाउन के नाम पर अघोषित विद्युत कटौती कराते हुए देखे जा सकते है। कोरांव ब्लाक प्रमुख मुकेश कोल ने कहा की भाजपा की डबल इंजन की सरकार आमजन के मौलिक अधिकारों को देने के प्रतिबद्ध है अवैध वसूली और जनता का शोषण करने से आमजन में सरकार की छवि धूमिल होती है और ऐसा कृत्य करने वाले को कत्तई बर्दाश्त नहीं किया जायेगा यदि विभाग ऐसे लोगो पर त्वरित कार्यवाही नही करता है तो उच्चाधिकारियों से मिलकर ऐसे भ्रष्ट कर्मियों को चिन्हित कराते हुए कड़ी कार्यवाही कराई जाएगी।

लाभार्थी जनसंपर्क अभियान के तहत जसरा मंडल की बैठक संपन्न

जसरा। भाजपा की मोदी सरकार ने सबका साथ सबका विकास सबका विश्वास के मूल मंत्र को लेकर हर वर्ग का सम्मान किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुवाई में देश आज विकास के उच्च शिखर पर है। उक्त बातें भाजपा जिला मंत्री प्रकाश शुक्ल प्रचंड ने कही आगे उन्होंने कहा कि पार्टी के पदाधिकारी लाभार्थियों से हर घर जाकर संपर्क करें और भाजपा की नीति रीति से उनको जोड़ें। कार्यक्रम में उपस्थित जिला मंत्री कमलेश त्रिपाठी ने कहा कि भाजपा की सरकार आने के पहले प्रदेश में फैली अराजकता को भाजपा की योगी सरकार ने खत्म किया है, गुंडे माफियाओं का खात्मा किया, बेघरों को घर, खुशहाल किसान, हर घर नल, घर-घर बिजली, भ्रष्टाचार मुक्त एक उत्तम प्रदेश बनाया जहां पर आज नारियों का सम्मान होता है। कार्यकताओं को वरिष्ठ भाजपा नेता आचार्य हरिकृष्ण शुक्ला व मंडल प्रभारी राजू सिंह पटेल ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष जगत नारायण शुक्ला ने किया व संचालन महामंत्री भूपेंद्र पाठक में कार्यक्रम में आए हुए सभी कार्यकताओं व अतिथियों का मंडल महामंत्री नीरज केसरवानी स्वागत किया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से राजा बाबू पाठक, एस के तिवारी, शंकर देव त्रिपाठी,अशोक तिवारी, अवध बिहारी मिश्रा, बच्चा मालवीय, निधिश पाठक, राहुल पाल, राकेश पाठक, बजरंग बहादुर, सत्तन निषाद, प्रवीण मालवीय, शिवाकांत तिवारी, उदित मिश्रा, सुबोध जयसवाल, दिनेश केसरवानी, आलोक द्विवेदी, सनी भारतीय, शशिकांत पांडेय, संकल्प केसरवानी, विमला भारतीय, आशा शुक्ला, रामसागर द्विवेदी, अमित पांडे, सीमा द्विवेदी, मोहन सिंह, यश विक्रम सहित दर्जनों लोग मौजूद रहे।

पात्रों को सीधे लाभ दिलवाने में ग्राम प्रधान की भूमिका महत्वपूर्ण : प्रवीण पटेल

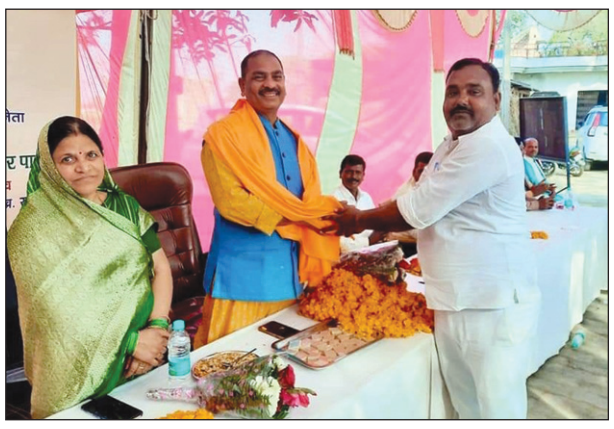

सहसों। ग्राम प्रधान संघ विकास खण्ड सहसों द्वारा ग्राम सभा सेमरी के पंचायत भवन पर एक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें बतौर मुख्य अतिथि क्षेत्रीय विधायक प्रवीण पटेल ने सम्मान समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि गांव के विकास में जनप्रतिनिधि की महत्वाकांक्षी सोच एवं उसका क्रियान्वयन कर साकार करना बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। उन्होंने कहा सरकार द्वारा विभिन्न जनकल्याण कारी योजनाओं को पात्र लाभार्थियों तक पहुंचा कर इसका लाभ दिलवाने के लिए ग्राम प्रधान की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। समारोह में उपस्थित विशिष्ट अतिथि ब्लॉक प्रमुख सहसों गीता सिंह ने कहा कि पंचायती राज मे महिलाओं की भागीदारी से उन्हें सुचिता एवं सम्मान के साथ आत्मनिर्भरता का अधिकार प्राप्त हुआ है जो बहुत ही सराहनीय है। इस अवसर पर प्रधान संघ के अध्यक्ष सुभाष चंद्र ने मुख्य अतिथि सहित सभी अतिथियों को माल्यार्पण एवं अंगवस्त्र भेंट कर उन्हें ससम्मान से सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन पूर्व प्रधान प्रदीप यादव ने किया। इस अवसर पर महासचिव शिव कुमार पासी, प्रधान बगई प्रताप सिंह, ग्राम प्रधान विष्णु देव, प्रमुख प्रतिनिधि शिव नारायण सिंह गप्पू , संदीप दूबे सहित आदि ग्राम प्रधान तथा वरिष्ठ जन उपस्थित रहे।

न्यूज झरोखा

हनुमान मंदिर पर हनुमत वाटिका का विधायक ने किया भूमि पूजन

कोरांव। तहसील कोरांव अंतर्गत प्राचीन हनुमान मंदिर पथरताल में विधायक कोरांव राज मणि कोल ने हनुमत वाटिका निर्माण के लिए भूमि पूजन किया। भूमि पूजन कार्यक्रम में पिंटू चौबे जिला पंचायत सदस्य टी एन मिश्रा संतोष मिश्रा भाजपा नेता बबुआन दुवेदी आदि लोग शामिल रहे।

समाजसेवी जवाहर लाल का निधन अंतिम संस्कार सिरसा गंगा घाट पर किया गया

सिरसा। गुरूवार को स्व. जवाहर लाल उम्र तकरीबन अस्सी वर्ष का निधन दिन बुधवार हुआ था। जिनका अन्तिम दाह-संस्कार दिन बृहस्पतिवार सिरसा गंगा घाट के समीप किया गया। बताते चले कि स्व. जवाहर लाल तेलियातारा के निवासी थे जो कुछ बीमारियों से ग्रसित एवं काफी वृद्ध भी थे और वे हमेशा समाजिक कार्य मे उनका योगदान रहता था। उन्हीं का मृत्योपरांत सिरसा गंगा घाट के समीप अन्तिम दाह-संस्कार हुआ। बड़े पुत्र राधेश्याम ने मृत-पिता को मुखाग्नि दी एवं छोटे पुत्र बृजलाल सहित वहाँ उपस्थित सभी लोगों ने मृत-आत्मा के शांति हेतु श्रद्धांजलि अर्पित की। इसी क्रम में जिला मंत्री राजेश तिवारी ने कहा कि मनुष्य का इस धरती पर तो आना-जाना लगा ही रहता है।यही वास्तविक जीवन का सत्य है।जिला मंत्री ने यह भी कहा कि हमें यह मानव जीवन सिर्फ लिए मिला है कि हम सत्य,पुण्य एवं न्याय को आत्मसात कर ले यही मनुष्य का मूलभूत रूप से कमाया गया धन है बाकी तो मनुष्य खाली हाथ आता है खाली हाथ ही जाता है।इस धरती पर जो कुछ भी वह कुछ और नही केवल और केवल मिट्टी ही है।

बन्नो एलेवन ने एम पी एल क्रिकेट टूनार्मेंट जीत कर किया इनाम हासिल

मऊआइमा। मऊआइमा के मानी उमरपुर में हुए क्रिकेट टूनार्मेंट में पहले बल्लेबाजी करते हुए मानी उमरपुर के बन्नो एलेवन ने बारह ओवर में 93रन बनाए जिसमें सबसे अधिक फहद ने 45रन बनाए।93रन का पीछा करते हुए अलावलपुर की टीम ने 90 रन सात विकेट पर बनाया।इस प्रकार बन्नों एलेवेन को विजयी घोषित किया गया। विजेता टीम के कप्तान बन्नो,उप कप्तान फैसल,फहद,अकरम,आदिल,फराज, जुनैद फस्ट, जुनैद सिकेंड सेबू हामिद आदि को इनाम दिए गया। ट्नामेंट में मुख्य अतिथि ग्राम प्रधान जमखुरी सरताज आलम, महरौंडा प्रधान प्रतिनिधि दानिश आदि मौजूद थे।तथा विजेता टीम का हौसला बढ़ाया।

नदी नाले सार्वजनिक भूखंडों पर अब होगा पौधा रोपण : शहजादे

सरकार की इस योजना से गांवों में दिखेगी हरित क्रांति, अधिक से अधिक पेड़ लगवाने का आह्वान

अखंड भारत संदेश

ग्राम प्रधान शहजादे

कोरांव। ग्राम सभाओं में ग्राम समाज की दुरपयोग हो रही जमीनें अब भू अतिचारियों को नहीं पच पाएगी। ग्राम पंचायतें अब नदी नाले पुराने खाली अनुपयोगी रास्ते,सार्वजनिक भू स्थलों ऊसर नवीन परती बंजर आदि की भू अभिलेखों में जितना दर्ज है उस पर मनरेगा द्वारा पौध रोपण कराया जायेगा। उक्त जानकारी ग्राम प्रधान अल्हवा और अखिल भारतीय प्रधान संगठन उत्तर प्रदेश प्रयागराज मंडल प्रयागराज के मंत्री अहद अहमद सिद्दीकी उर्फ शहजादे ने दी। उन्होंने बताया कि काफी समय से लोग ऐसी जमीनों को भूमि प्रबंधक समितियों के निष्क्रियता से भू माफिया अतिक्रमण कर के गैर कानूनी तरीके से अपने चकों में सम्मिलित कर फसल उगा कर लाभ उठा रहे थे। जिससे राजस्व की अपूर्नीय क्षति हो रही थी। प्रधान लीडर ने बताया कि प्रदूषित वातावरण को शुद्ध जल वायु और पर्यावरण हितार्थ उक्त भू खंडों पर जून जुलाई माह से गढ़े खुदवाए जायेंगें,और पौधारोपण कराया जायेगा। ग्राम प्रधान अल्हवा ने अपने ग्राम पंचायत के सभी ऐसे काश्तकारों से अपील किया है कि प्यार पूर्वक ग्राम समाज की जमीनें स्वयं लोग छोड़ दें,जिससे कानूनी कार्यवाही न करानी पड़े। उन्होंने कहा की सरकार की मंशा अनुसार ऐसी जमीनों को कब्जा मुक्त करा कर नवीन परती,बंजर भूमिहीनों को आवंटन करने के पश्चात शेष नदी,नाले,सार्वजनिक भू खंडों को हरित क्रांति के तहत गांवों में हरियाली लाने के लिए भारी संख्या में पौधारोपण कराया जायेगा। प्रधान के अनुसार अल्हवा में पचीसों बीघा जमीनें नदी नाले खाते की कृषि कार्य योग्य हैं,जिन्हे भू अतिचारी इस्तेमाल कर रहे हैं और उसे अपनी बपौती समझ लिया है। अब सरकार तथा ग्राम पंचायत सरकार ने ऐसी जमीनों को संज्ञान में लिया है। और पौधे लगवाए जायेंगें। फिलहाल ग्राम प्रधान अल्हवा शहजादे पत्रकार ने क्षेत्रीय वन अधिकारी सामाजिक वानिकी वन प्रभाग कोरांव को पत्र लिख कर अवगत कराया है कि अपने गांव के अंदर किसी भी हरे पेड़ के काटने पर रोक लगा दी है। किसी पेड़ों की कटान परमिशन के पूर्व विधिवत जाच और ग्राम पंचायत से भी जानकारी प्राप्त कराएं। क्योंकि एक पेड़ के परमिशन पर कई पेड़ कटवा कर लोग पर्यावरण को प्रभावित कर रहे हैं। और गलत परिवहन उसी परमिट पर करते हैं। उन्होंने कहा कि लकड़हारे ठिकेदार ध्यान दें कि ग्राम सभा अल्हवा में यदि हरे पेड़ कटवाते दिखे तो उन्हे मंहगा पड़ सकता है। सार्वजनिक जमीनों तालाब आदि पर खड़े पेड़ ग्राम समाज की संपत्ति है। वन विभाग को चाहिए कि जिन पेड़ की कटिंग की परमिशन देते हैं तो पेड़ मालिक किस भूखंड पर स्थित पेड़ का खसरा नकल दिखा कर परमिशन दे रहे ध्यान की जरूरत हैं। क्योंकि ग्राम समाज की भूमि पर उगे पेड़ ग्राम सभा की संपत्ति है। ग्राम पंचायत से शहमति लेनी चाहिए।

धीरेंद्र कुमार यादव
बीडीओ, कोरांव
प्रयागराज

सभी ग्राम प्रधान गण नदी नाले और बंजर परती सार्वजनिक भू खंडों पर ज्यादा से ज्यादा पौधा रोपड़ कराएं। जिससे गांवों में हरियाली दिखे और पर्यावरण प्रदूषित न हो। क्योंकि वृक्ष से ही शुद्ध जलवायु प्राप्त होती है और ऑक्सीजन की कमी दूर होती है। साथ ही गांवों में गंदगी न होने दें और न ही तालाबों नालियों नालों तलइयों में कूड़ा करकट फेंके न गंदे पानी जानें दे। सचिवों को हमने गांवों में कड़ाई से पालन कराने हेतु निर्देशित किया है। जिसका स्वक्छता अभियान चलाया जा रहा है।

लाइव निगरानी के बीच शुरू हुई बोर्ड परीक्षा

अति संवेदनशील केंद्रों पर रही पैनी नजर

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। कड़ी सुरक्षा और निगरानी के बीच में यूपी बोर्ड की परीक्षा बृहस्पतिवार से शुरू हो गई। सचल दस्ते परीक्षा केंद्रों की निगरानी करते रहे। प्रदेश के 8265 केंद्रों पर कुल 55,25,308 परीक्षार्थी पंजीकृत हैं। परीक्षा दो पालियों में होगी। नकल विहीन परीक्षा के लिए पहली बार सेंट्रल कंट्रोल एवं कमांड सेंटर से परीक्षा केंद्रों की लाइव निगरानी कराई जा रही है। नकलचियों पर नकेल कसने के लिए तकनीक से केंद्रों को लैस किया गया है। साथ ही सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर अफवाहें फैलाने वालों पर भी नजर रखी जा रही है। प्रदेश में मथुरा, बागपत, अलीगढ़, मैनपुरी, एटा, हरदोई, आजमगढ़, बलिया, मऊ, प्रयागराज, कौशाम्बी, चंदौली, जौनपुर, गाजीपुर, देवरिया और गोंडा को अति संवेदनशील जनपद घोषित किया गया है।

तीन अधिकारियों की उपस्थित में खोले गए प्रश्न पत्र

परीक्षा केंद्रों पर बने स्ट्रांग रूम में प्रश्न पत्र रखवाए गए हैं। परीक्षा से पहले प्रश्न पत्र के पैकेट तीन अधिकारियों की उपस्थित में खोले जाएंगे। इस दौरान केंद्र व्यवस्थापक, वाह्य केंद्र व्यवस्थापक और स्टैटिक मजिस्ट्रेट उपस्थित रहे। जिस विषय की परीक्षा है यदि उसके अलावा किसी अन्य विषय का प्रश्न पत्र खोला जाता है, तो तीनों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

हाईस्कूल में हिंदी-वाणिज्य और इंटरमीडिएट में हिंदी के साथ सैन्य विज्ञान की परीक्षा

परीक्षा दो पालियों में होगी। प्रथम पाली में हाईस्कूल की सुबह 8:30 बजे से 11:45 तक और द्वितीय पाली में इंटरमीडिएट की परीक्षा दोपहर दो बजे से 5:15 तक आयोजित होगी। पहले दिन हाईस्कूल की हिंदी विषय की परीक्षा 8,232 केंद्रों पर और इंटर की 8,273 केंद्रों पर आयोजित की जाएगी। इसमें कुल 55 लाख 25 हजार 308 विद्यार्थी शामिल होंगे, इनमें से 29 लाख 47 हजार 311 हाईस्कूल के और 25 लाख 77 हजार 997 इंटरमीडिएट के परीक्षार्थी हैं। सैन्य विज्ञान विषय की परीक्षा में हाईस्कूल के 29 लाख 38 हजार 663 और 244 केंद्रों पर इंटर के 5,123 परीक्षार्थी शामिल होंगे। हाईस्कूल में वाणिज्य विषय की परीक्षा में 1,619 केंद्रों पर 38,437 परीक्षार्थी शामिल होंग, वहीं इंटरमीडिएट में 24 लाख 29 हजार 278 परीक्षार्थी परीक्षा देंगे। परीक्षा केंद्रों पर सभी कक्ष निरीक्षकों ने उपस्थिति दर्ज करवा दी है।

हाईकोर्ट समाचार

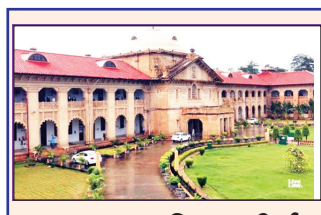

कृष्ण जन्मभूमि-शाही ईदगाह केस में हुई सुनवाई

प्रयागराज। मथुरा की श्री कृष्ण जन्मभूमि और शाही ईदगाह मस्जिद विवाद को लेकर दाखिल अर्जियों पर आज इलाहाबाद हाईकोर्ट में सुनवाई हुई। इलाहाबाद हाईकोर्ट में आज की बहस हुई पूरी हो गई। सूट नंबर एक भगवान श्री कृष्ण विराजमान कटरा केशव देव में शाही ईदगाह मस्जिद ट्रस्ट की ओर से करीब तीन घंटे तक बहस चली। शुक्रवार दोपहर दो बजे से फिर सुनवाई होगी। ईदगाह मस्जिद और यूपी सुन्नी सेंट्रल वक्फ बोर्ड की ओर से बची हुई दलीलें पेश की जाएगी। इसके बाद हिंदू पक्ष को अपनी दलीलें पेश करने का मौका मिलेगा। मुस्लिम पक्ष की ओर से दी गई दलीलों पर हिंदू पक्ष अपना जवाब दाखिल करेगा।

मुस्लिम पक्ष के अधिवक्ता ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए पेश की दलीलें

गुरुवार को पहले सुबह 11:30 बजे से दोपहर 1:00 बजे तक मुस्लिम पक्ष की ओर से अधिवक्ता तसलीम अहमदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से बहस की। लंच के बाद दोपहर 2:00 बजे से 3:30 बजे तक दोबारा मुस्लिम पक्ष ने अपनी दलीलें पेश की। हाईकोर्ट हिंदू पक्ष की ओर से दाखिल अर्जियों की पोषणीयता पर बहस हो रही है। ऑर्डर सात रूल्स 11 के तहत अर्जियों की पोषणीयता को चुनौती दी गई है। मुस्लिम पक्ष की ओर से दलील दी जा रही है कि हिंदू पक्ष की ओर से दाखिल याचिकाएं पोषणीय नहीं है मुस्लिम पक्ष की ओर से 1968 में हुए समझौते को लेकर भी मुस्लिम पक्ष ने दलील पेश की है। कहा है कि इसके तहत केशव देव कटरा की 13.7 एकड़ जमीन शाही ईदगाह मस्जिद को दी गई है। मुस्लिम पक्ष ने प्लेसेस ऑफ वर्शिप एक्ट 1991, लिमिटेशन एक्ट का भी हवाला दिया है।

जस्टिस मयंक कुमार जैन की बेंच कर रही सुनवाई

जस्टिस मयंक कुमार जैन की सिंगल बेंच मामले की सुनवाई कर रही है सुनवाई। आज की सुनवाई में विवादित परिसर का अमीन सर्वे कराए जाने की मांग को लेकर दाखिल अर्जी पर सुनवाई नहीं हो सकी है। इलाहाबाद हाईकोर्ट 18 अर्जियों पर एक साथ सुनवाई कर रहा है। अयोध्या विवाद की तर्ज पर जिला अदालत के बजाय हाईकोर्ट में सीधे तौर पर मामले की सुनवाई हो रही है। ज्यादातर अर्जियों में शाही ईदगाह मस्जिद को हिंदुओं का धार्मिक स्थल बताकर उसे हिंदुओं को सौंपे जाने की मांग की गई है।

कोर्ट कमिश्नर सर्वे पर सुप्रीम कोर्ट ने लगा रखी है रोक

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने शाही ईदगाह का कोर्ट कमिश्नर सर्वे किए जाने का आदेश दिया था। जिसके बाद मुस्लिम पक्ष सुप्रीम कोर्ट गया और आपत्ति जताते हुए स्टे देने की मांग की थी। मुस्लिम पक्ष के प्रार्थना पत्र पर सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कोर्ट कमिश्नर सर्वे पर रोक लगा दी थी। हालांकि सुप्रीम कोर्ट ने इलाहाबाद हाईकोर्ट में अन्य सभी मामलों में सुनवाई बरकरार रखने के लिए कहा था। इसके बाद हाईकोर्ट में सुनवाई चल रही है।

नगर आयुक्त ने किया कुम्भ मेला कार्यों का निरीक्षण

अधिशाषी अभियन्ता, सहायक अभियन्ता तथा अवर अभियन्ता को चेतावनी पत्र जारी करने के निर्देश

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। नगर आयुक्त नगर निगम प्रयागराज चन्द्र मोहन गर्ग द्वारा आज दिनांक 22 फरवरी 2024 को कुम्भ मेला तथा 15वॉ वित्त से प्राप्त धनराशियों के सापेक्ष कराये जाने वाले निर्माण कार्यो का निरीक्षण सलोरी से ईश्वर शरण, पुलिस चैक पी0एन0बी0 तिराहे से पानी टंकी बहादुर की चाय की दुकान होते हुए भुलाई का पुरवा हरिशचन्द्र शुक्ला के मकान तक गीतांजली हार्ड वेयर से मनोज टेण्ट हाउस होते हुए स्वारज नगर बड़ा पार्क होते हुए अपट्रॉन चैराहे तक सड़क चैडीकरण व पटरी नाला नाली का निर्माण किया जा रहा है। जोन 03 में घोष स्वीट हाउस से शुक्ला मार्केट ईश्वर शरण डिग्री कालेज पहलवान बाबा मजार होते हुए सादियाबाद रोड तिराह एम0ई0एस0 क्वाटर तक सड़क सुधार व पटरी नाली निर्माण

कार्य किया जा रहा था । जोन 03 में वार्ड 64 के अन्तर्गत रसूलाबाद घाट रोड से ज्वाला देवी स्कूल रोड मेहदौरी गॉव होते हुए संगम वाटिका पार्क तक रोड पटरी व नाली का सुधार कार्य किया जा रहा था। उक्त कार्यो के निरीक्षण के दौरान नगर आयुक्त द्वारा नाले पर नवनिर्मित स्लैब को तोड़वा कर चेक किया गया जिसमें सरिया की मात्रा मानक के अनुरूप नही पायी गयी साथ इसका कार्य की प्रगति भी काफी धीमी पायी गयी। नगर आयुक्त द्वारा उक्त कार्य पर रोष व्यक्त करते हुए अधिशाषी अभियन्ता, सहायक अभियन्ता तथा अवर अभियन्ता को चेतावनी पत्र जारी करते हुए सम्बन्धित फर्म/ठेकेदार को रू0-एक लाख का जुमार्ना किये जाने के साथ सभी निर्माण सामग्री की सेम्पलिंक कराते हुए जॉच करायी जाए। रिपोर्ट के आधार पर सम्बन्धित फर्म पर नियमानुसार कार्यवाही कराये जाने के निर्देश मुख्य अभियन्ता को दिये गये। इसके साथ ही यह भी निर्देशित किया गया इस प्रकार की पुनरावृत्ति न की जाए। जोन 04 वार्ड 46 में मण्डल अध्यक्ष भारत निषाद जी के गेस्ट हाउस से राधारमण इण्टरकालेज तक एवं विश्वनाथ लाल निगम के आवास से प्रयाग संगम रेलवे स्टेशन तक के निर्माण कार्य को भी नगर आयुक्त द्वारा निरीक्षण किया गया। इस दौरान भी जोड़ाई में जो मसाले का उपयोग/कार्य की गुणवत्ता मानक के अनुरूप होता नही पाया गया। उक्त के सम्बन्ध में अधिषाशी अभियन्ता को निर्देशित किया गया कि निर्माण सामग्री की सेम्पलिंक कराते हुए जॉच करायी जाए। रिपोर्ट के आधार पर सम्बन्धित फर्म पर नियमानुसार कार्यवाही कराये जाने के निर्देश मुख्य अभियन्ता को दिये गये साथ ही मौके पर जो भी निर्माण कार्य हुआ पाया गया उसे ध्वस्त कर पुनः निर्माण कराये जाने के निर्देश दिये गये।

हाईकोर्ट ने शुआट्स से पूछा : किस नियम के तहत एक प्रोफेसर को दिया दो पदों का वेतन

प्रयागराज। शुआट्स प्रोफेसर चंद्रकांत शुक्ला पर दर्ज आय से अधिक संपत्ति के मामले की जांच तेज हो गई है। एसआईटी के विवेचक ने प्रोफेसर की आय को लेकर पूर्व में संस्थान की ओर से दिए गए जवाब को लेकर फिर सवाल-जवाब शुरू कर दिया है। इसके तहत नोटिस भी जारी किया है। इसमें पूछा गया है कि किस नियम के तहत प्राफेसर को दो पदों का वेतन भुगतान किया गया।आरोपी प्रोफेसर शुआट्स के इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग में तैनात हैं। जून 2022 में उनके खिलाफ आय से अधिक संपत्ति के आरोप में एसआईटी लखनऊ थाने में मुकदमा दर्ज हुआ।इस मुकदमे का आधार वह रिपोर्ट बनी जिसे मई 2019 से अप्रैल 2022 तक हुई जांच के बाद तैयार किया गया।रिपोर्ट के मुताबिक, शुआट्स में सरकारी अनुदान वाले पद पर तैनात प्रोफेसर चंद्रकांत ने 13 फरवरी 2008 से लेकर जून 2019 के मध्य कुल 17.90 करोड़ रुपये आय अर्जित की। हालांकि इस अवधि में उनका व्यय 29.84 करोड़ रुपये रहा। इस तरह उन्होंने अपनी आय से 66.67 फीसदी अधिक व्यय किया। इस आधार पर उनके खिलाफ भ्रष्टाचार अधिनियम के तहत केस दर्ज किया गया।

यूपीएससी में माण्डा का बेटा इरजेश सोनकर ने लहराया परचम, देश मे दूसरा रैंक हासिल किया हासिल

माण्डा। यूपीएससी ने सिविल सर्विस एग्जाम 2022 का रिजल्ट बृहस्पतिवार को जारी किया है जिसमे माण्डा का बेटा इरजेश सोनकर ने पूरे देश में दूसरा रैंक प्राप्त कर जिले को गर्वान्वित किया है। वही इरजेश सोनकर की सफलता की खबर फैलते ही गाँव में खुशी की लहर दौड़ गई है. देश में माण्डा का नाम रोशन करने वाले बेटा को जिले के लोग सोशल मीडिया के कई प्लेटफॉर्म पर बधाई दे रहे है। वही कुछ लोग घर तक पहुँच कर शुभकामनाएं दे रहे है। संघ लोक सेवा के कठिन परीक्षा में परचम लहराने वाले इरजेश सोनकर पूर्व माण्डा राजा व प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह किला समीप इनके परिवार रहता है। वही उनके सफलता पर उनके परिवार और उनके जानने वाले बल्कि पूरे प्रयागराज वासियों में हर्ष का माहौल है. उनके घर पर मिठाईया बाँटी जा रही है। उनका पठन-पाठन इलाहाबाद विश्वविद्यालय में शुरू की थी तैयारी:इरजेश सोनकर पिता श्यामसुन्दर और माता व भाई बहन है इरजेश सोनकर ने बताया कि उनकी शिक्षा-दीक्षा माण्डा में 10+2 किया और फिर बाद में इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अध्ययन कर रहे थे.उन्होंने बताया कि उनका पहला लक्ष्य आईएएस की परीक्षा पास करना था।

बच्चों को किडनैप कर आंध्र प्रदेश में बेचा, महिला समेत 4 अरेस्ट

प्रयागराज। बच्चों का किडनैप कर आंध्र प्रदेश में बेचने वाले गिरोह का पुलिस ने खुलासा किया है। गिरोह के 4 सदस्यों को पुलिस ने पकड़ा है। इसमें एक महिला भी है। पूछताछ में उसने बताया कि पिछले कई सालों से इस काम में जुड़ी है। एक से तीन लाख रुपए में सौदा करती थी। बात बनने पर उसे बच्चे देती थी।उसने एक दो साल के बच्चे, तीन महीने पहले सवा महीने की बच्ची को तीन लाख में बेचा था। हालांकि उसका कहना है कि इन दोनों बच्चियों को उसने मां-बाप की रजामंदी से बेचा था। इसके बदले उसको एक लाख रुपए कमीशन मिलता था।

पकड़े गए आरोपी

बुलाकी बाल्मिकी पुत्र प्रेम नारायन निवासी कल्याणी देवी पार्क के पीछे थाना अतरसुइया प्रयागराज। सुरेश यादव पुत्र गजराज यादव निवासी इकौना खुर्द थाना बेलघाट जिला गोरखपुर, हाल पता रेलवे स्टेशन गेट नंबर एक लीडर रोड थाना शाहगंज जनपद प्रयागराज। शालू बाल्मिकी पुत्र प्रेम नारायन निवासी रेलवे स्टेशन गेट नंबर दो के पास लीडर रोड थाना शाहगंज प्रयागराज। गुडिया उर्फ जूली पत्नी कृष्णा वर्मा निवासी मन्दर मोड बमरौली थाना धूमनगंज प्रयागराज।

आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा में बेचे गए मासूम

बच्चों को अगवा कर आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा में बेचा जाता था। जांच कर रही शाहगंज थाने की पुलिस का कहना आरोपी जुली विजयवाड़ा के रहने वाले राजू के संपर्क में थी। बच्चे, बच्चियों का सौदा राजू करता था। इसके बाद रुपए लेकर बच्चों को अपनी सुपुर्दगी में ले लेता था। महिला ने पुलिस को बताया कि आंध्र प्रदेश के रहने वाले जिन संपन्न परिवार में औलाद नहीं होती तो मासूमों को महंगे दामों पर उन्हें बेच दिया जाता।

जसरा बायपास का मेलाधिकारी कुम्भ विजय किरण आनंद करेंगे निरीक्षण तथा किसानों की मांग पर उनसे करेंगे बातचीत

जसरा। कुम्भ मेलाधिकारी विजय किरण आनंद जसरा बाईपास का निरीक्षण तथा प्रभावित किसानों से उनकी मांग मुआवजा व सर्विस लेन पर वार्ता कर गतिरोध समाप्त कराने का प्रयास करेंगे। कुम्भ मेलाधिकारी आगामी 2025 के कुम्भ मेले के मद्देनजर रखते हुए शीघ्र बाईपास का निर्माण शुरू करवाना चाहते हैं। जिससे कुम्भ से पूर्व बाईपास का निर्माण हो सके। एसडीएम बारा दिग्विजय सिंह ने उक्त जानकारी देते हुए बताया कि किसानों के साथ गतिरोध समाप्त हो शीघ्र ही बाईपास का काम शुरू कराया जायेगा । जिससे जसरा बाजार के जाम की समस्या हल हो जाये तथा कुम्भ मेला भी सकुशल सम्पन्न हो सके। जसरा बाईपास में आज काम नहीं लगा तथा किसानों का धरना 48 वें दिन भी जारी रहा।किसानों के आंदोलन के नेता के के मिश्रा ने शुक्रवार की वार्ता में गतिरोध दूर होने की उम्मीद जताई है।

डायल 112 के सिपाही ने अपने ही चालक होमगार्ड को टार्च से पीट पीट कर फोड़ा सिर

अखंड भारत संदेश

मेजा। मेजा थाना क्षेत्र के मेजारोड ओवरब्रिज के पास डायल-112 के सिपाही ने उसी गाड़ी पर तैनात चालक होमगार्ड पर टार्च से हमला कर होमगार्ड का सिर फोड़ कर लहूलुहान कर दिया। जिससे हड़कंप मच गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार बुधवार की शाम पुलिस चौकी मेजारोड के आगे ओवरब्रिज के पास डायल-112 में तैनात सिपाही ने होमगार्ड को पीटकर सिर फोड़ दिया। घायल होमगार्ड ने मेजा कोतवाली में तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है। बताया जाता है कि क्षेत्र के रामनगर कस्बा निवासी होमगार्ड राजकुमार घायल अवस्था में मेजा कोतवाली पहुंचकर पुलिस को तहरीर देकर बताया कि वह पीआरवी 0132 डायल-112 पर तैनात है। बुधवार को वह गाड़ी लेकर टिकरी पेट्रोल पंप पर तेल भरवाने गया था। जहां उसे आने में थोड़ी देर हो जाने के कारण गुस्से में आगबबूला उक्त गाड़ी में दूसरे शिफ्ट का आरोपी सिपाही इमरान खान ने फोन कर मेजारोड फ्लाईओवर के पास बुलाया। वहां पहुंचने पर देर होने का हवाला देते हुए होमगार्ड को भला बुरा कहने लगा जिसको लेकर दोनों में विवाद हो गया। होमगार

पीड़ित होमगार्ड राजकुमार ने थाना मेजा में दिया तहरीर

राजकुमार का आरोप है कि सिपाही ने टार्च से होमगार्ड पर हमला कर सिर फोड़ दिया। जिसमें उसकी मदद वहां रहे उसके करीबी फारुक ने मारपीट में सिपाही की मदद की। होमगार्ड ने मेजा कोतवाली में सिपाही इमरान खान व उसके साथी फारुक के खिलाफ नामजद तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है। इस संबंध में थाना प्रभारी राजेश उपाध्याय से वार्ता की गई तो उन्होंने बताया की मामले की जांच पड़ताल के बाद ही कार्यवाही कि जायेगी।

बाल्मीकि आश्रम में ही लगाई जाए महर्षि की प्रतिमा : डॉ.पाण्डेय

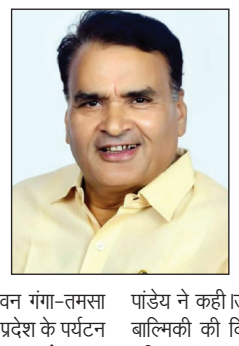

करछना। आदिकवि महर्षि बाल्मीकि की रचना प्रेरणास्थली लकटहा-पनासा में ही महर्षि की आदमकद प्रतिमा स्थापित करना बहुत जरूरी है। जमुनापार जागृति मिशन के प्रबल प्रयासों के चलते कई वर्ष पूर्व अनेकों साक्ष्य और विद्वानों द्वारा शोध के उपरांत करछना क्षेत्र में पावन गंगा-तमसा तट स्थित यह पावन स्थली प्रदेश के पर्यटन मानचित्र पर अंकित हुई। लगभग दो दशक पूर्व प्रयाग विश्वविद्यालय के तत्कालीन संस्कृत विभागाध्यक्ष राष्ट्रपति पदक सम्मानित परम विद्वान पंडित चण्डिका प्रसाद शुक्ल और रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर मध्यप्रदेश के संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रोफेसर रहस बिहारी द्विवेदी द्वारा विस्तृत प्रमाणिक शोध प्रस्तुत करने के उपरांत तत्कालीन मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ मुरली मनोहर जोशी के सार्थक पहल से लकटहा-पनासा में आश्रम की स्थापना हुई। यहां जागृति मिशन द्वारा प्रतिवर्ष बाल्मीकि जयंती के अवसर पर कवि सम्मेलन,बाल्मीकि मेला सहित कई सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी अनवरत आयोजन किया जाता रहा है। बीच में आश्रम स्थल तक सड़क का निर्माण भी हुआ किंतु अभी सम्पूर्ण ढंग से स्थल का विकास नहीं हो पाया। यह बातें रामपुर में जागृति मिशन की एक बैठक के दौरान संयोजक डॉ.भगवत पांडेय ने कही।उन्होंने कहा कि यदि महर्षि बाल्मिकी की विशाल प्रतिमा स्थापित कर यदि आश्रम का अलंकरण कर दिया जाए तो आगामी कुंभ के पूर्व पर्यटकों को भी उक्त स्थल तक पहुंचने और दिव्य दर्शन करने का सौभाग्य मिलेगा। साथ ही साथ क्षेत्र का भी तेजी से विकास होगा। वक्ताओं ने महर्षि आश्रम स्थल में शीघ्र ही विशाल प्रतिमा की स्थापना के लिए प्रदेश सरकार से गुहार लगाई। इस मौके पर तीर्थराज पांडेय,दिनेश तिवारी,राजेंद्र शुक्ला, वीरेंद्र कुशुमाकर, कमला शंकर त्रिपाठी, मनीष तिवारी, अशोक विश्वकर्मा, रामलोचन सांवरिया, श्याम लाल बेगाना, राम भवन द्विवेदी, अतुल तिवारी, पिंटू गुप्ता, संगम लाल यादव, विजय पाल, समेत कई लोग मौजूद रहे।

ट्रेन से कटकर घायल युवक की इलाज हेतु ले जाते समय रास्ते में हुई मौत

मेजा। गुरुवार को मेजा थाना कोतवाली क्षेत्र के ऊंचडीह एनटीपीसी रेलमार्ग पर भसुंदर मझली गांव के समीप दोपहर दो बजे के करीब एनटीपीसी से ऊंचडीह की तरफ जा रही ट्रेन की चपेट में आने से भसुंदर मझली गांव निवासी सचिन यादव (22) पुत्र रमेश यादव बुरी तरह से घायल हो गया था। परिजनों द्वारा जिला अस्पताल ले जाते समय रास्ते में ही दम तोड दिया।मृतक पास ही स्थित मैदान में क्रिकेट खेल कर रेलवे ट्रैक से अपने घर जा रहा था। उसके साथियों ने बताया कि घटना वाली जगह पर रेलवे ट्रैक का मोड़ होने और ट्रेन चालक द्वारा हॉर्न न बनाने से घटना घटी। ट्रेन चालक द्वारा हॉर्न दिया गया होता तो शायद हादसा टल सकता था। मृतक दो भाइयों में दूसरे नंबर का था और अविवाहित था।बेटे की मौत पर मां संगीता देवी सहित परिजनों का रो -रोकर बुरा हाल है।

राज्य स्तरीय कार्यशाला में कृषि समूहों ने लिया प्रशिक्षण

विकसित भारत की संकल्पना में किसानों की भूमिका अहम : कमलेश प्रसाद

अखंड भारत संदेश

मेजा। किसानों की कंपनी नवचारी फार्मर्स प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड एफ.पी.ओ. के प्रबंध निदेशक कमलेश प्रसाद मिश्र ने बताया कि राज्य स्तरीय कार्यशाला में वालमार्ट जैसी अन्तर्राष्ट्रीय क?ई कंपनियों ने किसानों से गुणवत्तापूर्ण उत्पादन एवं उत्पाद तैयार करने के तरीकों पर चर्चा किया। किसानों की आमदनी बढ़ाने एवं स्वतःउत्पाद तैयार करते हुए बाजार तक पहुंच बनाने हेतु किसानों को प्रेरित करने के लिए ही कृषकों के शेयर से बनवायी गई किसान उत्पादक कंपनी के लिए भारत सरकार द्वारा विभिन्न प्रिकार के प्रशिक्षण एवं आर्थिक सहयोग उपलब्ध कराया जा रहा है। साथ ही राष्ट्रीय एवं

अंतरराष्ट्रीय मार्केट में सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए शासन द्वारा उठाया गया कदम समाज में परिवर्तन लायेगा। जहां एक तरफ किसानों की कड़ी मेहनत से देश अनाज उत्पादन में आत्मनिर्भर है। वहीं सरकार द्वारा विकसित भारत की संकल्पना को भी साकार करने में किसानों की अहम भूमिका होने वाली है। लखनऊ में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यशाला अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की संस्था ग्रामीण फाउंडेशन ने आयोजित कराया था। (बी-पैक्स)लैम्प्स लिमिटेड तेंदुआ कलां के अध्यक्ष राहुल तिवारी ने बताया कि नवचारी फार्मर्स प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड के साथ मिलकर समझौता पत्र लिखा गया है कि समिति के कृषक सदस्यों का उत्पादन उत्पाद बनाकर ही बेचना सुनिश्चित होगा। इसके लिए बी-पैक्स एवं नवचारी कंपनी की कार्ययोजना शासन द्वारा स्वीकृत हो गई है। नवचारी फार्मर्स प्रोड्यूसर कंपनी के प्रबंध निदेशक कमलेश प्रसाद मिश्र ने बताया कि उत्तर प्रदेश सरकार एवं भारत सरकार द्वारा वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जा रही है। एवं प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है। जिसका परिणाम शीघ्र ही दिखाई देगा।

आखिर सपा को याद आ ही गये राजा भैया

अखंड भारत संदेश

कुण्डा, प्रतापगढ़। जिन राजा भैया को उन्ही के जिले में पहचानने से इंकार किया था और खुलेआम कहा था की कौन...? उसी के दरवाजे आज उनका दूत राजनीतिक समीकरण तलाशने पहुंचा है। इसे समय का तकाजा कहें या राजनीति की मजबूरी की, उन्ही के दरवाजे पर चर्चा करने अपने दूत को भेजना पड़ा जिनको पहचानने तक से इंकार कर दिया था।

लखनऊ में नरेश उत्तम की राजा भैया से मुलाक़ात का मायने निकालना शुरु हो गया है और अब इस मुलाक़ात के मायने भी निकाला जाना तय है। राजनीति के जानकारों का कहना है कि राज्य सभा चुनाव के चलते

सपा के प्रदेश अध्यक्ष की राजा भैया से हुई मुलाक़ात

रघुराज प्रताप सिंह राजा भइया।

समाजवादी पार्टी ने राजा भैया से सम्पर्क साधा है। वहीं सोशल मीडिआ समेत संचार के अन्य साधनों पर लोग एक नये गठबंधन की सुबुगाहट के रूप में देख रहे हैं। अब बात ये भी समझने वाली है कि राजा भैया और अखिलेश यादव के सम्बन्ध पहले से भी बेहतरीन रहे थे और उनकी सरकार में राजा भैया 2012 से 2017 तक कैबिनेट मंत्री रहे और दोनों नेताओं की कमेस्ट्री भी ठीक ठाक थी लेकिन समय ने ऐसा करवट बदला कि दोनों नेता लम्बे अरसे तक एक साथ नजर नहीं आये और मौका मिलने पर सपा सुप्रीमो बयान देते रहे। सपा के प्रदेश अध्यक्ष के साथ राजा भैया की इस मुलाक़ात को शिष्टाचार भेंट बताया जा रहा है लेकिन चुनाव के पूर्व इस तरह की मुलाक़ात का कोई न कोई मायने तो अवश्य रहता है। वैसे भी लम्बे समय से समाजवादी पार्टी और राजा भैया के बीच लम्बी खाई बनी रही और दोनो नेता किसी भी तरह से सीधे सम्पर्क में नही रहे। यहाँ तक कि चुनाव यात्रा पर राजा भैया के गृह जनपद प्रतापगढ़ गये अखिलेश यादव ने तो राजा भैया को न जानने का बयान देकर सम्बन्धो की व्याख्या करते हुए कुंडा में कुंडी लगाने का बयान तक दे डाला था। हालांकि राजा भैया की पार्टी जनसत्ता दल और खुद राजा भैया की तरफ से ऐसा कोई संकेत नही मिला जिसका कोई मायने निकाला जा सकता है लेकिन चुनाव के एन पहले प्रदेश के चर्चित शख्सियत से किसी पार्टी का प्रदेश मुखिया मिलेगा तो बातें तो होंगी ही। वैसे इतना तय है की अगर इस तरह का कोई समीकरण बनता है तो कई सीटों पर भाजपा के लिए सिरदर्दी बनना तय है।

मंत्री के वाहन से चुटहिल छात्रा से कांग्रेस प्रतिनिधि मण्डल ने की मुलाकात, सौंपी मदद

लालगंज, प्रतापगढ़। केन्द्रीय मंत्री स्मृति ईरानी की कार से चुटहिल हुई छात्रा का कुशलछेम जानने गुरूवार को प्रदेश कांग्रेस कमेटी का प्रतिनिधि मण्डल राजापुर के चकिया गांव पहुंचा। प्रतिनिधि मण्डल ने चुटहिल छात्रा का कुशलछेम लेते हुए उसके स्वास्थ्य लाभ की कामना की। वहीं प्रतिनिधिमण्डल के दौरे के पहले राज्यसभा में विपक्ष के उपनेता प्रमोद तिवारी तथा कांग्रेस विधानमण्डल दल की नेता आराधना मिश्रा मोना ने भी घायल छात्रा से फोनिक वार्ता कर उसका कुशलछेम जाना। प्रदेश महासचिव विवेकानंद पाठक के नेतृत्व में पहुंचे कांग्रेसियों के प्रतिनिधि मण्डल ने छात्रा के इलाज एवं उसकी क्षतिग्रस्त साइकिल के मरम्मत कराये जाने को लेकर पार्टी की ओर से आर्थिक मदद भी सौंपा।

शिवानी मातनहेलिया ने भाजपा के टिकट के लिये किया आवेदन

अखंड भारत संदेश

जिलाध्यक्ष को आवेदन पत्र देतीं शिवानी मातनहेलिया।

प्रतापगढ़। जिले की प्रमुख संगीतज्ञ तथा यश भारती पुरस्कार विजेता डॉ. शिवानी मातनहेलिया ने आगामी लोकसभा चुनाव में प्रतापगढ़ की लोकसभा सीट से भारतीय जनता पार्टी की अधिकृत प्रत्याशी के रूप में अपने को प्रस्तुत करते हुए पार्टी के जिलाध्यक्ष आशीष श्रीवास्तव के समक्ष अपना आवेदन प्रस्तुत किया। इस अवसर पर भाजपा प्रतापगढ़ के महामंत्री, राजेश सिंह, जिला मंत्री रामजी मिश्रा, साधू दूबे व सतीश चैरसिया एवं अनेक वरिष्ठ पदाधिकारियों ने डॉ. शिवानी मातनहेलिया को बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। इस मौके पर डॉ. शिवानी के साथ जगदीश मातनहेलिया मेमोरियल ट्रस्ट के युवा-मंच के संयोजक नीरज अग्रहरि, विवेक तिवारी, अंकित तिवारी, अंबुज तिवारी, नीतीश तिवारी व युवा-मंच की टीम के कई सदस्यगण उपस्थित रहे।

स्मार्ट फोन का उपयोग विद्यार्थी आनलाइन मतदाता बनने में करें: एसडीएम

डिग्री कालेज कालाकांकर में विद्यार्थियों को वितरित किया गया स्मार्ट फोन

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। विकास क्षेत्र कालाकांकर के मदन मोहन मालवीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कालाकांकर में गुरुवार को सत्र 2022-23 स्नातक उत्तीर्ण विभिन्न कक्षाओ की उपस्थिति मे स्मार्ट फोन वितरण समारोह का आयोजन किया गया।

इसमें मुख्य अतिथि के रूप में कुण्डा उपजिलाधिकारी भरत राम ने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि विद्यार्थी लोग सर्वप्रथम प्रजा तंत्र को मजबूत करने हेतु ऑनलाइन पंजीकरण हेतु स्मार्टफोन का उपयोग करे जिसकी विस्तृत्व रूप से बताया। कालेज प्राचार्य प्रो शिवम श्रीवास्तव ने

टेबलेट स्मार्टफोन वितरण समारोह में मौजूद छात्राएं व अतिथिगण।

इसके विभिन्न शैक्षिक उपयोगो के बारे मे अवगत कराया मुख्यतिथि के रूप मे आये कुंडा उपजिलाधिकारी भरत राम को राजभवन मैनेजर डा घनश्याम यादव ने स्वागत एव धन्यवाद दिया। वितरण कार्यक्रम हेतु गणित प्रासकीय समिति मे प्रो सूर्यभान सिंह, प्रो प्रदीप कुमार सिंह, प्रो रामकरन, प्रो विनीता सिंह, सर्वेश सिंह व नोडल अधिकारी डा डालचंद आंनद ने वितरण कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग किया। स्मार्टफोन के वितरण कार्यक्रम में महाविद्यालय के सभी शिक्षक की सक्रिय भूमिका रही।

महावीर प्रसाद आर्य स्मृति दिवस समारोह का हुआ आयोजन

एलआईसी ने आयोजित किया कार्यक्रम

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। भारतीय जीवन बीमा निगम प्रतापगढ़ की यूनिट 31102 के विकास अधिकारी राजीव कुमार आर्य के संयोजन में महान समाजसेवी महावीर प्रसाद आर्य स्मृति दिवस समारोह होटल शशांक में आयोजित हुआ। सर्वप्रथम स्मृति शेष महावीर प्रसाद आर्य के चित्र के समक्ष दीपप्रज्वलन एवं माल्यार्पण हुआ।

तत्पश्चात मुख्य अतिथि नीरज बरनवाल अपर जिला जज एवं सचिव विधिक सेवा प्राधिकरण प्रतापगढ़, मुख्य प्रबंधक जीवन बीमा निगम दीपक चावला तथा अम्मा साहेब ट्रस्ट के ट्रस्टी आनंद

मुख्य अतिथि को सम्मानित करते पदाधिकारी।

मोहन ओझा को महावीर प्रसाद आर्य स्मृति ट्रॉफी सम्मान से अलंकृत किया गया। तत्पश्चात उत्कृष्ट उपलब्धि प्राप्त करने वाले अभिकर्ताओं में विनय कुमार सिंह, नन्द किशोर प्रजापति, मीला शुक्ला, श्यामलाल, राम मनोहर प्रजापति, पुष्पेंद्र शुक्ला, शुभम जायसवाल, रोली, किरन देवी, बाबूलाल यादव, ओमप्रकाश कोरी तथा राकेश कुमार का शाल, स्मृति चिन्ह तथा नगद देकर सम्मानित किया गया। सभी पुरस्कार पाने वाले लोगों को सम्मानित करते हुए मुख्य अतिथि अपर जिला जज एवं सचिव विधिक सेवा प्राधिकरण प्रतापगढ़ नीरज बरनवाल ने कहा कि जीवन बहुत महत्वपूर्ण है। भारतीय जीवन बीमा निगम जीवन के साथ तथा जीवन के बाद भी व्यक्ति समाज तथा देश को समृद्ध करता है। इसकी योजनाओं को सफल बनाएं एवं उन्होंने राजीव कुमार आर्य के कार्यों की प्रशंसा की। इतिहास बनाने को कहा। अतिविशिष्ट अतिथि मुख्य प्रबंधक एल आई सी दीपक चावला ने कहा कि निगम में सफलता के लिए बोलने में कला होना जरूरी है। अपने ग्राहकों को संतुष्ट करें और कीर्तिमान बनाएं। यह समाज सेवा भी है। समारोह की अध्यक्षता करते हुए पूर्व बाल न्यायाधीश डॉक्टर दयाराम मौर्य 'रत्न' ने कहा कि कर्मवीर बने। ईमानदारी से कार्य करें। आयोजक विकास अधिकारी राजीव कुमार आर्य ने स्मृति शेष महावीर प्रसाद आर्य के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आप सबके लिए मेरा जीवन समर्पित है। निगम में मेहनत करके अपने जीवन को समृद्ध करें। इस अवसर पर विश्वनाथ त्रिपाठी सदस्य विधिक सेवा प्राधिकरण, रोशनलाल उमरवैश्य निदेशक एलायंस क्लब इंटरनेशनल, राकेश कनौजिया, विनोद पांडे, बीना श्रीवास्तव, केतकी सिंह, दिनेश कुमार, ओमप्रकाश तिवारी उपस्थित रहे। संचालन विकास अधिकारी राजीव कुमार आर्य ने किया।

सांसद ने इंटर सिटी ट्रेन को नया स्टापेज होने पर हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। लखनऊ प्रयागराज रेलवे ट्रैक पर गुरुवार को प्रयागराज संगम से लखनऊ को जाने वाली अप प्रयागराज लखनऊ इंटर सिटी एक्सप्रेस ट्रेन 14209 अप व 14210 डाउन का गढ़ी मानिकपुर स्टेशन पर शाम को लगभग 4 बजकर 55 मिनट पर पहुंची, जहां भाजपा कौशाम्बी सांसद बिनोद सोनकर ने अपने मानिकपुर नगर पंचायत चेयरमैन प्रेमलता व प्रतिनिधि डिम्पू जायसवाल व समस्त समर्थकों कार्यकर्ताओ के साथ उक्त ट्रेन का गढ़ी मानिकपुर में नया स्टापेज होने पर हरी झंडी दिखाकर लखनऊ के लिए रवाना किया। बता दें कि सांसद से मानिकपुर

इंटरसिटी टेडुन को हरी झण्डी दिखाकर रवाना करते सांसद विनोद सोनकर

नगर वासियो की काफी पुरानी चली आ रही थी। बता दे कि भाजपा कौशाम्बी सांसद बिनोद सोनकर ने गढ़ी मानिकपुर रूट पर पड़ने वाले लालगोपालगज स्टेशन व मानिकपुर मे गंगा गोमती का स्टापेज भी कराया सांसद के इस प्रयास की लोग सराहना करते दिखाई दिये। इस दौरान मानिकपुर स्टेशन मास्टर जीतेन्द्र गुप्ता, भाजपा कौशाम्बी मीडिया प्रभारी भूपेंद्र पांडेय, सुरेश त्रिपाठी, सतीश चैरसिया, मो0 हाशिमी आदि लोग मौजूद रहे।

स्वच्छता एवं जल जीवन को लेकर जागरूकता अभियान, रवाना हुए वाहन

सार्वजनिक शिक्षोन्यन संस्थान द्वारा रामपुर संग्रामगढ़ में हुआ आयोजन

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। जिला पेयजल एवं स्वच्छता समिति जल जीवन मिशन के तहत गुरूवार को ब्लाक ओपनिंग का कार्यक्रम सोल्लास हुआ। रामपुर संग्रामगढ़ ब्लाक परिसर में हर घर जल योजनान्तर्गत स्वच्छता के कार्यक्रम को लेकर सहायक विकास अधिकारी प्रवीण कुमार ने गांव के लिए समारोहपूर्वक हरी झंडी दिखाकर जागरूकता वाहनों को रवाना किया। जागरूकता के तहत गांव में स्वच्छ परिवेश तथा जल संचयन को लेकर लोगों से सहयोग का आहवान किया गया। राज्य पेयजल एवं स्वच्छता मिशन के तहत पेयजल योजना में मरम्मत के तहत रोजगार सृजन की भी अधिकारियों ने जानकारियां प्रदान की। सार्वजनिक शिक्षोन्यन संस्थान लखनऊ के द्वारा स्वयंसेवको ने स्वच्छता मिशन में जागरूकता के साथ लोगों के अहम सहयोग के टिप्स दिये। जागरूकता कार्यक्रम में स्वच्छ भारत मिशन के तहत देश को स्वच्छ परिवेश में शौच मुक्त बनाये जाने का संकल्प लिया गया। इस मौके पर प्रधान धीरेन्द्र प्रताप सिंह, प्रमोद पटेल, संस्था के डीपीसी प्रवेश यादव, मनोज कुमार गौतम, प्रिंस सोनी व प्रशिक्षक अनुराग शुक्ला आदि रहे।

विदाई में पेन बैंक ने बोर्ड परीक्षार्थियों को बाटी स्टेशनरी

बच्चा बैंक फ्रेंड्स ग्रुप के फ्री स्टडी सेंटर पर हुआ आयोजन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जरुरतमंद छात्रों के जीवन में शिक्षा की लौ जगा रहे बच्चा बैंक फ्रेंड्स ग्रुप, बीबीएफजी के तत्वाधान में बोर्ड परीक्षार्थियों का विदाई समारोह बुधवार को फ्री स्टडी सेंटर भंगवा में संपन्न हुआ। जिसमें पेन बैंक की ओर से परीक्षार्थियों को निशुल्क स्टेशनरी का वितरण किया गया।

इन छात्रों की शिक्षा में कोई दिक्कत न हो। इसके लिए ग्रुप और उसके सहयोगी सहयोग कर रहे हैं। विदाई समारोह की शुरुआत सरस्वती वंदना से हुई। सेंटर के प्रिंसिपल शनि सरोज ने कहा कि

विदाई समारोह में मौजूद बोर्ड के परीक्षार्थीगण।

बोर्ड परीक्षा शुरू हो रही है। सभी छात्र मन लगाकर परीक्षा दें। ग्रुप के फाउंडर टीचर राजेश कुमार ने कहा कि आप सभी छात्रों से काफ़ी उम्मीदें हैं। गत दो वर्षों का रिजल्ट शत प्रतिशत रहा है। कार्यक्रम का संचालन टीचर दामिनी ने किया। नैंसी, साहिल, साहिबा, हिमांशु, शुभम, गोलू, नितेश, अंजू, रागिनी, निखिल समेत काफी संख्या में छात्र मौजूद रहे।

भागवत कथा के पूर्व श्रद्धालुओं ने निकाली कलश शोभा यात्रा

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। श्रीमदभागवत कथा के पूर्व श्रद्धालुओं ने गाजे बाजे के साथ शोभा यात्रा निकाली। शोभा यात्रा चमरूपुर शुक्लान से होते हुए शमसेरगंज की काली माता मंदिर व बाबा दूधनाथ धाम पहुंची। यहां पूजन अर्चन के बाद श्रद्धालु कथास्थल चमरूपुर शुक्लान वापस पहुंचे। कथा के पहले दिन कथाव्यास आचार्य काली प्रसाद मिश्र ने कहा कि जीव ईश्वर का स्वरूप होते हुए भी ईश्वर को पहचानने का प्रयत्न नहीं करता। इसके कारण उसके जीवन में दुख व कष्ट आते हैं। उन्होने कहा कि भागवत कथा सुनने मात्र से ही मानव का जीवन धन्य हो जाता है। मुख्य यजमान राधेकृष्ण मिश्र व निर्मला ने व्यासपीठ की आरती उतारी। इस मौके पर विनय दुबे, रोहित मिश्र, पवन शुक्ल, प्रमोद मिश्र, संतोष मिश्र, अजय मिश्र आदि रहे।

छात्र की मौत के मामले में युवती समेत तीन पर हत्या का मुकदमा

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। ननिहाल में रहकर पढ़ाई कर रहे इण्टर के छात्र की मौत को लेकर तीन के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज किया गया है। लालगंज कोतवाली के अनेहरा गांव का अंकित प्रजापति अपने ननिहाल लीलापुर के मुल्तानीपुर में रहकर पढ़ाई करता था। बोर्ड परीक्षा से तीन दिन पहले उन्नींस फरवरी को वह संदिग्ध परिस्थिति में गायब हो गया। घटना के दो दिन बाद बुधवार को सड़वा दुबान में छात्र का शव फंदे से लटकता मिला। घटना की जानकारी पर पुलिस ने शव को पीएम के लिए जिला मुख्यालय भेज दिया। मामले में मृतक अंकित के मामा बाबूलाल प्रजापति ने मुल्तानीपुर निवासी लाल बाबू प्रजापति पुत्र देवी प्रसाद, राजकमल प्रजापति पुत्र राज नारायण व संध्या प्रजापति पुत्री लाल बाबू के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज कराया है। लीलापुर एसओ नीरज यादव ने बताया कि मुकदमा दर्ज कर एक आरोपी से पूछताछ की जा रही है। शीघ्र ही घटना का खुलासा किया जाएगा।

यूपी बोर्ड हाईस्कूल, इंटर की परीक्षाएं शुरु

हाईस्कूल हिन्दी में 4571 व इंटर में 2191 परीक्षार्थी अनुपस्थित

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। आज माध्यमिक शिक्षा परिषद् उत्तर प्रदेश बोर्ड परीक्षा-2024 की हाईस्कूल व इंटर की परीक्षाएं शुरु हो गई। पहली बेला में हाईस्कूल में कुल 56847 थे। जिसमें उपस्थित विद्यार्थियों की संख्या 52276 रही। 4571 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे। अनुपस्थित छात्र 3002 व छात्राएं 1569 रहीं।

इसी बेला में इंटरमीडिएट (सैन्य विज्ञान) में कुल नामांकित विद्यार्थी 15 थे जिसमें से 10 परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी। द्वितीय बेला में हाईस्कूल (वाणिज्य) में कुल नामांकित विद्यार्थियों की संख्या 87 थी जिसमें कुल उपस्थित विद्यार्थियों की संख्या 67 थी।

इस दौरान अनुपस्थित छात्रों की संख्या 04 व अनुपस्थित छात्राओं की संख्या 16 रही। द्वितीय बेला में इंटरमीडिएट (हिन्दी) में 47080 परीक्षार्थी पंजीकृत थे जिसमें 43947 परीक्षार्थी उपस्थित रहे। 2191 परीक्षार्थी अनुपस्थित हो गये। ज्यादातर परीक्षा केन्द्रों पर केन्द्र व्यवस्थापक के अलावा अतिरिक्त केन्द्र व्यवस्थापक तैनात किये गये थे। शिक्षा विभाग ने सचल दल भी बनाए थे जो परीक्षा केन्द्रों का निरीक्षण कर रहे थे। गेट पर तलाशी लेने के बाद परीक्षार्थियों को अंदर जाने दिया गया।

बोर्ड परीक्षा में प्रथम व दूसरी पाली मे 127 परीक्षार्थी अनुपस्थित

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। यूपी बोर्ड द्वारा संचालित हाई स्कूल व इंटर परीक्षा के प्रथम दिन हाई स्कूल मे 86 व इंटर की परीक्षा मे 41 परीक्षार्थी अनुपस्थित पाये गये। सुरक्षा व्यवस्था के बीच दोनो पाली की परीक्षा नियमानुसार शुरु हुई। विकास क्षेत्र कालाकांकर के वीरेंद्र सिंह स्मारक इंटर मीडिएट कालेज प्रदीप मे यूपी बोर्ड परीक्षा मे पहले दिन हाई स्कूल की प्रथम पाली हिंदी के प्रश्न पत्र मे 516 छात्रों मे 42 छात्र व दूसरीपाली इंटर मे हिंदी सामान्य मे 359 छात्रों मे 25 छात्र अनुपस्थित रहे केंद्र। इस दौरान यवस्थापक सुरेश कुमार सिंह, परीक्षा केंद्र पर स्टेटिक मजिस्ट्रेट व वाय केंद्र व्यवस्थापक मौजूद रहे।

जनता इंटर कालेज आलापुर मे हाई स्कूल व इंटर की परीक्षा मे प्रथम पाली हाई स्कूल मे 329 छात्रों मे 20 परीक्षार्थी व इंटर मे 199 मे एक परीक्षार्थी अनुपस्थिति रहे। स्टेटिक मजिस्ट्रेट प्रेम चंद्र व वाहय केंद्र व्यवस्थापक अजय कुमार त्रिपाठी केंद्र व्यवस्थापक अरुण कुमार सिंह बीच बीच मे कमरों का निरीक्षण व सीसीटीवी स्क्रीन की जाँच करते रहे। हनुमत इंटर कालेज कालाकांकर मे हाई स्कूल मे418 परीक्षार्थियों मे 24 परीक्षार्थी व इंटर परीक्षा मे 235 मे 15 परीक्षार्थी अनुपस्थिति रहे केंद्र व्यवस्थापक कैप्टन शमशाद अहमद व स्टेटिक माजिस्ट्रेट व वाय केंद्र व्यवस्थापक सीसीटीवी स्क्रीन पर अपनी निगाहे जमा रखी थी सेक्टर मजिस्ट्रेट खंड विकास अधिकारी कालाकांकर प्रवीन कुमार श्रीवास्तव परीक्षा केंद्रो का भ्रमण करते रहे।

ई-रिक्शा व बाइक की आमने सामने टक्कर में दो घायल

लालगंज, प्रतापगढ़। लालगंज कोतवाली के जसमेढ़ा निवासी बासठ वर्षीय मेवा लाल यादव बुधवार की शाम ईरिक्शा बुक कर अपने घर जा रहा था। इस बीच रिश्तेदारी से लौट रहे महेशगंज थाना क्षेत्र के सूबेदार का पुरवा निवासी राजेन्द्र यादव की बाइक से ईरिक्शा से जा भिड़ी। हादसे में दोनों राहगीर गंभीर रूप से घायल हो गये। उन्हें गंभीरावस्था में जिला अस्पताल रेफर किया गया है।

ममता बनर्जी का पुतला फूंकते एबीवीपी कार्यकर्ता।

एबीवीपी ने ममता बनर्जी की निकाली शव यात्रा

पुतला फूंककर जताया विरोध

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। संदेशखाली में हाल की घटनाओं के आलोक में एबीवीपी प्रतापगढ़ ने एक शव यात्रा निकालकर चैक घंटाघर पर पुतला फूंका। इस मौके पर प्रांत सह मंत्री सुधांशु रंजन मिश्रा ने कहा कि महिलाओं के खिलाफ हिंसा ने संदेशखाली को बुरी और कट्टरपंथी ताकतों से त्रस्त कर दिया है, जो कथित तौर पर तृणमूल कांग्रेस द्वारा समर्थित हैं, आम लोगों का शोषण कर रही हैं और महिलाओं की गरिमा को परेशान कर रही हैं।

इस मौके पर प्रांत इंटर कॉलेज संयोजक ने कहा राशन वितरण भ्रष्टाचार की जांच के दौरान ईडी अधिकारियों और मीडिया प्रतिनिधियों द्वारा सामना किए गए प्रतिरोध से जुड़ी हालिया घटना ने पश्चिम बंगाल और भारत के लोगों के सामने दबी हुई सच्चाई को उजागर कर दिया है। इस मौके पर जिला सह संयोजक बालाजी ओझा ने कहा संदेशखाली और आसपास के क्षेत्रों को व्यावहारिक रूप से निष्क्रिय और अलग-थलग करने की राज्य सरकार और स्वयं ममता बनर्जी की कार्रवाइयों ने केवल अशांति को और बढ़ावा दिया है। स्थानीय पुलिस द्वारा हायर सेकेंडरी की एक परीक्षार्थी लड़की को गलत तरीके से हिरासत में लेना और धारा 144 के तहत परिवहन बाधाओं और निषेधात्मक आदेशों के कारण छात्रों को होने वाली कठिनाइयों ने स्थिति को और खराब कर दिया है। इस मौके पर जिला सह संयोजक कार्तिकेय पांडेय, शुभम मिश्रा, सुमित गुप्ता, अनुज मिश्रा, प्रियाशू, अंजनी दूबे, अभिनव, स्वतंत्र, अनिकेत तिवारी, युवराज आदि लोग मौजूद रहे।

पूजा स्थल पर अवैध अतिक्रमण के विरोध में उतरे लोग, प्रर्दशन

मामला तहसील क्षेत्र के पल्हना का, लेखपाल पर लगा धार्मिक भावनाओं पर ठेस पहुंचाने का आरोप हिंदू जागरण मंच के जिलाध्यक्ष अवधेश नारायण शुक्ला की अगवाई में हुआ कार्यक्रम

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। लेखपाल पर धार्मिक आस्था पर चोट पहुंचाने तथा मंदिर पर लोगों द्वारा अवैध अतिक्रमण करवाए जाने के आरोप को लेकर गुरुवार के दिन सैकड़ो की संख्या में पहुंचे हिंदू जागरण मंच के कार्यकताओं ने चायल तहसील में प्रदर्शन किया। इस मौके पर कार्यकताओं ने लेखपाल के खिलाफ नारे लगाते हुए उसे निलंबित कराए जाने की मांग की। गांव के लोगों ने आरोप लगाया कि लेखपाल ने ब्रह्मदेव स्थान पर जूता पहनकर चढ़ने का प्रयास किया।

गांव के लोगों के विरोध पर लेखपाल ने भगवान और गांव के लोगों को भला बुरा कहा, जिसके चलते गांव के लोगों में भारी आक्रोश था। इसी के विरोध में पहुंचे गांव के सैकड़ो लोगों ने उप जिलाधिकारी चायल को ज्ञापन देकर कार्रवाई की मांग किया। इस मौके पर लोगों ने न्याय की मांग करते हुए कहा कि चायल तहसील के थाना संदीपन घाट के ग्राम सभा पल्हाना में प्राचीन पीपल के वृक्ष के नीचे ब्रह्मदेव स्थान है जिसे गांव के लोग सैकड़ो साल से पूजते आ रहे हैं जो हमारे आस्था का प्रतीक है। इस ब्रह्मदेव स्थल गांव के ही धरमपाल, गुड्डू, मिथलेश,धर्मेन्द्र ने बरमबाबा के स्थान के ऊपर से सोरेपुस्ती से दरवाजा लगाकर रातों रात रास्ता कायम करने का प्रयास किया गया था। जिसमें वर्तमान चौकी इंचार्ज ने दरवाजे में ताला लगवाकर चाभी चौकी में रखवा लिया गया था और निरोधात्मक कार्यवाही किया था उपजिलाधिकारी चायल द्वारा 2 जून 2022 को जाँच कराई गई, जिसकी जाँच रिपोर्ट की प्रति संलग्न है। तब से दरवाजा बंद तथा ताला लगा हुआ था। दिनांक 20/11/23 को शाम को उपरोक्त लोगों द्वारा हल्का लेखपाल की मिली भगत से ताला तोड़ कर दरवाजा खोल लिया जब उक्त प्रकरण में गांव के लोगों ने हल्का लेखपाल से इस अन्याय के विषय में बताया तो गांव के दर्जनों लोगों के सामने हल्का लेखपाल ने कहा कि जूता पहन के और पैर रखने से तुम्हारे ब्रह्म देव दबे नहीं जा रहे हैं जब उनको परेशानी होगी तो तुम्हारे भगवान आकर मुकदमा दाखिल करेंगे हम कार्रवाई कर देंगे लेखपाल के इस कथन से गांव के लोगों की भावनाएं आहत हुई है जिम्मेदार सरकारी कर्मचारी कैसे लोगों की भावनाओं और धार्मिक आस्था को ठेस पहुंचा सकता है। इस मौके पर हिंदू जागरण मंच के जिला अध्यक्ष अवधेश नारायण शुक्ला ने कहा कि लेखपाल के द्वारा किया गया कृत्य घोर निंदनीय है और माफ करने लायक नहीं है। इसकी तत्काल जांच उच्चाधिकारी द्वारा कराकर दोषी लेखपाल पर कार्रवाई करते हुए ब्रह्मदेव स्थल पर अतिक्रमण को हटाए जाने की कार्यवाही करे । आज ज्ञापन के माध्यम से संगठन आपको सूचना दे रहा है मामले की गंभीरता को देखते हुए 7 दिन के अंदर में कार्रवाई करने की कृपा करें अन्यथा मजबूरन संगठन को जिला मुख्यालय में धरना एवम् प्रदर्शन के लिए बाध्य होना पड़ेगा। जिसकी पूरी जिम्मेदारी तहसील प्रशासन की होगी। इस मौके पर प्रमुख रूप से शिवम् पाण्डेय, दीपक मौर्य, जेपी सरोज, देवमणि मिश्रा, रंजीत कुमार, प्रदीप कुमार, संदीप साहू, महेंद्र, रामबाबू मिश्रा, आशीष वर्मा, घनश्याम सोनी, जितेंद्र सोनकर, लवकुश पाल, रजत कुमार, अनूप शर्मा सहित सैकड़ो की संख्या में लोग मौजूद रहे।

न्यूज झरोखा

एनएचएआई के हाइवे में नाली निर्माण में महीनों से पडा अधूरें कार्य

जहाँ जगह जगह छूटे गडढे में आये दिन कोई ना कोई गिर रहा है बीती रात गिरने से लहूलुहान हुए परिवार के लोग

कोखराज कौशाम्बी। थाना कोखराज के अन्तर्गत मलाक भायल में आधे अधूरे नाला निर्माण को छोड़कर ठेकेदार भाग गया है जिससे यह अधूरा नाल जानलेवा बन गया है बीती रात महगांव क्षेत्र का स्कूटी सवार परिवार छोटे छोटे दो बच्चों के साथ करेटी ग्राम पंचायत में निमंत्रण में आमन्त्रित था मलाक भायल के हाइवे पर महीनों से छूटे अधूरे पडे नाली निर्माण में यह परिवार गिर गया जिससे परिवार के लोग चोटहिल हो गए हैं ठेकेदारों की लापरवाही के चलते कहीं बुलेरो तो कहीं मोटर साइकिल सवार अधूरे निर्मित नाले में आये दिन कोई ना कोई गिरकर चोटिल हो रहा है बीती रात महगांव क्षेत्र का परिवार अपने दो छोटे बच्चों के साथ गडढे में रात्रि में लगभग 8 बजे गिर गया जिससे पूरे परिवार के लोगों को चोट आई है पास में मौजूद ग्रामीणों ने दौड़ कर उन्हें उठाया परिवार व बच्चों को अन्दरूनी चोटे आयी है बड़े हादसे से परिवार के लोग बाल बाल बच गए हाइवे के कार्यों से इलाके के ग्रामीणों में रोष है व इन गडढो को तत्काल बनाने के लिए जनपद के अधिकारियों का ध्यान देने की अपील की है

दौलत लेने के बाद वृद्ध पिता को बेटे-बहू ने मार पीट कर घर से भगाया

कौशाम्बी। चरवा थाना क्षेत्र के रतगहां गांव का राम कुमार पुत्र स्व बाबा दीन जो वृद्ध व असहाय व्यक्ति हैं। पीड़ित के चार लड़के राम चन्द्र, हरीश चंद्र,नरेश कुमार व जयचंद है बेटा जय चन्द्र व बहू सुमन देवी एक माह पूर्व पीड़ित वृद्ध को बहला फुसलाकर खाते से डेढ़ लाख रुपए निकाल लिए। तथा नरेश कुमार व जय चन्द्र व बहू सुमन देवी एकजुट होकर पीड़ित वृद्ध का खेत भी हड़प लिए। पीड़ित वृद्ध न्याय के लिए गांव के सम्मानित लोगों से अपनी पीड़ा बताने लगा। पीड़ित वृद्ध का बेटा जय चन्द्र व बहू सुमन देवी किसी की बात मानने को तैयार नहीं हुए। बेटा जय चन्द्र व बहू सुमन देवी ने गाली-गलौज देते हुए लाल घूंसा डण्डा से मार पीट कर पीड़ित वृद्ध को घर से भगा दिया जिससे वृद्ध के शरीर व बाईं आंख में गम्भीर चोटें आई हैं। पीड़ित वृद्ध ने चरवा थाना पहुंच कर बेटा व बहू के विरुद्ध नामजद लिखित शिकायती प्रार्थना पत्र दिया। चरवा पुलिस ने बेटा व बहू के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कर पीड़ित वृद्ध को इलाज हेतु प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र चरवा भेजा है।

जन शिक्षण संस्थान द्वारा पीएम विश्वकर्मा प्रशिक्षण कार्यक्रम में तृतीय बैच में चौथे दिन का कार्यक्रम संपन्न

कौशाम्बी। जन शिक्षण संस्थान कौशांबी कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय भारत सरकार द्वारा पीएम विश्वकर्मा प्रशिक्षण तृतीय बैच में चौथे दिन का प्रशिक्षण भी 22 फरवरी को संपन्न किया गया इस प्रशिक्षण में उपायुक्त जिला उद्योग केंद्र के के अमर ने पीएम विश्वकर्मा योजना के बारे में विस्तार पूर्वक चर्चा की और जिला उद्योग केंद्र के सहायक कार्यक्रम अधिकारी संदीप कुमार ने विभाग की योजनाओं के बारे में बताया इसी क्रम में जिला लीड बैंक अधिकारी जितेंद्र कुमार ने बैंक से संबंधित लोन के बारे मे खाता खोलने के बारे में एफ डी के बारे में तथा ब्याज से संबंधित सारी जानकारी दी साथ ही साथ आज अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का भी कार्यक्रम किया गया। जन शिक्षण संस्थान के निदेशक राजकुमार पांडे ने अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर प्रकाश डालते हुए विस्तृत चर्चा किया।संस्थान के सहायक अधिकारी संजय सिंह सहायक कार्यक्रम अधिकारी विजेंद्र मिश्रा श्रद्धा तिवारी राजू शुक्ला प्रशिक्षिका रेखा देवी सुनीता देवी रूपा कुमारी आदि मौजूद रहे।

गृह प्रवेश कार्यक्रम मे शामिल हुए पूर्व सांसद

भरवारी कौशाम्बी भरवारी कस्बे में पूर्व चेयरमैन कैलाश केसरवानी के अनुज भ्राता अविनाश केशरवानी के नवनिर्मित भवन के गृह प्रवेश कार्यक्रम मे गुरुवार को पूर्व सांसद एवम जनसत्ता दल के प्रधान महासचिव शैलेंद्र कुमार शामिल हुए और उन्होंने शुभकामनाएं दी नवनिर्मित भवन के गृह प्रवेश के अवसर पर कैलाश केसरवानी अनीश चच्चा बब्बू केसरवानी प्रकाश केसरवानी अंकुर केसरवानी चंचल केसरवानी पत्रकार राजू सक्सेना सहित इलाके के तमाम गणमान्य लोग मौजूद रहे।

एएसपी ने महिला हेल्प डेस्क पर फ्री लीगल एड पोस्टर का किया अनावरण

कौशाम्बी। जिले में ह्वविश्व सामाजिक न्याय दिवसह्व के उपलक्ष्य में गुरुवार को महिला एवं बाल सुरक्षा संगठन उ0प्र0 लखनऊ में आयोजित कार्यक्रम के दृष्टिगत थाना मंझनपुर में एएसपी अशोक कुमार वर्मा ने महिला हेल्प डेस्क पर निशुल्क विधिक सहायता हेतु फ्री लीगल एड के पोस्टर का अनावरण किया साथ ही जनपद के सभी थानों में सम्बंधित प्रभारी निरीक्षक/थाना प्रभारी द्वारा महिला हेल्प डेस्क पर निशुल्क विधिक सहायता हेतु फ्री लीगल एड के पोस्टर का अनावरण किया गया।

महाविद्यालय के प्राचार्य ने शिविर के सफल संचालन के लिए छात्र-छात्राओं को दी बधाई

कौशाम्बी। महामाया राजकीय महाविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना के विशेष शिवर के सातवें दिन शिवरार्थियों ने सुबह योगाभ्यास किया। तत्पश्चात ग्राम यूसुफपुरारा में श्रमदान किया। विशेष शिविर के समापन के अवसर पर मुख्य अतिथि बैंक ऑफ महाराष्ट्र के ब्रांच मैनेजर अमित कुमार राय उपस्थित हुए अमित कुमार राय ने बताया कि किस प्रकार बैंक से लोन प्राप्त कर सकते हैं साथ ही बताया कि राष्ट्रीय सेवा योजना हमारे अंदर सामुदायिक भावना उत्पन्न करती है ।महाविद्यालय के संरक्षक एवं प्राचार्य डॉ अरविंद कुमार ने शिविर के सफल संचालन के लिए छात्र-छात्राओं को बधाई एवं शुभकामनाएं दी ।अभिषेक एवं दीपक द्वारा गीत प्रस्तुत किया गया ।सुधीर सत्यम सदफ मुस्कान शिविर ने शिविर के अपने अनुभव साझा किये ।शशि भूषण ने मंच का संचालन एवं शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत की पूनम नव्या अभिलाष माही छाया अनिकेत गोविंद नथिया गुंजन रोशनी आदि ने जल संरक्षण पर नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया । अंत में कार्यक्रम अधिकारी डॉ पवन कुमार ने सभी का आभार व्यक्त किया । इस अवसर पर महाविद्यालय के डॉक्टर अजय कुमार डॉक्टर नीलम बाजपेई डॉक्टर तरित अग्रवाल डॉ रमेश चंद्र डॉ आनंद कुमार डॉ अमित कुमार शुक्ला डॉ शैलेश मालवीय दिलीप मानवेंद्र अजय आदि उपस्थित रहे।

पेशेवर अपराधी ने गला घोटकर हत्या करने का किया प्रयास नहीं दर्ज हुआ मुकदमा

दिनदहाड़े घटना को अंजाम दिए जाने के बाद इलाके में दहशत का है माहौल, पुलिस अधिकारियों ने जांच कराई तो कोतवाली पुलिस और चौकी पुलिस का पेशेवर अपराधी से गठजोड़ उजागर होना तय

घायल रमाकांत मौर्य

कौशाम्बी। मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के बरातफारिक गांव में मंगलवार की सुबह एक पेशेवर अपराधी ने बेटे के साथ मिलकर रमाकांत मौर्य के गले में रस्सी फंसा कर उनकी हत्या का प्रयास किया रस्सी फसाए जाने के बाद रमाकांत हाथ पैर झटकने लगे वह तड़पने लगे और बचाव में चीख पुकार करने लगे जिससे रस्सी छूट गयी इसके बाद अपराधी के बेटे ने हथोड़ा उठा लिया और रमाकांत को मारने लगा हथौड़े की कई चोट रमाकांत मौर्य के पीठ पर लगी जिससे वह विचलित हो गए हथौड़े की मार से बचने के लिए रमाकांत झुक गए जिससे बेटे के हथोड़ा का प्रहार उनके अपराधी पिता के सर में लग गया और उसके सर से खून बहने लगा रमाकांत मौर्य के गले में रस्सी के स्पष्ट गहरे निशान दिखाई पड़ रहे हैं पीठ में हथौड़े के निशान साफ दिखाई पड़ रहे हैं दिनदहाड़े गले में रस्सी फंसा कर हत्या किए जाने की कोशिश के इस मामले के बाद क्षेत्र में दहशत और भय का माहौल है पुलिस ने मामले में प्राण घातक हमले का मुकदमा आरोपी और उसके बेटे के विरुद्ध दर्ज करने के बजाय रमाकांत मौर्य पर शांति भंग की धारा में मुकदमा दर्ज कर चालान कर दिया हमला करने वाले पर जब पुलिस ने मुकदमा नहीं दर्ज किया तो उसकी गिरफ्तारी का सवाल ही नहीं बनता है कोतवाली पुलिस के अंधेरगर्दी की हद तो तब हो गई जब जिसकी जान लेने का प्रयास किया गया उसी से पुलिस को शांति भंग का खतरा दिखाई पड़ने लगा और उसी का चालान कर दिया घटना को तीन दिन बीत चुके हैं लेकिन मामले में पुलिस ने प्राण घातक हमले का मुकदमा नहीं दर्ज किया है जिससे थाना और चौकी पुलिस के अपराधियों से साठगांठ का अंदाजा लगाया जा सकता है रमाकांत मौर्य पर हमला करने वाला अपराधी 18 वर्षों पहले पश्चिम शरीरा थाने का भी हत्या का नामजद मुलजिम है हत्या के मामले में लगभग 3 वर्ष तक जेल की सजा काट चुका है मंझनपुर कोतवाली में भी उस अपराधी के विरुद्ध पूर्व से गम्भीर धाराओ में मुकदमे दर्ज है पूर्व की हत्या के मामले में पश्चिम शरीरा पुलिस ने आरोप पत्र भी अदालत में दाखिल किया था लेकिन गवाहों के मुकर जाने से अदालत से वह बरी हो गया है पुलिस ने शातिर अपराधी पर गुंडा एक्ट गैंगस्टर एक्ट की कार्रवाई नहीं की है बल्कि रमाकांत मौर्य के गले में रस्सी फंसा कर प्राण घातक हमले के मामले में भी मंझनपुर कोतवाली पुलिस और उसकी चौकी पुलिस अपराधी का बचाव कर मामले को नया रूप देने का प्रयास कर रही है इस हमले के मामले में यदि पुलिस अधिकारियों ने जांच कराई तो कोतवाली पुलिस और चौकी पुलिस का पेशेवर अपराधी से गठजोड़ उजागर होना तय है।

एसडीएम के पेशकार को हटाने के लिए बोर्ड ऑफ रेवेन्यू के प्रमुख सचिव को अधिवक्ताओं ने लिखा पत्र

चायल कौशाम्बी। उप जिला अधिकारी चायल के न्यायालय में तैनात पेशकार धारा सिंह के कार्यों एवं व्यवहार से चायल तहसील के अधिवक्ता पूर्ण रूप से असंतुष्ट है एसडीएम के पेशकार धारा सिंह पर अधिवक्ताओं ने गम्भीर आरोप लगाया है प्रमुख सचिव को भेजे पत्र में अधिवक्ताओं ने कहा कि बिना उप जिला अधिकारी की जानकारी के पत्रावली का निस्तारण करवा देता है जिससे अधिवक्ताओं में रोष है अधिवक्ताओं ने कहा कि पेशकार के कारनामे से किसी दिन स्थिति बिगड़ सकती है अधिवक्ताओं ने बोर्ड ऑफ रेवेन्यू के प्रमुख सचिव को पत्र लिखकर पेशकार धारा सिंह को अन्यत्र स्थानांतरण करने की मांग की है।

जनपद कौशाम्बी के इच्छुक युवा अग्निवीर सेवा के लिए करायें ऑनलाइन पंजीकरण

कौशाम्बी। आर्मी भर्ती कार्यालय, अमेठी द्वारा भारतीय सेना में अग्निपथ योजना के अन्तर्गत वर्ष 2024-25 में अग्निवीर सेवा के लिए इच्छुक अविवाहित पुरुष उम्मीदवारों से ऑनलाइन आवेदन आमन्त्रित किये गये हैं। ऑनलाइन आवेदन दिनांक 13 फरवरी 2024 से 22 मार्च 2024 तक किया जा सकता हैं। ऑनलाइन परीक्षा की तिथि 22 अप्रैल 2024 हैं। इच्छुक उम्मीदवार की जन्मतिथि 01 अक्टूबर 2003 से 01 अप्रैल 2007 के बीच होनी चाहिए, अर्थात वे उम्मीदवार जिनकी न्यूनतम आयु 17 वर्ष 06 माह एवं अधिकतम आयु 21 वर्ष हो, पात्र होंगे। अग्निवीर जनरल ड्यूटी, अग्निवीर टेक्निकल, अग्निवीर ऑफिस असिस्टेण्ट, अग्निवीर ट्रेड्समैन आदि पदों पर भर्ती किया जाना हैं। जनपद कौशाम्बी के इच्छुक युवाओं से अपील है कि वे वेबसाइट पर पंजीकरण कर सुनहरे अवसर का लाभ उठायें। पंजीकरण के दौरान अधार कार्ड, हाईस्कूल की मार्कशीट, मूल निवास प्रमाण-पत्र, जाति प्रमाण-पत्र आदि होना अनिवार्य हैं। भारतीय सेना में चयन निष्पक्ष एवं पारदर्शी और केवल योग्यता के आधार पर होता हैं। भारतीय सेना में चयन या भर्ती के लिए किसी भी स्तर पर किसी को रिश्वत न दें तथा न ही किसी भर्ती एजेण्ट के रूप में प्रस्तुत बेईमान व्यक्तियों के झांसे में आयें, अगर कोई भी दलाल सेना में भर्ती करवाने के लिए पैसे की मांग करता है तो अपने नजदीकी पुलिस स्टेशन या भर्ती कार्यालय को सूचित करें। भर्ती प्रक्रिया पूर्णतया कम्प्यूटर सृजित है, इसलिए इस प्रक्रिया में कोई भी मानवीय हस्तक्षेप संभव नहीं हैं। कोई भी आपकी शारीरिक, लिखित या चिकित्सा परीक्षा में किसी भी प्रकार मदद नहीं कर सकता। आप अपनी खुद की काबिलियत से ही पास हों सकतें हैं। उम्मीदवार को ऑनलाइन अभ्यास करने में सक्षम बनाने के लिए वेबसाईट पर श्रेणीवार लिंक प्रदान किया गया है।

अफसरों पर भारी पड़े चार सेक्रेटरी शासकीय फरमान को दरकिनार कर पुनः कराया स्थानातंरण

माननीयों के रहमोकरम पर महीने भर में ही फिर स्थानंतरण कराकर मूल तैनाती ब्लाक में वापस किया ज्वाईन

कौशाम्बी। सत्ता पक्ष के माननीय के नजदीक कहे जाने वाले जिले में चार सेक्रेटरी अफसरों पर भारी पड़ गए है। शासकीय फरमान को दर-किनार महीनाभर में चार सेक्रेटरियों ने मूल तैनाती ब्लाक में वापस स्थानंतरण करा लिया है। महीने भर में चारो सेक्रेटरियों ग्राम सचिव के स्थानंतरण ने सीएम योगी के जीरो टॉलरेंस के दावे को कटघरे में खड़ा कर दिया है। इलाकाई लोगों ने मामले की शिकायत अफसरों से किया है। डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य के निर्देश पर एक ही ब्लाक में तीन साल से तैनात सेक्रेटरियों ग्राम पंचायत सचिव का स्थानांतरण दूसरे-दूसरे ब्लाक में कर दिया गया था। इसी के तहत सिराथू ब्लाक में तैनात ग्राम विकास अधिकारी सतीश चौधरी का स्थानांतरण कौशाम्बी ब्लाक कर दिया गया था। साथ ही नेवादा ब्लाक में तैनात ग्राम पंचायत अधिकारी अंशुमान सिंह, अजय सिंह व अनुराग का स्थानांतरण मूरतगंज ब्लाक कर दिया गया था। आरोप है कि अफसरों ने महीने भर में सतीश चौधरी को कौशाम्बी ब्लाक से पुनः सिराथू ब्लाक में तैनात कर दिया है। इसके अलावा ग्राम पंचायत अधिकारी अंशुमान, अनुराग व अजय को भी मूरतगंज ब्लाक से नेवादा ब्लाक में पुनः तैनात कर दिया गया है। साथ ही सतीश चौधरी को सिराथू ब्लाक में फिर से ग्राम पंचायतों का चार्ज सौंप दिया गया है। जबकि अजय व अंशुमान ने भी नेवादा में ज्वाईन कर लिया है। जबकि अनुराग को रिलीव करने की कवायद चल रही है। सूत्रों की माने तो चारों सेक्रेटरियों ने स्थानंतरण के लिए अफसरों को मोटी रकम भेंट करने के साथ ही एक माननीय से सिफारिश भी कराया है।

फिर शुरू हुआ ट्रांसफर पोस्टिंग का खेल

कौशाम्बी। ग्राम पंचायतों में एक बार फिर ट्रांसफर पोस्टिंग का खेल शुरू हो गया है। मन माफिक ग्राम पंचायतों में तैनाती के लिए सेक्रेटरी अफसरों से सम्पर्क कर रहें हैं। साथ ही नेताओं से सिफारिश भी करा रहें है। इस संबंध में जिलाधिकारी कौशांबी राजेश कुमार राय से बात की गई तो उनका कहना है कि मामला संज्ञान में नहीं है। मामले की जांच कराकर कार्रवाई की जाएगी।

मीडिया कर्मी आकाश चंदेल की हुई है हत्या! भाई ने पुलिस को दी नामजद तहरीर

पत्रकार की सड़क हादसे में मौत से परिवार ने किया इनकार

अझुवा कौशांबी। सैनी कोतवाली क्षेत्र के अझुवा कस्बे के वार्ड नंबर 1 भौंतर के रहने वाले पत्रकार आकाश चंदेल को बुधवार की शाम अझुवा के भोला चौराहा के पास राष्ट्रीय राजमार्ग पर ट्रक ने कुचल दिया था,हादसे में पत्रकार आकाश चंदेल की दर्दनाक मौत हो गई थी,घटना की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया और जांच में जुटी हुई।वही देर रात घर पहुंचे मृतक पत्रकार आकाश चंदेल के भाई राजेंद्र सिंह जोकि वर्तमान में चंदौली जनपद में एसआई के पद पर तैनात है, ने पुलिस को नामजद तहरीर देते हुए बताया कि उनका भाई फर्जी पासपोर्ट और गौतस्करी के संबंध में कई बार खबर चलाई थी जिससे परास के रहने वाले एहसान उस्मानी और अन्य ने उसे धमकी भी दी थी, कि जिस तरह मनोज केसरवानी पत्रकार को मरवा दिया उसी तरह तुमको भी मरवा देंगे।आए दिन धमकी भी मिलती रहती थी। मृतक पत्रकार के भाई ने परास ग्राम सभा निवासी एहसान उस्मानी पुत्र अमीबक्श एवम ट्रक ड्राइवर पर उसके छोटे भाई आकाश चंदेल की हत्या करवाने की आशंका जताते हुए तहरीर दी है। पुलिस मामला दर्ज कर जांच में जुट गई है।

सरकारी योजनाओं के लाभ से वंचित रह गया विकलांग परिवार!

कौशांबी। मंझनपुर के अंतर्गत दीवर निवासी चंद्र शेखर चौरसिया बचपन से जन्म जाति विकलांग है लगभग 51वर्ष उम्र हो जाने के बाद इन्हें सरकारी योजनाओं का लाभ नहीं मिल सका है विकलांग होने के बाद इनका हौसला कम नहीं हुआ और लगातार अधिकारियों के चौखट पर योजनाओं का लाभ लेने के लिए फरियाद करते रहे लेकिन अधिकारी नहीं पसीजे और इन्हें सरकारी योजनाओं का लाभ नहीं मिल सका मौजूदा सरकार डंका पीटती है की हमने पूरे हिंदुस्तान में गरीब किसान के लिए कई योजनाएं चलाई है सरकार के सांसद विधायक सरकारी योजनाओं के पारदर्शी तरीके से लागू होने की बड़ी-बड़ी बात करते हैं लेकिन आज तक विकलांग चंद्र शेखर चौरसिया को सरकार के द्वारा पारित कोई भी सुविधा नही मिली विकलांग चंद्र शेखर चौरसिया का आज तक न ही आयुष्मान कार्ड बना है और न ही विकलांग वाली साइकिल प्रदान किया गया और न ही कालोनी दिया गया न ही शौचालय दिया गया यह कैसी विडंबना है कि उप मुख्य मंत्री केशव प्रसाद के गृह जनपद में लोग सरकार के द्वारा पारित किए गए कानून का उलंघन करके एक गरीब असहाय विकलांग को किसी ने कोई सुविधा नहीं प्रदान किया है जिससे सरकार की योजनाओं के पारदर्शी तरीके से लागू होने की हकीकत का अंदाजा लगाया जा सकता है।

बोर्ड परीक्षा से पहले नलकूप में फंदे से लटका मिला हाईस्कूल का छात्र

घर से खेत मे दवा डालने को कह कर गया था नलकूप

कौशाम्बी। मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के कोर्रो मे किशोर का शव नलकूप मे फंदे से लटका मिला है, किशोर ने यूपी बोर्ड की परीक्षा शुरू होने से महज 12 घंटे पहले मौत को गले लगा लिया। परिजनो ने बताया किशोर 4 साल पहले हुए एक सड़क हादसे मे सिर मे चोट लगने के चलते पढ़ाई मे काफी कमजोर हो गया था। पुलिस ने शव को कब्जे मे लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया और जांच में जुट गई है। मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के कोर्रो गाँव मे राम नरेश अपनी पत्नी व 3 बेटे एक बेटी के साथ रहते है। राम नरेश घर की आर्थिक जरूरत को पूरा करने के लिए जिले से बाहर ईंट भट्ठे मे रहकर मजदूरी करते है। बड़ा बेटा गुरु प्रसाद शादी के बाद अपने परिवार का खर्च पूरा करने के लिए मंझनपुर के एक खराद की दुकान मे काम करता है। छोटा हरिप्रसाद ओसा कस्बे मे मोटर मैकेनिक है। सबसे छोटा भाई रामप्रसाद (16) पढ़ाई कर सके इसके लिए भाइयो ने पढ़ाई नहीं की।मृतका छात्र के भाई गुरु प्रसाद ने बताया कि छोटा भाई राम प्रसाद 4 साल पहले सड़क हादसे मे गंभीर रूप से घायल हो गया था। उसके सिर मे चोट आई थी। इसके बाद से वह पढ़ाई मे बेहद कमजोर हो गया था। पिछली बार बोर्ड की परीक्षा मे फेल हो गया था। इस बार वह फिर से इम्तेहान की तैयारी मे था। लेकिन ना जाने किस बात की परेशानी भाई को हो गई कि उसने मौत को गले लगा लिया। जबकि घर वाले पढ़ाई का दबाव भी नहीं बनाते थे। माँ फूलमती ने बताया, बेटा रामप्रसाद दोपहर करीब 12 बजे खाना खाकर खेत मे दवा डालने की बात कहकर नलकूप की तरफ गया। नलकूप घर से महज 500 मीटर की दूरी पर उनके खेत मे स्थित है। शाम तक बेटा घर नहीं आया तो उसे देखने नलकूप पहुची। नलकूप का दरवाजा खोला तो बेटा रस्सी के सहारे लटका हुआ था। शोर मचा कर लोगो को एकत्रित किया। बेटे ने न जाने किस गुनाह की सजा उन्हे दे दी है। वह अपने राम प्रसाद को अब अभी देख नहीं पाएगी।थाना पुलिस मंझनपुर ने लाश मिलने की सूचना पर उसे कब्जे मे लिया है। पूंछ-तांछ की कार्यवाही पूरी कर कानूनी कार्यवाही शुरू कर दी गई है। थाना प्रभारी संतोष शर्मा ने बताया, किशोर के शव को पंचायतनामा की कार्यवाही के बाद कब्जे मे लिया गया है।

एवीबीपी के कार्यकताओं ने फूंका ममता बनर्जी का पुतला, लगाए नारे

बंगाल के संदेशखाली में हजारों महिलाओं के उत्पीड़न के विरोध में उतरा संगठन

कौशाम्बी। पश्चिम बंगाल के संदेशखाली में हजारों महिलाओं के साथ शारीरिक उत्पीड़न के खिलाफ गुरुवार को जिला मुख्यालय मंझनपुर में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के सैकड़ो कार्यकताओं ने पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का पुतला फूंक कर अपना विरोध दर्ज कराया। संदेश खाली की इस घटना को राज्य प्रायोजित संगठित अपराध बताते हुए पश्चिम बंगाल में राष्ट्रपति शासन लगाए जाने की मांग उठाई। इस मौके पर बोलते हुए एबीवीपी के विभाग संयोजक ऋषभ द्विवेदी ने कहां की जिस तरीके से पश्चिम बंगाल में हजारों महिलाओं के साथ शारीरिक उत्पीड़न किया गया उसके बाद भी दोषियों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की गई यही नहीं मुख्य आरोपी शाहजहां शेख को बॉर्डर पर कराकर बांग्लादेश में मैं भागने का काम किया गया है पूरे अपराध में जिस तरीके से आरोपियों को बचाया गया उससे यह साबित होता है कि इन आरोपियों के पीछे राज्य सरकार है इसलिए यह पूरी तरह से राज्य प्रायोजित संगठित अपराध की श्रेणी में आता है। पूरे मामले में महिलाओं को न्याय दिलाने के लिए जरूरी है कि पश्चिम बंगाल में राष्ट्रपति शासन को लागू किया जाए जिससे इस पूरी घटना की निष्पक्ष जांच हो सके और सभी दोषी सलाखों के पीछे हों। इस मौके पर शिव बाबू चौधरी, कुलांशु सिंह, अमन मिश्रा, दिव्यांश द्विवेदी, अगम तिवारी, आर्यन तिवारी, अतुल, सचिन मौर्य, मोनू गौतम, कमल जी, सूर्य दीप सिंह, शिवम द्विवेदी सहित सैकड़ो कार्यकर्ता मौजूद रहे।

संपादक की कलम से

भाजपा-विपक्ष की चुनौती अभी बरकरार

@ राकेश अचल
achalrakesh1959@gmail.com

मिशन बनाकर यानि 'मिशन मोड' में काम करने वाली सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी के लिए विपक्ष की और से चुनौती अभी पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है। उलटे आगामी लोकसभा चुनाव के सबसे बड़े कुरुक्षेत्र उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी और कांग्रेस के बीच हुए चुनावी गठबंधन ने भाजपा की मुसीबतें और बढ़ा दीं हैं। बिखरते गठबंधन में ये नया मोड़ भाजपा के मिशन '400 पार' में ब्रेक लगा सकता है।

सत्तारूढ़ भाजा ने विपक्षी गठबंधन आईएनडीआईए यानि इंडिया को नेस्तनाबूद करने के लिए जितनी कोशिशें हो सकती थीं कर लीं है। बिहार की सत्ता हाथ से छीन ली। बंगाल को सन्देशखाली की वारदातों के बहाने उलझा लिया। झारखंड में सरकार की जड़ें हिला दी, लेकिन चंडीगढ़ महापौर के चुनाव में सर्वोच्च न्यायालय का फैसला आने के बाद भाजपा की इन तमाम कोशिशों पर पानी फिर गया। तेजी से बिखर रहा इंडिया गठबंधन अचानक एक होता दिखाई देने लगा। उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी और कांग्रेस में सीटों के बंटवारे की समस्या आनन-फानन में सुलझ गयी। चंडीगढ़ जीतने के बाद आम आदमी पार्टी के सुर भी गठबंधन को लेकर बदले है। मुमकिन है कि आम आदमी पार्टी और कांग्रेस के बीच जहाँ सम्भव हो, वहां सीटों के बंटवारे पर बात बन जाए और ये दोनों भी मिलकर चुनाव लड़ें।

भाजपा के मिशन '400 पार' में एक नयी बाधा किसान आंदोलन से भी पैदा हुई है। किसान आंदोलन को लेकर सरकार के रुख में कोई खास तबदीली नहीं आयी है। सरकार का रुख दो साल पुराने रुख जैसा ही है। किसानों और सरकार के बीच बातचीत के आधा दर्जन दौर नाकाम साबित हुए है। बात बनने के बजाय बिगड़ रही है। शम्भू सीमा पर किसानों और सुरक्षा बलों के साथ हुयी मुठभेड़ में एक किसान की मौत भी हो चुकी है, दर्जनों किसान घायल हुए है। सरकार ने इस बीच गन्ना उत्पादक किसानों को आंदोलन से तोड़ने के लिए गन्ने के दामों में 8 फीसदी की बढ़ोत्तरी की घोषणा अवश्य की है।

आपको याद है कि भाजपा तीसरी बार सत्ता में तीन गुना ज्यादा संख्या बल के साथ वापस आना चाहती है। इसके लिए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी संसद में और भाजपा के राष्ट्रिय अधिवेशन में 'मिशन 400 पार' का लक्ष्य घोषित किया है। मौजूदा संसद में भाजपा के पास 303 सांसद हैं। भाजपा चाहती है की आने वाले लोकसभा चुनाव में ये संख्या कम से कम 370 तक पहुंचे। बाकी 30 सीटें भाजपा के गठबंधन के सहयोगी दल लेकर आएं। भाजपा को आने वाले 23 साल के लिए सत्ता में बने रहने के लिए ये लक्ष्य तय किया गया है।

मेरे हिसाब से ये लक्ष्य असम्भव तो नहीं है क्योंकि अतीत में कांग्रेस इस लक्ष्य को भेद चुकी है, किन्तु तब परिस्थितियां भिन्न थीं। आज परिस्थितियां भिन्न हैं। तब मैदान में राजीव गांधी का चाकलेटी चेहरा जनता के सामने था। कांग्रेस ने ये लक्ष्य हासिल करने के लिए कोई मिशन नहीं बनाया था बल्कि देश की सर्वाधिक लोकप्रिय प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी का बलिदान दिया था। आज जनता के सामने सर्वाधिक लोकप्रिय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जरूर हैं लेकिन उनकी सरकार बलिदान दे नहीं रही बल्कि ले रही है। इस सरकार के सामने दो साल पहले 700 से ज्यादा किसान अपनी जान गँवा चुके हैं। सरकार जम्मू-कश्मीर जैसे राज्य का बलिदान ले चुकी है। सरकार ने पांच साल बाद भी जम्मू-कश्मीर को राज्य का दर्जा वापस नहीं लौटाया है। भाजपा के शासन में सीमावर्ती राज्य मणिपुर में जो आग लगी थी उसका धुंआ अभी तक उठ रहा है। बहरहाल देश का परिदृश्य तेजी से बदल रहा है। एक के बाद एक हमले को सहन करते हुए कांग्रेस की भारत जोड़ो न्याय यात्रा अवाध गति से आगे बढ़ रही है। कांग्रेस के उत्साह को भाजपा की और से किये जा रहे प्रहार भंग नहीं कर पाए है। भाजपा ने कांग्रेस के तमाम सहयोगी दलों को तोड़ने की हद दर्जे की घटिया और अनैतिक कोशिशें की। भाजपा को इसमें कामयाबी भी मिली, लेकिन ये तमाम कोशिशें कहीं आत्मघाती साबित न हो जाएँ। भाजपा जिन दलों के बूते 2019 के आम चुनाव में 303 के लक्ष्य तक पहुंची थी उनमें से अनेक अब उसके साथ नहीं हैं। उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र और बिहार में राजनीतिक परिदृश्य बदला हुआ है। लेकिन भाजपा ने भी हार नहीं मानी है। भाजपा ने उत्तर प्रदेश में कांग्रेस और समाजवादी पार्टी के गठबंधन के बाद न सिर्फ समाजवादी पार्टी को बल्कि बहुजन समाज पार्टी को भी तोड़ने का अभियान शुरू कर दिया है। समाजवादी पार्टी से स्वामी प्रसाद मौर्य अलग हो गए है। बसपा के 10 में से 4 सांसदों को तोड़कर भाजपा अपने साथ लेने की कोशिश कर रही है। लेकिन इससे भाजपा का रास्ता आसान होने वाला नहीं है।

इस लोकसभा चुनाव से पहले भाजपा ने सबसे बड़ा काम अयोध्या में राममंदिर बनाकर भाजपा और मुख्यमंत्री के रूप में गुजरात के 2002 के साम्प्रदायिक दंगों के लिए लांछित नरेंद्र मोदी को शापमुक्त करने का किया है। हिन्दू मतदाताओं का एक बड़ा वर्ग भूल चुका है की 2002 में मोदी जी की गुजरात के दंगों में भूमिका क्या और कैसी थी इस समय मोदी जी एक अवतार के रूप में जनता के सामने हैं। मदमत्त और निश्चिन्त। 'परम् स्वतंत्र न सिर पर कोई' वाली मुद्रा में। मोदी जी की ये मुद्रा आने वाले लोकसभा चुनाव में या तो भाजपा को पार लगा देगी या फिर डुबो देगी। सारा दारोमदार मोदी जी के मजबूत कन्धों पर है। मोदी जी के दस साल के कार्यकाल में भाजपा का संगठन आर्थिक रूप से मजबूत हुआ है किन्तु मानसिक रूप से कमजोर हुआ है। आरएसएस अब भाजपा का पिछलग्गू संगठन नजर आने लगा है। फिर भी दोनों में गजब का समंजस्य है। आने वाले दिनों में देश की सियासी तस्वीर और साफ हो जाएगी। प्रतीक्षा कीजिये।

नरीमन सयानी गुम हुईं दो आवाजें

90 साल के पार जाकर बुधवार को ऐसी दो महान शख्सियतें सदा के लिये जुदा हो गईं, जिन्होंने अपनी आवाजों के दम पर लम्बे समय तक अपने-अपने कार्यक्षेत्रों को गुंजायमान किये रखा था। इनमें से एक हैं महान विधिवेत्ता फली सैम नरीमन जिन्होंने लगभग सात दशकों तक पहले बॉम्बे हाईकोर्ट और बाद में सुप्रीम कोर्ट के विभिन्न न्यायाधीशों के समक्ष अनगिनत मामलों की सुनवाइयों के दौरान अपने कानूनी तर्कों को न जाने कितनी बार 'मी लॉर्ड' के सम्बोधनों के साथ पेश करते हुए अपनी प्रखर मेधा, प्रतिभा व तर्क क्षमता से सबको मंत्रमुग्ध किया, तो वहीं दूसरी तरफ भारतीय रेडियो के सबसे चहेते उद्घोषक अमीन सयानी भी इस जहां के अपने करोड़ों 'भाइयो और बहनो' को अलविदा कह गये। फली एस नरीमन के कहे शब्द यदि कानों से होकर बुद्धि को झकझोरते थे, तो अमीन सयानी की मधुमिश्रित आवाज कानों में पड़ते ही सीधे दिल का रास्ता पकड़ लेती थी। उनकी उम्र क्रमशः 91 तथा 95 वर्ष थी। दोनों ही भारतीयों के जीवन का अविभाज्य हिस्सा रहे- एक कानूनी किताबों के माध्यम से तो दूसरे रेडियो के जरिये।

10 जनवरी, 1929 को तत्कालीन रंगून कहे जाने वाले और अब येंगून बन चुके म्यांमार (तब का बर्मा) में एक पारसी परिवार में जन्मे नरीमन ने स्कूली शिक्षा हिमाचल प्रदेश के शिमला से तथा अर्थशास्त्र के साथ बीए व कानून की शिक्षा मुंबई के प्रसिद्ध शिक्षण संस्थानों से पूरी की। बहुत कम उम्र में बाम्बे हाईकोर्ट से उन्होंने वकालत शुरू की और अल्प समय में ही उन्होंने कानून व संविधान सम्बन्धी अपने ज्ञान का लोहा मनवा लिया था। यहां 22 साल तक प्रेक्टिस करने के बाद बाद वे दिल्ली चले आये और जल्दी ही उन्होंने सुप्रीम कोर्ट में भी अपनी धाक जमाई। 1971 में भारत सरकार के वे सर्वोच्च न्यायालय में वरिष्ठ वकील रहे। फिर 1972 से 1975 तक अतिरिक्त लोक अभियोजक थे परन्तु आपातकाल लगाने के विरोध में उन्होंने त्यागपत्र दे दिया। बाद में 2011 से 2013 तक वे भारत सरकार के सॉलिसिटर जनरल रहे।

पद्मभूषण व पद्म विभूषण से सम्मानित फली एस नरीमन ने अनेक महत्वपूर्ण व मील के पत्थर साबित हुए मुकदमों में अहम भूमिका निभाई थी। 1999 से 2005 तक वे राष्ट्रपति द्वारा राज्यसभा के लिये नियुक्त किये गये थे। उनका काम केवल कोर्ट रूम तक ही सीमित नहीं था। अनेक तरह की राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं व संगठनों के वे प्रमुख भी रहे थे। उनकी आत्मकथा 'बिफोर मेमोरी फेड्स' काफी लोकप्रिय हुई थी जिसमें उन्होंने अपने वकालती पेशे के बाहरी-भीतरी पक्षों को उजागर किया है। उनके नाम पर विस मूट ईस्ट का 'फली नरीमन पुरस्कार' भी रखा गया है। भोपाल के कुख्यात गैस ट्रेजेडी में आरोपी कम्पनी यूनियन कार्बाइड का केस लड़ने पर आजन्म पछताने वाले नरीमन ने कहा था कि 'काश वे यह मामला हार जाते।ज अपनी आत्मकथा में भी उन्होंने इस पर अफसोस जताया है। इस केस में उन्होंने यूनियन कार्बाइड तथा पीड़ितों के बीच कोर्ट के बाहर समझौते की पेशकश की थी और उन्हें एक बड़ा मुआवजा प्रस्तावित किया था।

इसके बावजूद भारत के सेकुलर ताने-बाने के हमेशा पक्षधर रहे इस महान कानूनविद की लोकप्रियता व प्रतिष्ठा में कोई कमी नहीं आई थी। जिस कॉलेजियम सिस्टम के जरिये आज शीर्ष न्यायालय के चीफ जस्टिस की नियुक्ति होती है, उसे मान्यता 1993 के एक प्रसिद्ध मामले से मिली थी जो 'सेकेंड जज केस' के नाम से जाना जाता है। उनके लड़े गये मुकदमों की फेहरिस्त आखिर लम्बी क्यों न हो उन्होंने लगभग सात दशकों तक न्यायपालिका की सेवा की।

उधर 21 दिसम्बर, 1932 को मुम्बई में जन्मे अमीन सयानी की आवाज भारत की सीमाएं लांघकर उन तमाम पड़ोसी देशों तक में सुनी जाती थी, जहां हिन्दी समझी व बोली जाती है। रेडियो सीलोन से प्रसारित होने वाला उनका कार्यक्रम 'बिनाका गीतमाला' दुनिया भर में सम्भवतः सर्वाधिक सुना जाने वाला कार्यक्रम था। ऐसे दौर में जब मनोरंजन के नाम पर आम लोगों के लिये केवल सिनेमा और रेडियो ही था- अमीन सयानी ने इन दोनों के सम्मिश्रण से यह अनूठा कार्यक्रम बनाया था। 3 दिसम्बर 1952 से प्रारम्भ हुआ बिनाका गीतमाला 1994 तक जारी रहा जिसमें हर हफ्ते रिलीज होने वाली हिन्दी फिल्मों के सर्वाधिक लोकप्रिय गानों की रैंकिंग की जाती थी। कभी पार्श्व गायक बनने की चाहत रखने वाले और पहले अंग्रेजी के उद्घोषक रहे अमीन सयानी को बिनाका गीतमाला का काम (पहले एक टूथपेस्ट के विज्ञापन के रूप में बनाते हुए) संयोगवश तथा उनके भाई के जोर देने पर मिला परन्तु उन्होंने उसे इस तरह बनाया और स्वयं को उसमें झोंक दिया कि बुधवार की शाम को 7 बजे जब वह 'भाइयो और बहनो, मैं आपका दोस्त अमीन सयानी...' के वाक्य के साथ प्रारम्भ होता और आधे घंटे तक प्रसारित होता था, तो देश में एक तरह से अघोषित कर्फ्यू लग जाता था। पूरा देश लाखों छोटे-बड़े रेडियो व ट्रांजिस्टरों के इर्द-गिर्द सिमट जाता था। इसकी लोकप्रियता का आलम यह था कि पहले 7 गाने और बाद में 16 गाने किस क्रम में हैं, अमीन सयानी की भाषा में कहें तो 'पायदान पर', बतलाते हुए अपने विशाल श्रोता वर्ग को सम्मोहित करते चले जाते थे। इस दौरान आने वाले तमाम लोकप्रिय गीतों की वे ईमानदारी से रैंकिंग करते रहे जबकि उनकी प्रभावित करने की ताकत इतनी जबरदस्त थी कि वे किसी भी गीत को चढ़ा या उतार सकते थे।

हर साल दिसम्बर के अंतिम बुधवार को वे उन गानों को पेश करते थे, जो 25 हफ्तों तक रैंकिंग में रहे थे। 1986 में यह 'सिबाका गीतमाला' और उसके पहले कुछ समय 'हिट परेड' के नाम से भी प्रसारित होता रहा। हर हफ्ते उनके लिये 60 हजार से ज्यादा चिट्ठियां आती थीं। उन्होंने 54 हजार रेडियो कार्यक्रम तथा 19 हजार स्पॉट्स या जिंगल्स किये थे। बाद में इसके श्रोता वर्ग टेलीविजन की तरफ मुड़ गये।

फली एस नरीमन और अमीन सयानी की आवाजें अब अनंत में विलीन में हो गईं हैं- एक, जिस आवाज से कोर्टरूम ठहर जाते थे; और दूसरी, जिससे भारत ठहर जाता था।

क्या हम आजाद हैं?

– सर्वमित्रा सुरजन

सुप्रीम कोर्ट तक चंडीगढ़ मेयर चुनाव का मामला पहुंचा तो इंसाफ हो गया, लेकिन क्या देश में होने वाली हर नाइंसाफी अदालत की चौखट तक पहुंच पाएगी और क्या हर बार अदालत से इंसाफ मिल पाएगा। अभी किसान फिर से दिल्ली की सीमा पार करने के लिए निकल पड़े हैं और एक बार फिर उन पर पंजाब-हरियाणा की शंभू सीमा पर आंसू गैस के गोले दागे गए।

1989 में एक फिल्म आई थी मैं आजाद हूं। जब यह फिल्म आई थी, तब भारत को आजादी मिले 40 साल हो चुके थे। इन चार दशकों में देश ने कई उतार-चढ़ाव, गम और खुशी के पल देखे। इन सबके बीच लोकतंत्र और संविधान के संरक्षण का भाव फलता-फूलता रहा। उस दौर में समाज में एक बड़ी चिंता भ्रष्टाचार को मिटाने की थी और कई फिल्मों में इसे देश के लिए सबसे बड़ी बुराई के तौर पर प्रस्तुत किया जाता था, जिसके खात्मे के लिए नायक आगे आता है। तब तक न राम मंदिर के आंदोलन के लिए रथ यात्रा निकाली गई थी, न आम लोगों को इस बात का एहसास था कि बाबरी मस्जिद को तोड़ने का अपराध भी किया जा सकता है। उदारीकरण भी देश में तब तक नहीं आया था, इसलिए समाज के उच्च वर्गों की जिंदगियों और सरोकारों से मध्यमवर्गीय लोगों के सरोकार बहुत अलग थे। इसलिए तब इस फिल्म में जिस तरह सियासत, मीडिया और कारोबार जगत का गठजोड़ दिखाकर भ्रष्टाचार का नया रूप दिखाया गया, जिस अंदाज में आम आदमी के सवालों को उठाया गया, वो वास्तविकता से दूर होने लगे थे। फिल्म में मीडिया मालिक कहता है कि झूठ जोर से बोला जाए तो लोग उसे सच मान लेते हैं। वह झूठ के कारोबार से पहले मुख्यमंत्री और फिर दिल्ली की सत्ता पर बैठने की महत्वाकांक्षा पालता है, अपने खिलाफ उठने वाली हर आवाज को कुचल देना चाहता है। उसकी निगाह में लोकतंत्र का कोई मोल नहीं है। आज से 35 साल पहले इस तरह की कहानी काफी हद तक नाटकीय लगी थी, क्योंकि लोकतांत्रिक समाज तो इस खुशफहमी को पाले हुए था कि हिटलरी सोच हिटलर की मौत की साथ ही खत्म हो चुकी है। देश तो यही मानकर चलता था कि अनेकता में एकता वाले भारत में नफरत कभी भी टिक नहीं सकेगी, भारत की हस्ती कभी मिट नहीं सकेगी।

लेकिन आज 2024 के भारत को देखें तो लगता है कि जो कुछ 1989 में दिखाया गया, वह एक तरह से देश की भावी तस्वीर ही थी। पिछले 15 दिनों की कुछ घटनाओं को देखें। चंडीगढ़ मेयर के चुनाव में पीठासीन अधिकारी ने ही मतपत्रों में अपनी ओर से क्रॉस के निशान लगाकर आप और कांग्रेस के गठबंधन को हराया और भाजपा को जिता दिया। चूंकि सारा घटनाक्रम सीसीटीवी में कैद हो गया और आप ने इस मामले को अदालत में ले जाने की हिम्मत दिखाई, इस वजह से सच्चाई सामने आई। अब आप के कुलदीप कुमार को सुप्रीम कोर्ट ने चंडीगढ़ का मेयर बनाया है और पीठासीन अधिकारी अनिल मसीह पर कार्रवाई के आदेश दिए हैं। सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले की सराहना हो रही है, लोग लोकतंत्र की रक्षा के लिए अदालत को धन्यवाद दे रहे हैं। लेकिन क्या वाकई यह प्रकरण खुश होने का है।

उथल-पुथल में पाक, भारत रहे चौकस

आर.के. सिन्हा

पाकिस्तान में बीती 8 फरवरी को हुए आम चुनावों के बाद देश में जो एक राजनीतिक स्थिरता की उम्मीद थी, वह फिलहाल तो पूरी तरह खत्म हो गई हैं। पाकिस्तान, जिसकी नियति ही हो गई है हमेशा संकट में रहना क अब तो वह अराजकता की चपेट में है और भारी मुश्किल की स्थिति में दिखाई दे रहा है। हालांकि लंबी कवायद के बाद पाकिस्तान मुस्लिम लीग (नवाज) और पाकिस्तान पीपल्स पार्टी) ने देश में मिल कर सरकार बनाने का फैसला कर लिया है। फिलहाल राजनीतिक विश्लेषकों, पत्रकारों और आम जन को कुछ समझ नहीं आ रहा कि देश किस दिशा में जा रहा है। हर कोई अनभिज्ञ सा ही दिख रहा है। चुनाव के नतीजों ने पाकिस्तानी सेना के मोटी तोंद वाले जनरलों को उनकी औकात दिखा दी है। उनके लाख चाहने के बावजूद नवाज शरीफ की मुस्लिम लीग को जनता ने बहुमत नहीं दिया। नवाज शरीफ लंदन से इसी उम्मीद में पाकिस्तान वापस आए थे कि उन्हें फिर से पाकिस्तान का प्रधानमंत्री बनने का मौका मिल जाएगा। जाहिर है,पाकिस्तानी अवाम चुनाव नतीजों से हताश और अवाक है। चुनावों के नतीजों में कसकर धांधली हुई है। जनता को अब देश में राजनीतिक स्थिरता की कोई उम्मीद भी नहीं है। अफसोस देखिए कि जिन्हें जनता ने नकारा वे ही सरकार बनाने जा रहे हैं।

दरअसल चुनाव में खंडित जनादेश आने के बाद एक के बाद एक वहां विवादों को ही जन्म मिला, खासकर चुनाव में अनियमितताओं के व्यापक आरोपों के कारण। मतदान में धोखाधड़ी के खिलाफ देश भर में विरोध प्रदर्शन जारी हैं और बलूचिस्तान का जन जीवन लगभग ठप पड़ा हुआ है। वहां पर चुनाव से पहले धमाकों की झड़ी सी लग गई थी। इसके साथ ही, रावलपिंडी के चुनाव आयुक्त ने चुनावों में धांधली के गंभीर आरोप लगाए हैं।

इसके बाद तो चुनाव की विश्वसनीयता पर और सवाल खड़े हो गए हैं। इमरान खान की पार्टी ह्यपीटीआईह्व नेशनल असेंबली में सबसे बड़ी पार्टी बनी। मतलब यह है कि जिस इमरान खान को एक के बाद एक गंभीर आरोपों के लिए दोषी मानकर जेल की सजा सुनाई जा रही है, लेकिन पाकिस्तान की जनता तो उसके साथ खड़ी है।

पाकिस्तान में राजनीतिक अस्थिरता के कारण वहां की अर्थव्यवस्था भी धराशायी हो चुकी है, जिससे पाकिस्तान के भविष्य पर दूरगामी परिणाम होंगे। पाकिस्तान की ताजा निराशाजनक स्थिति के बीच एक खबर यह भी आई कि सिर्फ हमारे एक टाटा ग्रुप के सामने भी पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था बौनी पड़ गई है। टाटा ग्रुप का मार्केट कैपिटलाइजेशन 365 अरब डॉलर पहुंच गया है। यह पाकिस्तान के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) से भी कहीं ज्यादा है। पिछले साल टाटा ग्रुप की कई कंपनियों ने शानदार प्रदर्शन किया है। इसी के बाद ही ग्रुप ने यह उपलब्धि हासिल की है। अंतराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के अनुमानों के अनुसार, पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था का आकार करीब 341 अरब डॉलर का है। टाटा ग्रुप की एक कम्पनी टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) की वैल्यू ही करीब 15 लाख करोड़ रुपये या 170 अरब डॉलर है। यह न केवल भारत की दूसरी सबसे बड़ी कंपनी है, बल्कि पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था के लगभग आधे आकार की भी है। अब आप समझ सकते हैं कि पाकिस्तान की आर्थिक स्थिति कितनी खराब हो चुकी है। बेशक, कंगाली से गुजर रही पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था इस समय गंभीर आर्थिक संकट का सामना कर रही है। पिछले साल आई बाढ़ ने पाकिस्तान को व्यापक स्तर पर नुकसान पहुंचाया है। यह नुकसान भी अरबों डॉलर में है। इससे देश के लाखों लोग दाने-दाने को मोहताज हो गए हैं। इसके अलावा पाकिस्तान 125 अरब डॉलर के विदेशी कर्ज के बोझ से दबा हुआ है।

मतलब यह है कि पाकिस्तान में राजनीतिक और आर्थिक हालात डरावने बन चुके हैं। पाकिस्तान को लेकर बाकी दुनिया की राय भी कोई अच्छी नहीं है।

पाकिस्तान में कानून और व्यवस्था के मामले में छवि ठीक नहीं है और इसे कारोबार के लिए सही जगह नहीं माना जाता। पाकिस्तान में निवेश के लिए कहीं के निवेशक आगे नहीं आते। निवेशक तो उसी देश में जाते हैं, जहां पर बिजनेस का माहौल सही होता है। कोई निवेशक अपना पैसा बर्बाद करने के लिए तो कहीं नहीं जाता है न निवेशक अपने निवेश पर बेहतर रिटर्न की उम्मीद रखता है। इसमें कोई बुराई भी नहीं है। उसे पाकिस्तान में किसी तरह के संभावना नजर नहीं आती। जाहिर है, इसलिए पाकिस्तान का विदेशी निवेशक रुख ही नहीं करते। आप समझ लें कि किसी भी देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती विदेशी निवेश या विदेशी पर्यटकों के आने से ही होती है। तब ही तो किसी देश का विदेशी मुद्रा का भंडार बढ़ने लगता है। पर पाकिस्तान में तो पर्यटन सेक्टर तक घुटनों पर आ चुका है। वहां का पर्यटन सेक्टर गर्त में जा चुका है। दुनिया के 140 देशों में पर्यटन को लेकर जारी ट्रैवेल एंड टूरिज्म कंम्पेटिटवनेस इंडेक्स में आज पाकिस्तान 121वें पायदान पर खड़ा है। इस रिपोर्ट के आने के बाद पाकिस्तानी हुक्मरानों की नींद उड़ जानी चाहिए। आतंकवाद की खेती करने वाले पाकिस्तानी हुक्मरानों को समझना होगा कि वे विदेशी पर्यटकों को देश में आने के लिए कैसे आकर्षित करें।

इस बीच,पाकिस्तान के सामने सबसे गंभीर चुनौती इस समय

बलूचिस्तान में लगातार पंजाबियों का मारा जाना है। वहां रहने वाले पंजाबियों को चुन-चुनकर मारा जा रहा है। पाकिस्तान सरकार का कहना है कि दोषियों को तुरंत पकड़ लिया जाएगा। परन्तु, यह सब रस्मी बातें हैं। हालांकि हकीकत बड़ी भयावह है। पाकिस्तानी सरकार पंजाबियों के कत्लेआम को दुनिया की निगाह से बचाना चाहती है, पर यह सोशल मीडिया के दौर में संभव हो नहीं पाता। खबरें जैसे- तैसे सारी दुनिया के सामने आ ही जाती हैं।पंजाबियों को बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी मार रही है। पंजाबी नौजवानों को अगवा भी किया जा रहा है। फिर उनका पता ही नहीं चल पाता। इस तरह के सैकड़ों केस हैं। पंजाबियों को मारे जाने की कोई वजह तो होगी ही। हालांकि किसी तरह की हिंसा को सही तो नहीं माना जा सकता। पर यह भी सच है कि पाकिस्तान में गैर-पंजाबी नफरत करते हैं पंजाब और पंजाबियों से। सबको लगता है कि पंजाबी उनका शोषण कर रहे हैं, उनके हकों को मार रहा है। यानी पाकिस्तान पर कई तरह के संकट मंडरा रहे हैं। चूंकि वह हमारा पड़ोसी है इसलिए भारत को पूरी तरह से चौकस रहना होगा। अपने को तैयार रखना होगा ताकि धूर्त पाकिस्तान के किसी भी नापाक इरादे को विफल किया जा सके। पाकिस्तान के हुक्मरान अपने घरेलू मसलों से जनता का ध्यान हटाने के लिए भारत के खिलाफ कभी भी कोई कार्रवाई कर सकते हैं। यदि यह उनकी मजबूरी है तो यह भारत के लिये चुनौती है जिससे निबटने के लिये हमें सदैव तैयार रहना होगा।

रविदासजी एक सिद्ध एवं अलौकिक समाज-सुधारक संत थे

- ललित गर्ग -

जब भारतीय समाज और धर्म का स्वरूप रूढ़ियों एवं आडम्बरों में जकड़ा एवं अधंकारमय था तब संत गुरु रविदास एक रोशनी बनकर समाज को दिशा दी। वे अध्यात्म की सुदृढ़ परम्परा के संवाहक थे। वे ईश्वर को पाने का एक ही मार्ग जानते थे और वो है ह्यभक्तिह्व, इसलिए तो उनका एक मुहावरा आज भी बहुत प्रसिद्ध है कि, ह्यमन चंगा तो कठौती में गंगाह्व। हर जाति, वर्ग, क्षेत्र और सम्प्रदाय का सामान्य से सामान्य व्यक्ति हो या कोई विशिष्ट व्यक्ति हो -सभी में विशिष्ट गुण खोज लेने की दृष्टि उनमें थी। गुणों के आधार से, विश्वास और प्रेम के आधार से व्यक्तियों में छिपे सद्गुणों को वे पुष्प में से मधु की भाँति उजागर करने में सक्षम थे। परस्पर एक-दूसरे के गुणों को देखते हुए, खोजते हुए उनको बढ़ाते चले जाना रविदासजी के सर्वधर्म समभाव या वसुधैव कुटुम्बकम् के दर्शन का द्योतक है। संत शिरोमणि गुरु रविदासजी एक महान संत और समाज सुधारक थे। भक्ति, सामाजिक सुधार, मानवता के योगदान में उनका जीवन समर्पित रहा।

रविदासजी के जन्म को लेकर कई मत हैं। लेकिन रविदासजी के जन्म पर एक दोहा खूब प्रचलित है- ह्यचौदस सो तैंसीस कि माघ सुदी पन्दरास, दुखियों के कल्याण हित प्रगटे श्री गुरु रविदास- इस पंक्ति के अनुसार गुरु रविदास का जन्म माघ मास की पूर्णिमा को रविवार के दिन 1433 को हुआ था। इसलिए हर साल माघ मास की पूर्णिमा तिथि को रविदास जयंती के रूप में मनाया जाता है जोकि इस वर्ष 24 फरवरी 2024 को है। रैदास पंथ का पालन करने वाले लोगों में रविदास जयंती का एक विशेष महत्व है। रविदासजी का जन्म उत्तर प्रदेश के वाराणसी के गोवर्धनपुर गाँव में एक मोची परिवार में हुआ था। वे कबीरजी के समकालीन थे और अध्यात्म, धर्म, समाज-व्यवस्था पर कबीरजी के साथ उनके कई संवाद उपलब्ध हैं। मध्यकाल की प्रसिद्ध संत मीराबाई भी रविदासजी को अपना आध्यात्मिक गुरु मानती थीं। रविदासजी ने लोगों को एक नई राह दिखाई कि घर-गृहस्थी में रहकर और गृहस्थ जीवन जीते हुए भी शील-सदाचार और पवित्रता का जीवन जिया जा सकता है तथा आध्यात्मिक ऊंचाइयों को प्राप्त किया जा सकता है। अपनी सामान्य पारिवारिक पृष्ठभूमि के बावजूद भी रविदासजी भक्ति आंदोलन, हिंदू धर्म में भक्ति और समतावादी आंदोलन में एक प्रमुख पुरोधा पुरुष के रूप में उजागर हुए। 15 वीं शताब्दी में रविदास जी द्वारा चलाया गया भक्ति आंदोलन उस समय का एक बड़ा आध्यात्मिक आंदोलन था।

धर्म के वास्तविक स्वरूप को उजागर करने, भक्ति और ध्यान में गुरु रविदास का जीवन समर्पित रहा। उन्होंने भक्ति के भाव से कई गीत, दोहे और भजनों की रचना की। पवित्रता, मानवीयता, आत्मनिर्भरता, सहिष्णुता और एकता उनके मुख्य धार्मिक संदेश थे। हिंदू धर्म के साथ ही सिख धर्म के अनुयायी भी गुरु रविदास के प्रति श्रद्धा भाव रखते हैं। यही कारण है कि रविदासजी की 41 कविताओं को सिखों के पांचवें गुरु अर्जुन देव ने पवित्र ग्रंथ आदिग्रंथ या गुरुग्रंथ साहिब में शामिल कराया था। वे समाज सुधारक थे, तत्कालीन रूढियों, आडम्बरों एवं दुराचारों को समाप्त कर स्वस्थ समाज संरचना करने में भी उनका विशेष योगदान रहा। इन्होंने समाज से जातिवाद, भेदभाव और समाजिक असमानता के खिलाफ जनजागृति का वातावरण निर्मित कर समाज को समानता और न्याय के प्रति प्रेरित किया। गुरु रविदासजी ने शिक्षा के महत्व पर जोर दिया और अपने शिष्यों को उच्चतम शिक्षा पाने के लिए प्रेरित किया।

रविदासजी एक सिद्ध एवं अलौकिक संत थे। एक कथा के अनुसार रविदासजी बचपन में अपने साथियों के साथ खेल रहे थे। उनमें से एक साथी अगले दिन खेलने नहीं आता है तो रविदासजी उसे ढूंढते हुए उसके घर तक पहुंच जाते हैं। उसकी मृत्यु हो गई और वे मृत शरीर को देखकर बहुत दुखी होते हैं और अपने मित्र को बोलते हैं कि उठो ये समय सोने का नहीं है, मेरे साथ खेलो। इतना सुनकर उनका मृत साथी खड़ा हो जाता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि संत रविदासजी को बचपन से ही आलौकिक शक्तियां प्राप्त थी। लेकिन जैसे-जैसे समय निकलता गया उन्होंने अपनी शक्तियों को भगवान श्रीराम और श्रीकृष्ण की भक्ति में लगाई। इस तरह धीरे-धीरे लोगों का भला करते हुए वे जन-जन के प्रिय अलौकिक संत बन गए।

संत गुरु रविदास ने स्वयं को ही पग-पग पर परखा और निथारा। स्वयं को भक्त माना और उस परम ब्रह्म परमात्मा का दास कहा। वह अपने और परमात्मा के मिलन को ही सब कुछ मानते। शास्त्र और किताबें उनके लिये निरर्थक और पाखण्ड था, सुनी-सुनाई तथा लिखी-लिखाई बातों को मानना या उन पर अमल करना उनको गंवारा नहीं। इसीलिये उन्होंने जो कहा अपने अनुभव के आधार पर कहा, देखा और भोगा हुआ ही व्यक्त किया, यही कारण है कि उनके दोहे इंसान को जीवन की नई प्रेरणा देते थे। रविदासजी शब्दों का महासागर हैं, ज्ञान का सूरज हैं। उनके बारे में जितना भी कहो, थोड़ा है, उन पर लिखना या बोलना असंभव जैसा है।

कडे निर्देश पर 42 छात्र-छात्राओं ने छोडी परीक्षा

नकलविहीन परीक्षायें शुरुः एसडीएम

अखंड भारत संदेश

राजापुर/चित्रकूट। उप्र माध्यमिक शिक्षा परिषद से संचालित हाईस्कूल-इंटरमीडिएट बोर्ड परीक्षाओं के प्रथम दिन कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच दोनों पालियों की परीक्षायें नकलविहीन हुईं। सवेरे आठ बजे से ही परीक्षार्थी एवं अभिभावकों का जमावड़ा लगना शुरू हो गया। जोनल मजिस्ट्रेट-एसडीएम राजापुर समय-समय पर परीक्षा केंद्रों में छापेमारी करते रहे। परीक्षार्थियों में भय होने से कस्बे के तीन केंद्रो में 42 छात्र-छात्राओं ने परीक्षा छोड़ी।

गुरुवार को उपजिलाधिकारी प्रमोद झा जोनल मजिस्ट्रेट परीक्षक ने बताया कि सरकार की मंशानुसार सीसीटीवी कैमरे की निगरानी में परीक्षायें शुरु हुईं। नकलविहीन

परीक्षा केन्द्र का निरीक्षण करते एसडीएम।

परीक्षा कराने को उप्र सरकार के अध्यादेश के तहत केंद्र व्यवस्थापक समेत कक्ष निरीक्षकों के नकल कराते व प्रश्न पत्र में सही उत्तर बताते पकड़े जाने पर रासुका के तहत कार्यवाही की जायेगी। तुलसी इंटर कॉलेज राजापुर, राजकीय बालिका इंटर कॉलेज, धीरेंद्र इंटर कॉलेज, गोस्वामी इंटर कॉलेज छीबों, संकट मोचन इंटर कॉलेज बछरन आदि परीक्षा केंद्रों में सघन निरीक्षण हुआ। किसी भी प्रकार की कोई नकल या नकलची नहीं मिला। परीक्षायें शान्तिपूर्ण ढंग से हो रही हैं। तुलसी इंटर कॉलेज में 17 छात्र-छात्राओं ने परीक्षायें छोड़ी। राजकीय बालिका इंटर कॉलेज राजापुर में तीन छात्राओं ने परीक्षा नही दी। धीरेन्द्र इंटर कॉलेज में 22 छात्र-छात्रा हाईस्कूल प्रथम पाली में गैरहाजिर रहे। उन्होंने बताया कि परीक्षा केंद्रों में केंद्र व्यवस्थापक समेत कक्ष निरीक्षकों को नकल विहीन परीक्षा कराने के कडे निर्देश हैं। राजापुर तहसील क्षेत्र के सेक्टर मजिस्ट्रेट तहसीलदार फूलचंद यादव ने राजकीय बालिका इंटर कॉलेज राजापुर, तुलसी इंटर कॉलेज राजापुर का सघन निरीक्षण किया।

इंटर बोर्ड परीक्षा में शामिल हुआ विचाराधीन बन्दी

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के प्रयासों से जेल में बंद इण्टरमीडिएट छात्र/विचाराधीन बंदी को बोर्ड परीक्षा में शामिल होने का मौका मिल गया है। छात्र को पुलिस हिरासत में जिला मुख्यालय के परीक्षा केन्द्र में गुरूवार को दूसरी पाली में इंटर हिन्दी परीक्षा में शामिल कराया गया।

गुरुवार को जिला विधिक सेवा प्राधिकरण अध्यक्ष/ जनपद न्यायाधीश विकास कुमार प्रथम के निर्देश पर नियमित अंतराल में जिला कारागार रगौली में विधिक साक्षरता/जागरूकता शिविर होता है। जिला कारागार में लगे शिविर में पता चला कि बंदी अजय यादव को 12वीं बोर्ड परीक्षा देनी है। अजय के भाई ने प्रार्थना पत्र दिया था।

पुलिस हिरासत में परीक्षा देने आया

न्यायालय ने अजय को परीक्षा दिलाने के निर्देश दिये। गुरूवार को इंटर परीक्षा में हिन्दी विषय का प्रश्न पत्र दूसरी पाली में था। परीक्षा केन्द्र श्रीगंगा प्रसाद जनसेवा इंटर कालेज कर्वी में अजय को पुलिस ने पहुंचाया। परीक्षा बाद वापस कारागार ले जाया गया।

इस बाबत जेल अधीक्षक शशांक पाण्डेय ने बताया कि शासन के निर्देशानुसार कारागार में बंद 18 से 21 वर्ष आयु के बंदियों व अन्य बंदियों को अलग रखा जाता है। जो छात्र होते हैं, उनके लिए अनुमति मिलने पर परीक्षा में शामिल कराने की व्यवस्था की जाती है। शिवनाडार फाउंडेशन के सहयोग से अन्य बंदियों को भी निरक्षर से साक्षर बनाने के प्रयास जारी हैं। कुछ दिन पहले यहां 40 निरक्षर बंदियों को साक्षर बनाया जा चुका है। 50 निरक्षर बंदियों को पढ़ाया जा रहा है। सर्वप्रथम जिला कारागार में निरुद्ध उच्च शिक्षित बंदियों को शिवनाडार फाउंडेशन से आधुनिक तकनीकी विधियों से शिक्षित किया जाता है। इन प्रशिक्षित शिक्षकों ने जेल में बंद निरक्षर बंदियों को प्रोजेक्टर व स्मार्ट बोर्ड से अक्षर, भाषा व व्यवहारिक गणित, विज्ञान का ज्ञान दिया जाता है। विचाराधीन बंदी अजय यादव के भाई के प्रार्थना पत्र पर न्यायिक मजिस्ट्रेट अंजलिका प्रियदर्शनी के आदेश देने के बाद इस बाबत जिला विद्यालय निरीक्षक व पुलिस अधीक्षक से पत्राचार किया। पुलिस हिरासत में बंदी को जिला मुख्यालय के परीक्षा केंद्र जनसेवा इंटर कालेज में परीक्षा में शामिल कराया।

मन्दिर में पूजा करते प्रधान परिवार।

शिव परिवार की मन्दिर में हुई प्राण-प्रतिष्ठा

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। राजापुर क्षेत्र के बरहट गांव में गुरुवार को नवनिर्मित मंदिर में शिव परिवार व बजरंगबली समेत श्रीरामजानकी प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा हुई। मंदिर परिसर में 24 फरवरी से श्रीमद्भागवत महायज्ञ होगा। गुरुवार को बरहट प्रधान पूनम देवी ने बताया कि क्षेत्रीय श्रद्धालुओं व जनकल्याण को ये मंदिर बनवाया है। बेहतरीन-कुशल कारीगरों ने मंदिर को आकर्षक रूप दिया है। प्रधान पति पुरूषोत्तम सिंह ने बताया कि 24 फरवरी से मंदिर परिसर में श्रीमद्भागवत महायज्ञ की शुरुआत होगी। दो मार्च को विशाल भंडारा होगा।

बाइकों की भिडन्त में दो की मौत, दो घायल

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। राजापुर थाना क्षेत्र के अर्जुनपुर गांव के पास आमने-सामने दो मोटरबाइकें भिड गईं। जीजा-साले समेत चार लोग घायल हो गए। चारों को सीएचसी पहाड़ी में भर्ती कराया। इलाज दौरान दो की मृत्यु हो गई। पुलिस व आक्रोशित परिजनों से नोंकझोंक भी हुई।

ये हादसा बुधवार को देर रात हुआ। बताया गया कि जमहिल गांव के अवनीश त्रिपाठी (30) व पहाड़ी के नीरज पांडेय (25) एनजीओ में काम करते हैं। राजापुर में संस्था के काम बाद दोनों बाइक से गांव लौट रहे थे। अर्जुनपुर गांव पहुंचे तो सामने से तेज रफ्तार

रोते-बिलखते परिजन।

से आई बाइक से भिडन्त हो गई। दूसरा बाइक सवार रैपुरा के गिरधारा का संदीप कुमार (26) व साला विनय वर्मा (24) समेत चारों घायल हो गए। लोगों की मदद से घायलों को सीएचसी में भर्ती कराया। प्राथमिक इलाज बाद डॉक्टरों ने सभी को जिला अस्पताल रेफर किया। दोनों बाइक चालक हेलमेट पहने थे। घायलों के परिजन जिला अस्पताल पहुंचे। इलाज शुरू होने से पहले नीरज पांडेय व संदीप वर्मा की मौत हो गई। पुलिस के अस्पताल पहुंचने पर गुस्साये परिजनों से नोकझोंक होने लगी। आरोप लगाया कि सूचना के बाद समय से पुलिस नहीं पहुंची।

सपा मुखिया के हाथ मजबूत होने से बचेगा लोकतंत्रः विशम्भर

सपा का कार्यकर्ता सम्मेलन सम्पन्न

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। समाजवादी पार्टी ने लोकतंत्र बचाओ व संविधान बचाओ आभियान के तहत सपाइयों के कार्यकर्ता सम्मेलन में सपा प्रत्याशी शिवशंकर सिंह पटेल ने जनता से अपील किया कि लोकतंत्र को लाने में तमाम लोगों ने कुर्बानी दी है। भाजपा लोकतंत्र व संविधान को खत्म कर रही है। मजबूत लोकतंत्र सपा मुखिया अखिलेश यादव की अगुवाई में आयेगा।

सपाइयों का सम्मेलन बांदा जिले के ओरन गांव के नरेश मैरिज हाल में हुआ। सपा प्रत्याशी शिवशंकर सिंह पटेल ने कहा कि वे लोकसभा के सपा से प्रत्याशी हैं। सपा मुखिया अखिलेश यादव के हाथों को मजबूत करने व लोकतंत्र बचाने को सपा के पक्ष में मतदान करें। सपा अम्बेडकर वाहिनी के राष्ट्रीय सचिव मान सिंह पटेल ने कहा कि लोकतंत्र की हत्या भाजपा कर रही है। लोकतंत्र लाने में तमाम लोगों ने कुर्बानी दी है। संविधान की विरासत से भाजपा खिलवाड़ कर रही है। लोकतंत्र की जीत को तानाशाही ताकतों को परास्त करना होगा। उन्होंने कहा कि सपा मुखिया अखिलेश यादव के हाथों को मजबूत करने से ही लोकतंत्र बचेगा। केन्द्र की किसान-मजदूर-नौजवान विरोधी सत्ता को उखाड फेंकने का काम आगामी लोकसभा में जनता को करना है।

बतौर मुख्य अतिथि सपा के राष्ट्रीय महासचिव विशम्भर प्रसाद निषाद ने कार्यकर्ताओं में जोश भरते हुए कहा कि भाजपा सरकार लोकतंत्र एवं संविधान विरोधी नीतियों पर चल रही है। उन्होंने केन्द्र की सत्ता को उखाड फेंकने का जनता से आवाहन किया। कार्यकर्ता सम्मेलन में पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष हाजी शकील अली, पूर्व प्रत्याशी श्रीमती किरन वर्मा, बृजभूषण सिंह यादव, विवेक उर्फ बिन्टू तिवारी, जुगुल जाटव, हरिश्चन्द्र सोनकर, राजेश शिवहरे, कार्यक्रम संयोजक मुन्ना सिंह पटेल, पवन कुशवाहा, सुनील कुमार कुशवाहा, लाला कुशवाहा, ताहिर खान, वजीर अली, अमरनाथ कोटार्य, राजेश कुशवाहा, संजय दिवाकर, दलजीत यादव मौजूद रहे। संचालन विधानसभा उपाध्यक्ष नरैनी राम सिंह यादव ने किया।

सम्मेलन में मौजूद सपा नेता।

लोकसभा चुनावः डीएम-एसपी ने मदतान केन्द्रों-स्ट्रांग रुम देखे

लोकसभा चुनाव को डीएम-एसपी ने कसी कमर

निरीक्षण करते डीएम-एसपी।

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। आगामी लोकसभा चुनाव के मद्देनजर जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द व पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह ने चित्रकूट इंटर कॉलेज कर्वी, इंग्लिश मीडियम स्कूल नया बाजार कर्वी, सेठ राधा कृष्ण पोद्दार इंटर कॉलेज सीतापुर, इंग्लिश मीडियम विद्यालय लोढ़वारा, पूर्व माध्यमिक विद्यालय लोढ़वारा व राष्ट्रीय रामायण मेला परिसर सीतापुर का निरीक्षण किया। गुरुवार को डीएम-एसपी ने विभिन्न मतदान केंद्रों में पेयजल, रैंप, प्रकाश, फर्नीचर, शौचालय, चहारदीवारी आदि व्यवस्था देखी। डीएम-एसपी ने राष्ट्रीय रामायण मेला परिसर भ्रमण दौरान एडीएम एफआर वंदिता श्रीवास्तव से कहा कि लोकसभा चुनाव के मद्देनजर परिसर में मतदान समाप्ति बाद 236 विधानसभा चित्रकूट व 237 विधानसभा मानिकपुर की ईवीएम मशीनों के रखे जाने को स्ट्रांग रूम बनाया जाना है। लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों के साथ भ्रमण कर बैरिकेटिंग, स्ट्रांग रूम, सुरक्षा व्यवस्था की तैयारी कर ले। चित्रकूट इंटर कॉलेज कर्वी भ्रमण दौरान एसडीएम सदर सौरभ यादव से कहा कि सीआईसी का निरीक्षण कर 236 चित्रकूट विधानसभा व 237 मानिकपुर विधानसभा की पोलिंग पार्टियों के रवाना व वाहनों के खड़े होने की व्यवस्था तथा चुनाव सामग्री वितरण आदि व्यवस्था देखें। कहा कि जिन बूथों पर कोई समस्या हो, अभी से संबंधित अधिकारियों से निस्तारण करा लें, ताकि चुनाव समय कोई समस्या न हो। अपने क्षेत्र के सभी मतदान केंद्रों का निरीक्षण भी कर लें।

सिपाही पर पीडिता ने दुष्कर्म प्रयास का लगाया आरोप

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। बरगढ थाना क्षेत्र की एक महिला ने पुलिस अधीक्षक को लिखे पत्र में थाने में तैनात एक सिपाही राहुल यादव पर आरोप लगाया कि उसके साथ दुष्कर्म का प्रयास किया है। पीडिता ने कहा कि पुलिस हेल्पलाइन व 112 में फोन करने पर भी कोई कार्यवाही नहीं हुई। बरगढ चैकीदार उसे देखकर हंस व गन्दी बात बोल रहा था। गुरुवार को पीडिता ने पुलिस अधीक्षक को भेजे पत्र में कहा कि एक फरवरी को अपरान्ह तीन बजे बरगढ रेलवे स्टेशन झाडियों के पास गोबर लेने गई थी। पीपल पेड के पास खडे थाने के सिपाही राहुल यादव ने उसे पकडकर अश्लील हरकत कर दुष्कर्म का प्रयास किया। सिपाही का एक मित्र जो खुद को मिलेट्री का जवान कहता है, दोनों ने उसका पीछा भी किया। पीडिता के चचिया ससुर के पुत्र प्रदीप आदि ने उसे बचाया। वे धमकी देकर चले गये। पीडिता ने कहा कि बीस फरवरी को पूर्वान्ह 11 बजे मिलेट्री का जवान बताने वाले ने उसके घर में घुसकर दुष्कर्म कर प्रयास किया। शोर मचाने पर मोहल्ले के अमरदीप पुत्र सुरेश व पप्पू पुत्र अज्ञात ने ललकारा तो वे भाग गये। पीडिता ने रिपोर्ट दर्जकर कानूनी कार्यवाही की मांग की है।

.....और फिर कुछ लोग मर जाने के डर से मर गये

चार मासूमों की मौत का मुद्दा लोस चुनाव में उठे तो ताज्जुब नहीं?

यकीनन कुछ तो काला है

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। उस गली में कुछ हुआ है, इस खबर से मर गये। और फिर कुछ लोग मर जाने के डर से मर गये- कुछ इसी अंदाज में जिले में लोग प्रतिदिन जी और मर रहे हैं। 14 फरवरी को चित्रकूट इंटर कालेज में बम विस्फोट से चार मासूम छात्रों की मौत के बाद भी लोग उद्वेलित नहीं हो रहे। ये हालात किसी के साथ भी हो सकते हैं। मृतक मासूमों के परिजन जिस हाल में दिल की बात कहते हैं, उनके दिल से लोग उतर से गये हैं।

14 फरवरी को सीआईसी में जो हृदय विदारक घटना हुई है, उससे कोई भी मानवीय संवेदना से लैस व्यक्ति चुप नहीं रह सकता, फिर मृतक मासूमों के परिजन कैसे चुप रह सकते हैं। मृत यश मिश्रा के पिता विश्वबन्धु मिश्रा ने कहा कि यकीनन कुछ तो काला है यहां पर, उजाला ही उजाला है यहां पर-इसीलिए वास्तविक दोषियों पर कार्यवाही नहीं हो रही। निशाना चूक गया और मचान टूट गया, हमारे सिर पर तेरा आसमान टूट गया। सूबे के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से न्याय की आस लगी है, उन्होंने भी अब तक वह कार्यवाही नहीं की-जो उनसे अपेक्षित थी।

मृतक के चाचा आकाश मिश्रा ने कहा कि दोषियों के घर में ऐसी घटना होती तो तत्काल न्याय को धरती-आसमान एक कर देते। बम विस्फोट बाद बच्चों को लोडर से अस्पताल पहुंचाया, एम्बुलेंस तक मुहैया न हो सकी। ये जिला प्रशासन की नाकामी नहीं तो और क्या है? प्रतिबंधित स्थल पर खतरनाक विस्फोटक सामग्री बिना सुरक्षा के कैसे रखी गई? ये घटना चार घंटे बाद होती तो सैकडों लोग चपेट में आते। उन्होंने जिले के कुछ जनप्रतिनिधियों पर भी सवाल खडे किये। कहा कि ऐसे जनप्रतिनिधि उनके दरवाजे शोक के दो शब्द कहने भी नहीं आये। आगामी लोकसभा चुनाव में चार मासूमों की बम विस्फोट से मौत का मुद्दा गरमा जाये तो लोगों को ताज्जुब नहीं होना चाहिए। इस मामले में बेशर्मी की हद तो तब पार हो गई, जब पारस के परिजन प्रयागराज से शव लाये तो एम्बुलेंस का किराया भी उन्हें देना पडा। ऐसे मामले में उन्हें सरकारी एम्बुलेंस भी मुहैया नहीं हो सकी। ये जिला प्रशासन के नकारेपन का सबूत नहीं तो और क्या है?

पंचायत भवन के सामने प्रधान ने लगवा दिया गांजा

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। एक दबंग प्रधान सूबे के सीएम योगी आदित्यनाथ के नशामुक्त अभियान को ठेंगा दिखाते हुए पंचायत भवन के सामने गांजे के पौधे लगवा दिये हैं। पहाड़ी थाना क्षेत्र के कलवारा बुजुर्ग गांव के प्रधान ने ये हरकत की है।

प्रधान की हरकत का खुलासा गुरुवार को हुआ। बताया गया कि सूबे के मुख्यमंत्री ने गांवों को सुविधा युक्त बनाने को पंचायत भवन बनवाने के निर्देश दिये हैं। ग्राम पंचायत कलवारा में नवीन पंचायत भवन में गंजेडियों की टोली नजर आती है। प्रधान जवाहरलाल की हरकत से पंचायत भवन के सामने गांजे के पौधे लगे हैं। पहाड़ी थाने से सटे कलवारा बुजुर्ग में पंचायत भवन सड़क किनारे सुरसेन रोड पर है। प्रतिदिन पुलिस की गश्त भी होती है, गांजा के पौधों पर पुलिस की नजर नहीं पडती। नशे के कारोबारियों को दादू-दबंग व राजनैतिक दलों के नेताओं का संरक्षण रहता है, जिसके चलते कार्यवाही नहीं हो रही।

अराजकता फैलाने वालों पर होगी कार्यवाहीः मऊ कोतवाल

अखंड भारत संदेश

मऊ/चित्रकूट। मऊ थाने के नवागंतुक प्रभारी निरीक्षक अजीत कुमार पांडेय ने हुई भेंट में कहा कि शासन की मंशानुसार सभी कार्यों को प्राथमिकता दी जाएगी। महिला उत्पीड़न करने वालों पर दंडात्मक कार्यवाही होगी। क्षेत्र में मादक पदार्थ का कारोबार करने वालों को चिन्हित कर कार्यवाही की जायेगी। क्षेत्र की जनता से अपील किया कि भयमुक्त होकर समस्या समाधान को पुलिस से बतायें।

गुरुवार को मऊ कोतवाल अजीत कुमार पाण्डेय ने कहा कि समस्या समाधान को आने वालों की कानूनी मदद की जायेगी। कोई भी व्यक्ति शिकायत लेकर किसी भी समय सीधे उनसे मिलकर समस्या बता सकते हैं। तत्काल निराकरण के प्रयास होंगे। मातहतों को निर्देश दिये कि थाना क्षेत्र में असामाजिक तत्वों पर नजर रखें। चिन्हित कर अराजकता फैलाने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करें।

प्राथमिकता बताते मऊ कोतवाल।

प्रभारी निरीक्षक अजीत कुमार पांडेय ने व्यापारियों से अपील किया कि अपनी दुकानों के सामने सीसीटीवी कैमरा लगवायें, ताकि आकस्मिक घटना पर तत्काल कार्यवाही की जा सके। उन्होंने एंटी रोमियो टीम को निर्देश दिये कि संबंधित क्षेत्रों में महिलाओं व स्कूल-कॉलेजों में पढ़ने वाली छात्राओं को जागरूक करें, ताकि अपराधों पर अंकुश लगाया जा सके। प्रभारी निरीक्षक ने प्रतिदिन शाम को कस्बे में भ्रमण की प्रतिबद्धता तय की। सक्रिय पुलिसिंग को लेकर थाना क्षेत्र में असामाजिक तत्वों पर खौफ बना है। पुलिस व जनता के बीच संवाद स्थापित कर जनता से सद्व्यवहार किया जायेगा।

पुलिस भर्ती परीक्षा में हुई धांधली, ओला प्रभावितों को दें मुआवजाः विधायक अनिल प्रधान

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। सपा के सदर विधायक अनिल प्रधान ने जिले में पुलिस भर्ती परीक्षा 2024 में हुई धांधलेबाजी व एक सप्ताह बाद पुनः कई स्थानों पर ओलावृष्टि तेज हवाओं के साथ बारिश बाबत सूबे के मुख्यमंत्री को लिखे पत्र में कहा कि 17-18 फरवरी को उप्र पुलिस भर्ती परीक्षा में धांधलेबाजी हुई है।

गुरुवार को सपा विधायक अनिल प्रधान ने सूबे के मुख्यमंत्री को लिखे पत्र में कहा कि उनकी कर्वी विधानसभा व चित्रकूट जिले के सभी युवा जो उप्र पुलिस भर्ती परीक्षा की तैयारी कर रहे थे। इस परीक्षा में शामिल हुए थे, परीक्षार्थियों ने दिये ज्ञापन में कहा कि परीक्षा में धांधलेबाजी हुयी है। सभी पालियों के पेपर परीक्षा समय से पहले ही मोबाइलों से वायरल हो गये थे। साक्ष्य भी अभ्यर्थियों ने दिखाये हैं। धांधलेबाजी से सभी अभ्यर्थियों के भविष्य से खिलवाड़ हुआ है, जो निरन्तर परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं। विधायक ने कहा कि पुलिस

सदर विधायक अनिल प्रधान।

भर्ती परीक्षा की जांच कराकर दोषियों पर कार्यवाही करें। पुनः निष्पक्ष परीक्षा कराने को सम्बन्धित को आदेश दिया जाये।

उन्होंने जिले में एक सप्ताह में कई जगहों पर ओलावृष्टि व तेज हवाओं के साथ बारिश से मौसम ने करवट ली है। इससे किसानों के गेहूं, सरसों, चना, मसूर, अलसी, अरहर फसल को क्षति पहुंची है। 12 फरवरी की रात 12 बजे अचानक हुई बारिश से ओलावृष्टि से किसानों की फसलें पूरी तरह से बर्बाद हो गयी थी। ओलावृष्टि से सबसे ज्यादा गेहूं, सरसों, चना, मसूर, अलसी, अरहर की फसल को क्षति पहुंची है। आपदा से प्रभावित परिवारों को अनुमन्य राहत राशि जल्द दी जाये। जिन लोगों के घरों को क्षति पहुंची व पशु हानि हुयी है। प्रभावितों को तत्काल वित्तीय मदद की जाये। विधायक अनिल प्रधान ने कहा कि इस मामले में जिम्मेदार अधिकारियों से स्थलीय सत्यापन कराकर फसल क्षति का मुआवजा दिलाया जाये।

किसान की मौत पर किसान सभा ने जताया दुख

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। किसान सभा चित्रकूट ने भटिंडा जिले के बल्लो गांव के युवा किसान शुभकरण सिंह (23) की मृत्यु पर गहरा शोक जताते हुए कहा कि मोदी सरकार की किसान विरोधी नीतियों के खिलाफ प्रदर्शन करते समय पंजाब के खन्नौरी बॉर्डर पर पुलिस ने गोली मारकर हत्या कर दी। शहीद किसान शुभकरण सिंह को श्रद्धांजलि देते हुए दुखी परिवार के प्रति गहरी संवेदना जताई है। गुरुवार को उप्र किसान सभा चित्रकूट, संयुक्त किसान मोर्चा ने घोषित विरोध/आंदोलनों का समर्थन करते हुए कहा कि सर्वोच्च बलिदान को व्यर्थ नहीं जाने देंगे।

नेपाल : सांसदों के गैर हाजिर होने से दल विभाजन संबंधी विधेयक नहीं हो पाया पारित

काठमांडू। नेपाल की संसद में सरकार की तरफ से पटल पर रखे गए राजनीतिक दल विभाजन संबंधी विधेयक सांसदों की अनुपस्थिति के कारण लटक गया है। सदन में गणपूरक संख्या के लिए आवश्यक न्यूनतम संख्या में भी सांसदों की उपस्थिति नहीं होने के कारण विधेयक आज पारित नहीं हो पाया। प्रतिनिधि सभा में आज सरकार की तरफ से सूचना तथा संचार मंत्री रेखा शर्मा ने राजनीतिक दल विभाजन संबंधी विधेयक को सदन के पटल पर रखा। थोड़ी देर तक इस पर चर्चा भी हुई लेकिन विधेयक पर मतदान के समय विपक्षी दलों के सांसद ने नियमापत्ति करते हुए गणपूरक संख्या की भी उपस्थिति नहीं होने के कारण मत विभाजन का विरोध किया। जिस समय इस विधेयक पर मतदान होना था, उस समय सदन में सांसदों की उपस्थिति सिर्फ 63 ही थी। नियमानुसार गणपूरक संख्या पहुंचाने के लिए कम से कम 69 सांसदों की उपस्थिति अनिवार्य होती है। 275 सांसदों के निचले सदन में सत्तारूढ़ दल की उपस्थिति बहुत ही न्यून थी। संसद के सबसे बड़ी पार्टी नेपाली कांग्रेस के अधिकांश सांसद पार्टी की महासमिति बैठक में व्यस्त हैं। इसी तरह सत्ता का नेतृत्व कर रहे माओवादी पार्टी के सभी बड़े नेता पार्टी की स्थाई समिति की बैठक में सहभागी होने के कारण संसद से गैर हाजिर रहे। उधर प्रमुख विपक्षी दल नेकपा एमाले पार्टी की केन्द्रीय कमेटी की बैठक जारी होने से उस पार्टी के भी अधिकांश सांसद पार्टी बैठक में ही रहे। प्रतिनिधि सभा के स्पीकर ने गणपूरक संख्या पहुंचाने के लिए कई बार बेल भी बजाई लेकिन संख्या नहीं पहुंच पाने के कारण अन्ततः सदन की कार्यवाही को कल तक के लिए स्थगित कर दिया गया है। स्पीकर देवराज घिमिरे ने इसे दुखद बताया है। उन्होंने सरकार को निर्देशित किया कि कम से कम सरकार द्वारा कोई महत्वपूर्ण विधेयक यदि लाया जा रहा है तो अपने सांसदों की उपस्थिति सुनिश्चित कराए। स्पीकर ने संसद में मंत्रियों के गैर हाजिर होने पर भी नाराजगी जताई है।

कॉमेडियन भारती के भस्म आरती में निकल पड़े आंसू

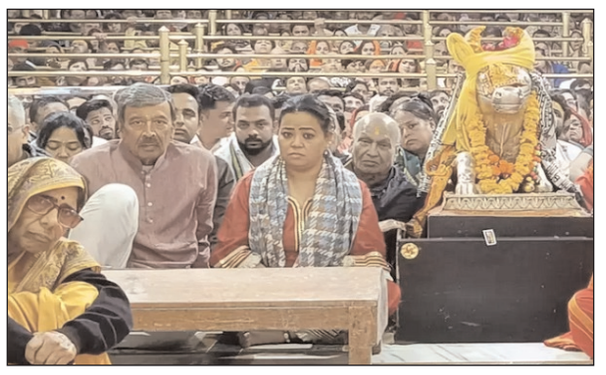

उज्जैन। इंदौर में आयोजित डांस आडिशन में शामिल होने आईं कॉमेडियन भारतीसिंह निंबोदिया गुरुवार को 12 साल के लंबे अंतराल बाद महाकाल मंदिर आईं और भस्म आरती दर्शन के दौरान उनके आंसू छलक पड़े। भारती ने इसकी वजह भी बताईङ्घ कॉमेडियन भारती सिंह ने कहा 12 साल बाद मंदिर आई तो यहां का दृश्य देख अभिभूत हो गईं, स्वर्ग जैसा सुंदर मंदिर परिसर बन गया है। तब भी आंखों से आंसू नहीं रुके थे। मन बहुत सारी चीजें थी, सोचा था बाबा महाकाल से बहुत कुछ मांगूंगी, लेकिन जब उनको देखते हैं तो देखते ही रह जाते हैं, मांगना तो भूल ही जाते हैं। हम टीवी वाले 15 मिनट एक जगह नहीं बैठ सकते और आज 2 घंटे तक लगातार बैठकर भगवान महाकाल का श्रृंगार देखा और आरती भी की। भारती ने कहा बारह साल बाद मंदिर को इतने सुंदर रूप में देखकर मन प्रसन्न हो गया। जिसने भी ये काम किए हैं, उनको धन्यवाद।

मेक्सिको में अपराधियों में टकराव, बर्बरता से 12 को मौत के घाट उतारा

मेक्सिको सिटी। मेक्सिको के दक्षिणी राज्य ग्युरेरो में प्रतिद्वंद्वी आपराधिक गिरोहों के बीच भयावह टकराव में कम से कम 12 लोग मारे गए। राष्ट्रपति एंड्रेस मैनुअल लोपेज ओब्रेडोर ने बुधवार को संवाददाता सम्मेलन में इसकी पुष्टि की। ओब्रेडोर ने मेक्सिको सिटी के नेशनल पैलेस में नियमित संवाददाता सम्मेलन में कहा, घटना की जांच मंगलवार को शुरू हो चुकी है। नेशनल गार्ड के सैनिक घटनास्थल पर हैं। इस बर्बर झड़प का विवरण बाद में प्रदान किया जाएगा। मेक्सिको के अधिकारियों का कहना है कि इस घटना का मंगलवार को सामने आया वीडियो दिल दहला देने वाला है। इसमें बंदूकधारी अपने दुश्मनों को गोली और लातें मारने के साथ जलाते हुए दिखाई दे रहे हैं। उल्लेखनीय है कि इस देश में सिर काटने और फांसी देने के वीडियो पहले भी सोशल मीडिया पर सामने आ चुके हैं। ताजा वीडियो में जंगली पहाड़ी पर आगबबूला बंदूकधारी अपने दुश्मनों पर चिल्ला रहे हैं। उन्हें गाली दे रहे हैं। वह कुछ प्रतिद्वंद्वियों के गोलियों से छलनी शवों के ऊपर खड़े नजर आ रहे हैं। वह लाशों पर पैर पटकते हैं। कुछ को निर्वस्त्र कर देते हैं। इसके बाद उन्हें पास में बनी एक बनी हुई चिता में खींचकर आग लगा देते हैं। प्रशांत तट के गुएरेरो राज्य के अभियोजकों ने मंगलवार देररात कहा कि वे टोटोलापन की पहाड़ी बस्ती में अपराधस्थल पर पहुंचे। उन्हें पांच जले हुए शव मिले। राष्ट्रपति आंद्रेस मैनुअल लोपेज ओब्रेडोर ने बुधवार को कहा कि अब तक कुल एक दर्जन शव मिले हैं। हालांकि, वीडियो में कम से कम 15 शव नजर आ रहे हैं। अभियोजकों का कहना है कि टकराव में शामिल गिरोहों की पहचान नहीं हो सकी है। लेकिन स्थानीय एक पत्रकार ने कहा कि जान गंवाने वाले ड्रग माफिया फैमिलिया मिचोआकाना कार्टेल से संबंधित हो सकते हैं।

रूस-यूक्रेन युद्ध दो साल होने के बीच यूरोपीय संघ ने रूस पर लगाए नये प्रतिबंध

ब्रसेल्स। यूक्रेन और रूस के बीच जारी युद्ध के दो साल पूरे होने पर यूरोपीय संघ ने बुधवार को रूस के खिलाफ नये प्रतिबंध लगाने पर सहमति जताई, जिसके दायरे में यूक्रेन के खिलाफ युद्ध में मास्को की सहायता करने वाली चीनी कंपनियों सहित व्यक्तियों और व्यवसायों को लाया जाएगा। यूरोपीय संघ ने यह निर्णय ऐसे समय में लिया है, जब यूक्रेन पर रूस के हमले के दो वर्ष पूरे होने जा रहे हैं और हाल में रूस के विपक्षी नेता एलेक्सी नवलनी की मृत्यु की बात सामने आई है। ज्ञात रहे कि रूस ने 24 फरवरी, 2022 को यूक्रेन पर हमला कर दिया था। वर्तमान में 27 देशों के यूरोपीय संघ की अध्यक्षता कर रहे बेल्जियम ने कहा, नये प्रतिबंध यूरोपीय संघ द्वारा अनुमोदित सबसे व्यापक पाबंदियों में से एक हैं। राजनयिक सूत्रों ने बताया कि यूरोपीय संघ के सभी सदस्य देशों के दूत लगभग 200 कंपनियों और व्यक्तियों पर प्रतिबंध लगाने पर सहमत हुए हैं। उन्होंने बताया कि प्रतिबंधों को अभी औपचारिक रूप से लागू किया जाना बाकी है।

सूत्रों ने कहा कि प्रतिबंध के दायरे में कई चीनी कंपनियां भी हैं, जिनके बारे में माना जाता है कि इन्होंने रूस को मदद प्रदान की थी। यूरोपीय संघ की लीगल मैगजीन में प्रतिबंध प्रकाशित होने पर लक्षित संस्थाओं का विवरण सामने आएगा।

पाकिस्तान : नई गठबंधन सरकार के लिए आने वाली चुनौतियां

पाकिस्तान में 2024 चुनाव के नतीजे राजनीति में अस्थिरता के साथ आर्थिक परेशानी और आतंकवाद के बढ़ाने की ओर इशारा कर रहे हैं. नई गठबंधन सरकार इनका जरूरी हल निकालने में कमजोर नजर आ रही है. पाकिस्तान की राजनीति में दो पारंपरिक प्रतिद्वंद्वी दलों ने एक गठबंधन सरकार बनाने का एलान किया. संसदीय चुनाव के नतीजे आने के बाद से ही पाकिस्तान जिस राजनीतिक गतिरोध का सामना कर रहा था, उन पर भी विराम लगा. संसदीय चुनाव के नतीजों में किसी भी दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिल पाया था. पाकिस्तान मुस्लिम लीग नवाज (पीएमएल-एन) के प्रमुख और तीन बार प्रधानमंत्री रह चुके नवाज शरीफ ने कहा कि पाकिस्तान पीपल्स पार्टी (पीपीपी) और कुछ अन्य छोटे दलों के साथ मिलकर गठबंधन सरकार चलाई जाएगी. ये पार्टियां 265 सदस्यों के साथ साथ मिलकर संसद में बहुमत से शासन करेंगी. पीएमएल-एन ने पूर्व प्रधानमंत्री और नवाज शरीफ के छोटे भाई शाहबाज शरीफ को नई सत्ता की बागडोर सौंपने के लिए नामित किया है. नई गठबंधन सरकार 2022 में हुए गठबंधन की तरह ही है, जिसने तत्कालीन प्रधानमंत्री इमरान खान को सत्ता से बेदखल कर दिया था और चुनाव कराने के लिए कार्यवाहक प्रशासक के तौर पर 16 महीने तक देश पर शासन किया था.

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।

नेपाल: भारत, पाकिस्तान सहित 19 देशों की सेना का संयुक्त युद्धाभ्यास जारी

काठमांडू। नेपाली सेना और संयुक्त राष्ट्र की तरफ से नेपाल में 19 देशों के सैनिकों का संयुक्त सैन्य अभ्यास जारी है। 15 दिन तक चलने वाले इस सैन्य अभ्यास में भारत और पाकिस्तान के भी सैनिक शामिल हैं। नेपाली सेना के पांचखल स्थित वीरेन्द्र शान्ति सैनिक प्रशिक्षण केन्द्र में 20 फरवरी से शुरू हुआ यह सैन्य अभ्यास 4 मार्च तक चलेगा। इसमें भारत, पाकिस्तान, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, श्रीलंका, नेपाल के अलावा बांग्लादेश, फिजी, घाना, इंडोनेशिया, मलेशिया, मंगोलिया, थाईलैंड, उरूग्वे, नाइजीरिया, फिलिपीन्स, दक्षिण कोरिया और वियतनाम के सैनिक शामिल हैं। यूएन पीस कीपिंग फोर्स का यह चौथा संयुक्त सैन्य अभ्यास है। इससे पहले साल 2002, 2013 तथा 2017 में इस तरह का सैन्य युद्धाभ्यास हो चुका है। यूएन पीस कीपिंग फोर्स में जाने वाले देशों के सैनिकों के लिए यह सैन्य अभ्यास कराए जाने की जानकारी नेपाली सेना ने दी है। सैन्य प्रवक्ता ब्रिगेडियर जनरल कृष्ण प्रसाद भंडारी ने बताया कि यूएन के समन्वय में अमेरिकी सरकार के ग्लोबल पीस ऑपरेशन की मदद से इस संयुक्त सैन्य अभ्यास का आयोजन किया जा रहा है। 19 देशों के 1125 सैनिक इसमें शामिल होने की जानकारी दी गई है। भारत और पाकिस्तान के बीच बन्द हुए राजनीतिक और कूटनीतिक संवाद के बाद यह पहला मौका है जब दोनों देशों के सैनिक इस तरह से किसी संयुक्त सैन्य अभ्यास में शामिल हो रहे हैं। यूएन पीस कीपिंग फोर्स में इस समय सबसे अधिक सैनिक नेपाली सेना के ही हैं। नेपाली सेना के प्रधान सेनापति ने इस सैन्य अभ्यास के उद्घाटन में कहा था कि आवश्यक पड़ने पर नेपाली सेना अपने यहां से 10 हजार सैनिकों को यूएन मिशन में भेज सकता है।

कराची में छह संदिग्ध लुटेरे मुठभेड़ में मारे गए

कराची। पाकिस्तान की आर्थिक राजधानी कराची में कल (बुधवार) अलग-अलग मुठभेड़ में छह संदिग्ध लुटेरे ढेर हो गए। इस दौरान एक किशोर को गोली मारकर मौत के घाट उतार दिया गया। इस बीच कराची पुलिस के सुरक्षा के तमाम दावों के बीच शाह फैसल कॉलोनी में 55 वर्षीय एक व्यक्ति की हत्या कर दी गई समाचार पत्र डॉन ने अपनी रिपोर्ट में प्रत्यक्षदर्शियों और पुलिस के हवाले से इसका विवरण छापा है। रिपोर्ट के अनुसार, कोरंगी इलाके में दो संदिग्ध लुटेरों को पुलिस मुठभेड़ में मार गिराया गया। इस दौरान लुटेरों की गोलीबारी में 14 वर्षीय काशन की की मौत हो गई। वह टायर पंक्चर की दुकान पर काम करता था।

रिपोर्ट में कहा गया है कि उसे घायल अवस्था में अस्पताल के बजाय पहले पुलिस स्टेशन ले जाया गया। इस दौरान अत्यधिक रक्तस्राव के कारण उसकी मृत्यु हो गई। एसएसपी हसन सरदार के मुताबिक कोस्ट गार्ड चौरंगी में अवामी कॉलोनी पुलिस और लुटेरों के बीच मुठभेड़ में रब नवाज को मार गिराया गया। उसके साथी साद को घायल हालत में गिरफ्तार कर लिया गया। घायल संदिग्ध की भी बाद में मौत हो गई। ईदगाह पुलिस के मुताबिक, शीशा मार्केट के पास चांद बीबी रोड पर हुई मुठभेड़ में दो संदिग्ध लुटेरों को मार गिराया गया। इस मुठभेड़ में कांस्टेबल करीम बख्श घायल हो गया।

गाजा में संघर्ष विराम के आह्वान पर अमेरिकी वीटो

संयुक्त राष्ट्र। अमेरिका ने गाजा में मानवीय आधार पर तत्काल संघर्ष विराम के आह्वान वाले अरब प्रस्ताव पर एक बार फिर वीटो लगाया दिया है। यह जानकारी डॉन समाचारपत्र ने बुधवार को दी। अल्जीरिया और अरब देशों के एक समूह ने मंगलवार को संयुक्त रूप से प्रस्ताव पेश किया जिसके पक्ष में 13 वोट पड़े, ब्रिटेन अनुपस्थित रहा और अमेरिका ने वीटो का उपयोग किया। अमेरिकी राजदूत लिंडा थॉमस-ग्रीनफील्ड ने वीटो को सही ठहराते हुए कहा, ह्लकभी-कभी कठिन कूटनीति में आम समय की तुलना में ज्यादा समय लगता है। यह परिषद जो भी कार्रवाई करती है, उससे मदद मिलनी चाहिए और चल रही संवेदनशील वाताओं में बाधा नहीं डालनी चाहिए। उन्होंने कहा कि अमेरिका एक वैकल्पिक मसौदा प्रस्ताव पेश कर रहा है, जिसमें बंधक समझौते और स्थायी शांति की खोज के लिए वाशिंगटन की प्रतिबद्धता पर बल दिया गया है। उन्होंने कहा कि ह्लहम एक निर्णायक और महत्वपूर्ण दौर में हैं। आइए हम इसे सही समय पर सही तरीके से करने के लिए प्रतिबद्ध हों। यही कारण है कि अमेरिका एक अलग प्रस्ताव पेश कर रहा है जो सभी बंधकों को रिहा करने के फामूर्ले के आधार पर एक अस्थायी युद्धविराम की दिशा में काम करेगा और यह हमास की भी निंदा करेगा। प्रस्ताव पेश करने वाले अल्जीरियाई राजदूत अमर बेंजामिन ने सुरक्षा परिषद की निष्क्रियता पर निराशा व्यक्त करते हुए घोषणा किया कि कोई भी बहाना सुरक्षा परिषद की निष्क्रियता को तर्कसंगत नहीं बना सकता है, और गाजा में चल रहे नरसंहार को रोकने के लिए सभी को एकजुट होना चाहिए। श्री बेंजामिन ने चेतावनी देते हुए कहा, ह्लहम तेजी से एक महत्वपूर्ण मोड़ की ओर बढ़ रहे हैं जहां हिंसा को रोकने का आह्वान अपना महत्व खो देगा। आज, हर फिलिस्तीनी मौत, विनाश और नरसंहार की अवस्था में फंसा हुआ है।

रूसी राजदूत वासिली नेबेंज्या ने अमेरिका की आलोचना करते हुए आरोप लगाया कि उसने इजरायल को मारने का लाइसेंस प्रदान किया है।

उन्होंने कहा कि अमेरिका ने मसौदा प्रस्ताव पर वीटो लगाकर चल रही वार्ता को बाधित किया है और सुरक्षा परिषद के सदस्यों से वाशिंगटन की अराजकता का मुकाबला करने का आग्रह किया। उन्होंने बल देकर कहा कि जनमत अब सुरक्षा परिषद को निष्क्रियता के लिए माफ नहीं करेगा।

चीनी राजदूत झांग जून ने अमेरिकी वीटो की आलोचना करते हुए कहा कि इससे गलत संदेश गया है, जिससे गाजा में संकट और बढ़ गया है। उन्होंने परिषद से हिंसा रोकने के लिए जल्द से जल्द कार्रवाई करने का आग्रह किया, अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को बनाए रखने की आवश्यकता पर बल दिया और इसे परिषद की कानूनी जिम्मेदारी बताया। श्री झांग ने कहा, ह्लपरिषद को अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था बरकरार रखनी चाहिए और संघर्षविराम की मांग करनी चाहिए जो उसकी कानूनी जिम्मेदारी है। परिषद को वीटो के कारण अपना काम बंद नहीं करना चाहिए।ह्व फ्रांसीसी राजदूत निकोलस डी रिविएर ने जमीन पर भयावह स्थिति को ध्यान में रखते हुए प्रस्ताव की विफलता पर खेद व्यक्त किया। उन्होंने नागरिकों की रक्षा और गाजा में असहनीय मानव क्षति और मानवीय स्थिति को नियंत्रित करने के लिए तत्काल संघर्ष विराम की आवश्यकता पर बल दिया।

ब्रिटेन के राजदूत बारबरा वुडवर्ड ने फिलिस्तीनियों के सामने विनाशकारी मानवीय संकट पर बल देते हुए लड़ाई का तत्काल निलंबन रने का आह्वान किया, जिससे एक स्थायी युद्धविराम हो सके।

ब्रिटेन की संसद में जम्मू-कश्मीर 'संकल्प दिवस' मनाया गया

लंदन। ब्रिटेन के संसद भवन परिसर में ह्यजम्मू-कश्मीर अध्ययन केंद्र-यूकेह्ल (जेकेएससी) ने ह्यसंकल्प दिवसह्ल कार्यक्रम का आयोजन किया गया। भारत के केंद्र शासित प्रदेश संबंधी ऐतिहासिक प्रस्ताव को मनाने के लिए आयोजित इस कार्यक्रम में ब्रिटेन के दोनों दलों के सांसदों ने हिस्सा लिया। मंगलवार के कार्यक्रम में 22 फरवरी, 1994 को भारतीय संसद के दोनों सदनों द्वारा पारित सर्वसम्मत प्रस्ताव को चिह्नित किया गया, जम्मू और कश्मीर पूरे क्षेत्र को भारत का अभिन्न अंग के अडिग रुख की पुष्टि की गई। इसने मीरपुर-मुजफ्फराबाद तथा गिलगित और बाल्टिस्तान को पुनः प्राप्त करने के भारत के अधिकार पर जोर दिया, जो पाकिस्तानी आक्रमण का शिकार हुए थे।

जेकेएससी-यूके ने एक बयान में कहा, ह्यह्यसभी सांसदों ने साझा अंतर्दृष्टि के लिए सराहना की और जम्मू-कश्मीर की जमीनी हकीकत को उजागर करने के लिए इस तरह के आयोजनों को जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया, एक ऐसा परिप्रेक्ष्य जो अक्सर मुख्यधारा के विमर्श में शुमार नहीं होता है। उन्होंने इस विषय पर जारी बातचीत के महत्व पर जोर दिया।ह्लह्ल इस कार्यक्रम में कंजर्वेटिव पार्टी के सांसद बॉब ब्लैकमैन और थेरेसा विलियर्स के अलावा लेबर पार्टी के सांसद वीरेंद्र शर्मा सहित अन्य लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) के प्रोफेसर सज्जाद राजा थे, जो वर्तमान में ब्रिटेन में निर्वासन में रह रहे हैं। कश्मीरी कार्यकर्ता याना मीर ने भी संबोधित किया, जो वर्तमान में ह्यभारत एक्सप्रेस न्यूज नेटवर्कह्ल के साथ वरिष्ठ एंकर के रूप में कार्यरत हैं।

चीन ने संयुक्त राष्ट्र केंद्रित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था की मजबूती से रक्षा करने का आह्वान किया

बीजिंग। संयुक्त राष्ट्र में चीन के स्थायी उप प्रतिनिधि दाई पिंग ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय से संयुक्त राष्ट्र केंद्रित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था की मजबूती से रक्षा करने और अंतरराष्ट्रीय मामलों में संयुक्त राष्ट्र की मुख्य भूमिका को पूरा करने का आह्वान किया। दाई पिंग ने कहा कि वर्तमान में, दुनिया उथल-पुथल और परिवर्तन के एक नए दौर में प्रवेश कर चुकी है, और बहुपक्षवाद और अंतर्राष्ट्रीय कानून गंभीर रूप से प्रभावित हुए हैं। अभूतपूर्व वैश्विक चुनौतियों का सामना करते हुए, अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को पहले से कहीं अधिक सच्चे बहुपक्षवाद का अभ्यास करने की आवश्यकता है। संयुक्त राष्ट्र को अपने मूल में रखते हुए अंतर्राष्ट्रीय कानून पर आधारित अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था और संयुक्त राष्ट्र चार्टर के उद्देश्यों और सिद्धांतों के आधार पर अंतरराष्ट्रीय संबंधों के बुनियादी मानदंडों की मजबूती से रक्षा करने की आवश्यकता है।इसके अलावा, दाई पिंग ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र चार्टर पर हस्ताक्षर करने वाले पहले संस्थापक सदस्य राज्य के रूप में, चीन ने हमेशा विश्व शांति की रक्षा करने और समान विकास को बढ़ावा देने की विदेश नीति का पालन किया है।चीन ने वैश्विक सुरक्षा पहल का प्रस्ताव रखा है, जिसने संयुक्त राष्ट्र चार्टर की भावना का पालन कर एक आम, व्यापक, सहकारी और टिकाऊ सुरक्षा अवधारणा की वकालत की है।